अन्तरा शब्दशक्ति

संयुक्तांक अगस्त-सितंबर 2018 मासिक वेब पत्रिका

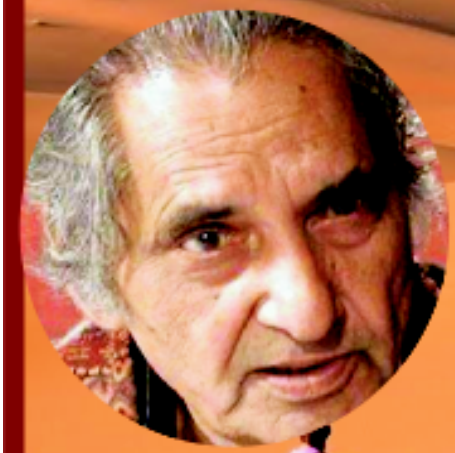

कारवाँ गुजर गया...

इसलिए मौत से ठन गई

www.antrashabdshakti.com

रचनाकारों के लिए सुनहरा अवसर

आदरणीय भाषासारथी,
सादर प्रणाम,
क्या आप मौलिक रुप से हिन्दी में कुछ लेखन करते हैं ? यदि करते हैं तो स्वागत है आपके शब्द शिल्प का।
आइए, हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु कार्यरत बेहद क्रियाशील संस्था मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम का अंग लोकप्रिय अन्तरताना (वेब पोर्टल) मातृभाषा डॉट कॉम से शीघ्रता से जुड़िए 'मातृभाषा' साहित्य के संप्रेषण के लिए उपलब्ध अनूठा मंच है। साहित्य के इस ऑनलाइन मंच में सभी नवोदित व स्थापित लेखकों का स्वागत है। यदि आप कहानी,लेख,लघुकथा,उपन्यास,नाटक, संस्मरण, निबन्ध, व्यंग्य, डायरी, कविता, आत्मकथा, आलोचना, गजल, समालोचना, मुक्तक, नज्म, गीत या अन्य किसी भी विधा का सिर्फ हिन्दी भाषा में मौलिक लेखन करते हैं तो पोर्टल पर प्रकाशन हेतु हमें उपलब्ध करा सकते हैं। हमारा प्रयास एक मंच पर हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ लेखन को जनमानस के लिए उपलब्ध कराना है। हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार और एक स्थान पर सभी महत्वपूर्ण विषयों पर सामग्री संकलन हमारा मूल उद्देश्य है, आपकी सहमति मिलने पर इस वैचारिक महाकुंभ में आपके मौलिक लेखन को प्रकाशित कर हम गौरवान्वित महसूस करेंगे 'मातृभाषा' में संकलन के लिए आपकी मौलिक हिन्दी रचनाएँ आमंत्रित हैं।
आपका नवीन लेखन इस अणुडाक (ईमेल) matrubhashaa@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें।

साथ ही प्रत्येक सप्ताह के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार (आलेख व कविता दोनों विधा में)को प्रति सप्ताह नगद राशि या भेंट से सम्मानित भी किया जाएगा। सप्ताह के श्रेष्ठ रचनाकार का चयन, समिति द्वारा रचना की गुणवत्ता, वर्तनी दोष रहित, ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा देखी गई होने पर, पटल पर दृश्य संख्या अधिक होने के तथा रचना मातृभाषा.कॉम के अतिरिक्त कहीं और न छपी होगी इन मापदण्डों के आधार पर प्रति सप्ताह किया जाएगा।

जानकारी केवल निम्न बिन्दुओं में ही प्रेषित करें

साहित्यकार के परिचय का प्रारुप

नाम-
साहित्यिक उपनाम-
जन्मतिथि
वर्तमान पता (शहर, जिला, राज्य)
शिक्षा-
कार्यक्षेत्र-
विधा -
मोबाइल/व्हाट्स ऐप -
प्रकाशन-
सम्मान-
ब्लॉग-
अन्य उपलब्धियाँ-
लेखन का उद्देश्य-
एक मौलिक रचना
ईमेल-
छाया चित्र-

प्रथम बार परिचय आवश्यक है, अन्य बार बिना परिचय के केवल रचना मय शीर्षक अणुडाक (मेल) पर प्रेषित करें।

मातृभाषा.कॉम से जुड़े प्रत्येक रचनाकार को मिलेगा भाषा सारथी सम्मान,क्योंकि यदि आप हिन्दीभाषा में सृजन कर रहे है, तो आप निश्चित तौर पर भाषा के गौरव की अभिवृद्धि कर रहे है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र

९६६९८९६६९३ ९४२४७६५२५९ ७०६७४५५४५५

www.matrubhashaa.com

मातृभाषा.कॉम

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhasha.org

हिन्दीग्राम
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश
www.sahityakarkosh.com

अंतरा शब्दशक्ति

अन्तराशब्दशक्ति
मासिक वेब पत्रिका

वर्ष-2 अंक-02-03 मूल्य-25 रुपए
संयुक्तांक अगस्त-सितम्बर-2018

प्रधान संपादक
डॉ.प्रीति सुराना *

तकनीकी सज़्पादक
डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'

सज़्पादकीय सलाहकार
श्री समकित सुराना
श्री बृजेश शर्मा 'विफल'
श्री कैलाश बिहारी सिंघल
श्री देवेन्द्र सोनी
श्री संजय कोचर
सुश्री कीर्ति वर्मा
सुश्री पिंकी परुथी 'अनामिका'
सुश्री अदिति रूसिया

ग्राफिज़्स
मृदुल जोशी
सुश्री मीना कौशल

राजकीय प्रतिनिधी
रिंकल शर्मा- दिल्ली
सुश्री वसुंधरा रॉय- महाराष्ट्र
सुश्री नसरीन अली 'निधी'- जज़्मू एवं कश्मीर
मंगल प्रसाद पासवान- उज़्तरप्रदेश
प्रकाश कायस्थ- असम
अनिल कुमार शर्मा 'चिंतित'- हरियाणा
रिखभचंद रांका- राजस्थान
सुश्री पूजा टांक- तमिलनाडु
सुश्री अर्चना शर्मा-गोआ

***-पीआरबी एज़्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी हैं।**

क्रं.	विषय	पृष्ठ क्रमांक
1.	संपादकीय	4
2.	भारत की सांस्कृतिक अखंडता....	5
3.	स्वतंत्रता उर्फ स्वाधीनता....	7
4.	मासिक धर्म अंधविश्वास नहीं.....	8
5.	सफलता की सीख....	9
6.	राजनीति को राजनीति की भाषा...	13
7.	भाजपा-कांग्रेस के बीच...	15
8.	प्लास्टिक कचरे से संकट...	16
9.	भारत के अजब0गजब राजा....	17
10.	भारतीय वर्णमाला की संकल्पना	19
11.	क्या वर्गीकृत भारत....	24
12.	ज्वलंत समस्या....	25
13.	भाषा के नाम पर लड़ाई	28
14.	भाषा आंदोलन का नया स्वरूप	31
15.	आज का सेहतनामा	32
16.	अटल जी को श्रद्धांजलि..	34
17.	जन आशीर्वाद.....	36
18.	स्वाधीनता का 71वां साल	42
19.	बाढ़ के कहर को.....	43
20.	कौन जिम्मेदार...	46
21.	वूमन आवाज सम्मान.....	48

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. प्रीति सुराना द्वारा एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस ज़्लब, एम. जी. रोड इंदौर से प्रकाशित एवं ग्लोबल ग्राफिज़्स ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित। मो.-9009465259

किसी भी कानूनी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा। शुल्क- 25 रु.

www.antrashabdshakti.com

संपादकीय

कारवाँ गुजर गया इसलिए मौत से ठन गई

डॉ. प्रीति सुराना
प्रधान संपादक

काल के कपाल पर जो लिखा है वो अमिट है, उसके आगे न किसी की चली थी, न ही चलेगी, इसी बात को स्वीकार करते हुए इन दो माहों में हमने हिंदी के दो रत्नों को चिर विदाई दी, हिंदी की कविता को बम्बई से चित्रपट पर सुशोभित करने वाले अदम्य साहसी और स्पष्ट भाषी गोपाल दास नीरज का हमारे बीच से चला जाना हिन्दी कविता के एक स्वर्णिम युग की विदाई मन जायेगा और इसी तरह मौत से जुझते,तकरार करते भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री पंडित अटल बिहारी वाजपेयी का महाप्रयाण जिन्होंने हिंदी कविता के माध्यम से देश को सदैव आंदोलित भी किया और संसद के गर्भगृह को ललकारा वो भी असहनीय ही है।

नहीं लौट कर आ सकती को आवाज़ जिसने हिन्दी को जागृत कर आंदोलन के समर के लिए तैयार किया। यकीं ही नहीं होता कि वो कोयल अब नहीं कुकेगी जिसके स्वर से सम्पूर्ण हिंदी वर्तमान काल में स्वयंप्रभा की तरह सुशोभित थी। चले जाते है जाने वाले और अपने पीछे एक अपार यादों का कारवाँ छोड़ जाते है, जिसमे कई लक्ष्य, कई उद्देश्य और कई सिख शामिल होती है। उन यादों की सुवाड़ अग्नि नित नूतन लक्ष्य सौंपती रहती है, जिसके सहारे जिन्दा रहने के बहाने मिल जाया करते है।

कचहरी में टंकण करते-करते कोई हिन्दी कविताओं की तरफ मुड़कर हिन्दी माँ का लाड़ला नीरज बनकर माया नगरी बम्बई में हिन्दी कविता को सर्वोच्च सम्मान दिलवाता है, और प्रेम के तरानों के साथ शोखियों में घोलता हो प्रेम गीतों का राग, एक अल्हड फ़क़ीर जो उच्च कोटि के दर्शन का अध्ययन हिन्दी के मंचों से बिखेरता हो, ऐसे दीवाने का नाम गोपालदास नीरज है। रजनीश से भगवान रजनीश की यात्रा का प्रत्यक्ष गवाह जिसने स्वयं रजनीश को आगाह किया था की समय ख़लीफ़ाओं का नहीं है, जागो रजनीश, 'एक समय आएगा जब आपको भगवन भी छोड़ना पड़ेगा, आचार्य भी और रजनीश भी... आत्मा के गौरीशंकर पर यात्रा करने जा रहे हो आप, उसपर इतना बोझ लेकर?'

जो जिया हो भारत भारती के लिए, जिसने ताउम्र केवल राष्ट्र जिया, कविता के शब्दों से संसद के गर्भगृह को सुशोभित किया हो, पोखरण परमाणु परिक्षण से विश्व को भारत की शक्ति का आभास कराया, कारगिल युद्ध से पाकिस्तान को औकात दिखाई हो, स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना से राष्ट्र को जोड़ा हो, कावेरी जल विवाद को सुलझाने वाले, केन्द्रीय विद्युत नियामक आयोग का गठन करने वाले दूसरे कोई नहीं बल्कि पंडित अटल बिहारी वाजपेयी ही है। इन सब के बाद भी अटल जी एक उदारमना कवि ह्रदय पत्रकार रहे, जिन्होंने पंद्रह अगस्त, मेरी इक्यावन कविताएँ जैसी कृतियों के माध्यम से समाज को जागरूक किया। हाँ विधि का लिखा कोई टाल नहीं सकता, इसी काल के करतब के आगे नतमस्तक होकर अहर्निश हिंदी सेवक जिसके कारण सयुंक्त राष्ट्र में हिंदी की चर्चा शुरू हो सकी, ऐसे महापुरुष के शरीर को विदाई देता है। अटल जी का जाना भारतीय राजनीती के उस युग का अवसान माना जाएगा जिसने गठबंधन की इबारत लिखी।

इन सबके साथ भारत ने अपनी आज़ादी की 72 वीं वर्षगांठ मनाई, पर हाँ अटल जी के शब्दों में 'आज़ादी अधूरी है' क्योंकि भारत भारती की आज़ादी का तराना तब ही पूरा हो सकता है जब रंग शारदा में राष्ट्र भाषा का रंग जमा हुआ हो।

अनुबंध और तमाम शर्तों के बाद भारत के नीले आकाश में गुलाबी गुलाल के बादलों ने 15 अगस्त 1947 की सुबह को अपने आलिंगन में ले लिया था, यह वही समय रहा जब लाल किले ने तिरंगे को देखा होगा, शायद भारत के भाग्य में अर्द्ध रात्रि को मिली रहस्यमयी आज़ादी ही लिखी थी, जिससे विभाजन का तिलक लगाकर हम आज भी स्वंय को स्वतंत्र कह रहे है जबकि हम तो अनुबंध की शर्तों पर चल रहे है जिसे पुलिसिया शब्दावली में जमानत पर रिहा होना कहा जाता है।

बहरहाल जैसी भी मिली, मिली तो स्वतंत्रता ही है जिसके बूते पर आज हम जीवित है और स्वच्छंद आजादी की सांस ले पा रहे है। पर आजादी हमें जिन बलिदानों की बलिवेदी पर रक्तअभिषेक करने के उपरांत मिली है, वर्तमान पीढ़ी उसे सहेजने में भी सक्षम नज़र नहीं आ रही है।

एक गीत की पंक्तियाँ इसी भाव को दर्शाती है जिसमें कहा था 'शहीदों की मजारों पर लगेंगे हर बरस मेलें, वतन पर मरने वालो का यही बाकी निशां होगा' सच ही तो है, हम इससे ज्यादा और कर भी क्या रहें है? क्या हमने उन बलिदानियों के मंतव्यानुसार इस राष्ट्र की आधारभूत संरचना बनाई?

क्या कभी जाना कि हमें आजादी की आवश्यकता क्यों थी? किन जरूरी सुविधाओं की प्राप्ति के लिए स्वच्छन्दता का आसमान अपेक्षित था?

क्या ऐसा था जो बिना आजाद हुए देश के विकास में बाधक था? रोटी, कपड़ा और मकान तो देश में आजादी के पहले भी उपलब्ध रहे, कानून तब भी अंग्रेजियत प्रभावी था, आज भी वही है। पुलिस और न्यायव्यवस्था तो पहले भी थी, आज भी है । परन्तु हमने कभी विचार ही नहीं किया कि हमारे पूर्वजों ने आजादी की मांग क्यों की थी? क्या आजाद होने से गरीबी का उन्मूलन हो जाता? क्या आजाद होने से रोजगार या विकास के अवसर बढ़ जाने थे?

खतरे में है

भारत की सांस्कृतिक अखंडता और विरासत

डॉ.अर्पण जैन
'अविचल'
हिन्दीग्राम, इंदौर

भारत देश एक बहु-सांस्कृतिक परिदृश्य के साथ बना एक ऐसा राष्ट्र है जो दो महान नदी प्रणालियों, सिंधु तथा गंगा, की घाटियों में विकसित हुई सभ्यता है, यद्यपि हमारी संस्कृति हिमालय की वजह से अति विशिष्ट भौगोलीय क्षेत्र में अवस्थित, जटिल तथा बहुआयामी है, लेकिन किसी भी दृष्टि से अलग-थलग सभ्यता नहीं रही। भारतीय सभ्यता हमेशा से ही स्थिर न होकर विकासोन्मुख एवं गत्यात्मक रही है। भारत में स्थल और समुंद्र के रास्ते व्यापारी और उपनिवेशी आए। अधिकांश प्राचीन समय से ही भारत कभी भी विश्व से अलग- थलग नहीं रहा। इसके परिणामस्वरूप, भारत में विविध संस्कृति वाली सभ्यता विकसित होगी जो प्राचीन भारत से आधुनिक भारत तक की अमूर्त कला और सांस्कृतिक परंपराओं से सहज ही परिलक्षित होता है, चाहे वह गंधर्व कला विद्यालय का बौद्ध नृत्य, जो यूनानियों के द्वारा प्रभावित हुआ था, हो या उत्तरी एवं दक्षिणी भारत के मंदिरों में विद्यमान अमूर्त सांस्कृतिक विरासत हो।

भारत का इतिहास पांच हजार से अधिक वर्षोंको अपने सांस्कृतिक खंड में समेटे हुए अनेक सभ्यताओं के पोषक के रूप में विश्व के अध्ययन के लिए उपस्थित है। यहां के निवासी और उनकी जीवन शैलियां, उनके नृत्य और संगीत शैलियां, कला और हस्तकला जैसे अन्य अनेक तत्व भारतीय संस्कृति और विरासत के विभिन्न वर्ण है, जो देश की राष्ट्रीयता का सच्चा चित्र प्रस्तुत करते हैं।

डॉ. ए एल बाशम ने अपने लेख ''भारत का सांस्कृतिक इतिहास'' में यह उल्लेख किया है कि ''जबकि सभ्यता के चार मुख्य उद्गम केंद्र पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ने पर, चीन, भारत, फर्टाइल क्रीसेंट तथा भूमध्य सागरीय प्रदेश, विशेषकर यूनान और रोम है, भारत को इसका सर्वाधिक श्रेय जाता है क्योंकि इसने एशिया महादेश के अधिकांश प्रदेशों के सांस्कृतिक जीवन पर अपना गहरा प्रभाव डाला है। इसने प्रत्यक्ष ओर अप्रत्यक्ष रूप से विश्व के अन्य भागों पर भी अपनी संस्कृति की गहरी छाप छोड़ी है।'

संस्कृति से अर्थ होता है कि किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप जैसे जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है।

'संस्कृति' शब्द संस्कृत भाषा की धातु 'कृ' (करना) से बना है। इस धातु से तीन शब्द बनते हैं 'प्रकृति' (मूल स्थिति), 'संस्कृति' (परिष्कृत स्थिति) और 'विकृति' (अवनति स्थिति)। जब 'प्रकृत' या कच्चा माल परिष्कृत किया जाता है तो यह संस्कृत हो जाता है और जब यह बिगड़ जाता है तो 'विकृत' हो जाता है। अंग्रेजी में संस्कृति के लिये 'कल्चर' शब्द प्रयोग किया जाता है जो लैटिन भाषा के 'कल्ट या कल्टस' से लिया गया है, जिसका अर्थ है जोतना, विकसित करना या परिष्कृत करना और पूजा करना। संक्षेप में, किसी वस्तु को यहाँ तक संस्कारित और परिष्कृत करना कि इसका अंतिम उत्पाद हमारी प्रशंसा और सम्मान प्राप्त कर सके। यह ठीक उसी तरह है जैसे संस्कृत भाषा का शब्द 'संस्कृति'।

संस्कृति का शब्दार्थ है - उत्तम या सुधरी हुई स्थिति। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिशील प्राणी है। यह बुद्धि के प्रयोग से अपने चारों ओर की प्राकृतिक परिस्थिति को निरन्तर सुधारता और उनन्त करता रहता है। ऐसी प्रत्येक जीवन-पद्धति, रीति-रिवाज रहन-सहन आचार-विचार नवीन अनुसन्धान और आविष्कार, जिससे मनुष्य पशुओं और जंगलियों के दर्जे से ऊँचा उठता है तथा सभ्य बनता है, सभ्यता और संस्कृति का अंग है। सभ्यता (Civilization) से मनुष्य के भौतिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है जबकि संस्कृति (Culture) से मानसिक क्षेत्र की प्रगति सूचित होती है।

भारतीय संस्कृति अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति के समान अलग अलग है। यहां के लोग अलग अलग भाषाएं बोलते हैं, अलग अलग तरह के कपड़े पहनते हैं, भिन्न- भिन्न धर्मों का पालन करते हैं, अलग अलग भोजन करते हैं किन्तु उनका स्वभाव एक जैसा होता है। तो चाहे यह कोई खुशी का अवसर हो या कोई दुख का क्षण, लोग पूरे दिल से इसमें भाग लेते हैं, एक साथ खुशी या दर्द का अनुभव करते हैं। एक त्यौहार या एक आयोजन किसी घर या परिवार के लिए सीमित नहीं है। पूरा समुदाय या आस पड़ोसी एक अवसर पर खुशियां मनाने में शामिल होता है, इसी प्रकार एक भारतीय विवाह मेल जोल का आयोजन है, जिसमें न केवल वर और वधु बल्कि दो परिवारों का भी संगम होता है। चाहे उनकी संस्कृति या धर्म का मामला हो। इसी प्रकार दुख में भी पड़ोसी और मित्र उस दर्द को कम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वर्तमान समय में भारत की वैश्विक छवि एक उभरते हुए और प्रगतिशील राष्ट्र की है। सच ही है, भारत में सभी क्षेत्रों में कई सीमाओं को हाल के वर्षों में पार किया है, जैसे कि वाणिज्य, प्रौद्योगिकी और विकास आदि, और इसके साथ ही उसने अपनी अन्य रचनात्मक बौद्धिकता को उपेक्षित भी नहीं किया है। हमारे राष्ट्र ने विश्व को विज्ञान दिया है, जिसका निरंतर अभ्यास भारत में अनंतकाल से किया जाता है। आयुर्वेद पूरी तरह से जड़ी बूटियों और प्राकृतिक खरपतवार से बनी दवाओं का एक विशिष्ट रूप है जो दुनिया की किसी भी बीमारी का इलाज कर सकती है। आयुर्वेद का उल्लेख प्राचीन भारत के एक ग्रंथ रामायण में भी किया गया है। और आज भी दवाओं की पश्चिमी संकल्पना जब अपने चरम पर पहुंच गई है, ऐसे लोग हैं जो बहु प्रकार की विशेषताओं के लिए इलाज की वैकल्पिक विधियों की तलाश में है।

भारतीय नागरिकों की सुंदरता उनकी सहनशीलता, लेने और देने की भावना तथा उन संस्कृतियों के मिश्रण में निहित है जिसकी तुलना एक ऐसे उद्यान से की जा सकती है जहां कई रंगों और वर्णों के फूल है, जबकि उनका अपना अस्तित्व बना हुआ है और वे भारत रूपी उद्यान में भाईचारा और सुंदरता बिखेरते हैं।

इन सब गुणों के बावजूद भी वर्तमान दौर में भारत में अपनी ही संस्कृति को विखंडित और विलोपित करने की कवायदें आरम्भ हो चुकी है, जिसके दुष्परिणाम स्वरुप भारत केवल एक ऐसा भूमि का टुकड़ा बच जाएगा जिसके सतही तल पर तो अधिकार हमारा होगा किन्तु मानसिक स्तर पर उस पर आधिपत्य पाश्चात्य के राष्ट्रों का होगा। इस विकराल समस्या को हम भारत की सांस्कृतिक अखंडता पर मंडरा रहे खतरे के तौर पर स्वीकार करना चाहिए और उसके उपचार हेतु शीघ्रातिशीघ्र प्रयास करना प्रारम्भ करना होगा।

सांस्कृतिक अखंडता को बनाये रखने के लिए प्राथमिक तौर पर हर भारतवंशी में राष्ट्रप्रेम की जागृति लाना होगी। 'पहले राष्ट्र' की मूलभावना को रगों में दौड़ने के लिए भारतीय भाषाओँ को संरक्षित करना परम आवश्यक है। जब भारत आजाद होने वाला था उसके पहले 18 जुलाई 1947 को इंग्लैंड की संसद में 'भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947' पास हुआ, यदि उसे पड़ा जाये और उसके बाद लार्ड मैकाले और एटमी के संवादों की तरफ दृष्टि डाली जाए तो हमें यह ज्ञात होगा कि भारत को आजादी शर्तों और अनुबंध के आधार पर दी गई है, और एटमी के अनुसार तो भारत को अंग्रेजो से आज़ाद करके अंग्रेजियत का गुलाम बनाया गया है। हमें इसको तोड़ कर भारतीय भाषाओँ को बढ़ावा देना होगा, बाजार पर जिस अंग्रेजियत का कब्ज़ा है उसे हटा कर भारतीयता का साम्राज्य स्थापित करना होगा। बच्चों के बस्ते से गायब हुई नैतिक शिक्षा की किताब भी भारत की सांस्कृतिक अखंडता को बचने में अग्रणी थी, उसे वापस अनिवार्य शिक्षा की धारा में लाना होगा।

इसी के साथ हमें सांप्रदायिक सौहाद्र की स्थापना करनी होगी, क्योंकि भारत में धर्म और जाति के नाम पर झगड़े तो उन हथियारों के व्यापारियों की कारस्तानी और मंशा है जिनका व्यापार ही हथियार बेचना है, जिनमे अमरीका अग्रणी राष्ट्र है।

हमें हमारे त्यौहारों पर भी चाइनीज भागीदारी को समाप्त करना होगा, आज हमारे त्योंहारों की समझ हमसे ज्यादा चाइना की है क्योंकि वह एक व्यापारी देश है जो अपना माल विश्व के दूसरे बड़े बाजार के तौर पर स्थापित भारत में खपाना चाहता है। महात्मा गाँधी ने आज़ादी के पहले विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आंदोलन इसलिए ही चलाया था क्योंकि हम ही हमारी गाढ़ी कमाई से हमारी सांस्कृतिक हत्या के लिए साधन जुटाने हेतु उन्हें पोषित करते है।

इन्ही सब महत्वपूर्ण उपायों से भारत की सांस्कृतिक विरासत को बचाया जा सकता है, वर्ना हमारे पर शेष हाथ मलने के अतिरिक्त कुछ न बचेगा जब राष्ट्र ही नहीं बचेगा।

लेखक-डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' मातृभाषा उन्नयन संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं तथा देश में हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु हस्ताक्षर बदलो अभियान, भाषा समन्वय आदि का संचालन कर रहे हैं.

साथी ! सदा साथ निभाना

रामभवन प्रसाद चौरसिया

साथी! सदा साथ निभाना ,
सदा साथ निभाना ।
हम रहें या ना रहें जग में,
अपना फर्ज निभाना ।।

हानि लाभ हो या सुख दुःख हो,
सबमें साथ निभाना।।
दुःख-दरिया में फँस जाऊं जो ,
नैया पार लगाना।।
साथी!- - - - - - - - - - - - - - -।

कितना भी हो कष्ट सफर में ,
साहस सदा बढ़ाना।
चलते - चलते थक जाऊँ जब,
आगे हाथ बढ़ाना।।
साथी!- - - - - - - - - - - - - - -।

मैनें अपना कर्ज चुकाया,
भर - भर कर हर्जाना ।।
मेरा नाम मेरा काम बताया,
कुछ तुम भी कर जाना।।
साथी! - - - - - - - - - - - - - - - - -।

जैसे अब - तक साथ दिये तुम ,
आगे साथ निभाना।
बीच डगर में कभी भी 'भवन',
पीठ नहीं दिखलाना।
साथी! - - - - - - - - - - - - - - - - -।

स्वतंत्रता उर्फ़ स्वाधीनता या स्वच्छंदता

डॉ. प्रीति सुराना

स्वतंत्रता क्या है,..?
स्वतंत्रता का अर्थ क्या है,..?
अपने मन मुताबिक चलने की आज़ादी,..?
या मनमानी करने की आज़ादी,..?
या अभिव्यक्ति की आज़ादी,..?
आखिर क्या है स्वतंत्रता?

एक पतंग जो खुले आकाश में उड़ती है आज़ाद होती है? या एक पंछी जो अपनी काबिलियत और सामर्थ्य के दम पर उड़ता है वो आज़ाद होता है?

दरअसल पंछी को उड़ने की आज़ादी तभी तक है जब तक उसके पंख सलामत हैं,..बिलकुल वैसे ही पतंग को उड़ने की आज़ादी तभी तक है जब तक वो डोर से बंधी है,..पंछी पंख के बिना उड़ नहीं सकता,..जब भी कोशिश करेगा औंधे मुह गिर पड़ेगा,..पतंग को आज़ाद करके देखिये,..कटी डोर के साथ कुछ दूर जाकर गिर पड़ेगी फट जाएगी ख़त्म हो जाएगी,.. वस्तुएं गुरुत्वाकर्षण बल के बिना तितर बितर हो जाएंगी,..समीकरण सूत्रों के बिना हल ही नहीं होंगे,..भाषा व्याकरण के बिना असभ्य हो जाएगी,. नदी किनारों के बिना तबाही का कारण बन जाएगी,.. दुनिया सूर्य और चंद्रमा के बिना नष्ट हो जाएगी,..यानि सृष्टि की हर चीज़ किसी न किसी से बंधी है। इन्हें आज़ादी देने का अर्थ है सृष्टि का विनाश।

क्या प्रलय की कीमत पर ये स्वतंत्रता मानव को मंजूर है? नहीं ना,..????

फिर क्यूं चाहिए मानव को स्वतंत्रता?

एक बार सालों की दासता से जैसे तैसे देश को महापुरुषों के बलिदान से स्वतंत्रता मिली तो थी।क्या किया देश वासियों ने इस स्वतंत्रता का,..? खोखला हो गया सोने की चिड़िया कहलाने वाला हमारा देश,..। आज़ादी का मतलब मानव ने क्या लगाया??? भ्रष्टाचार, व्यभिचार, दुराचार है वर्तमान में स्वतंत्रता की परिणति,..।

लोगों को बोलने की आज़ादी मिली तो क्या हुआ गालिओं और अपशब्दों का बहुतायत प्रयोग,.. गंदी भाषा ,..गंदी सोच,..??? और जिनकी भाषा सभ्य थी वो सारे बन गए ज्ञानी,.. जो अपने काम से नहीं बल्कि अपने ज्ञान से दुनिया को प्रभावित करते हैं,..

लोगों को स्वतंत्रता मिली तो रिश्तों की मर्यादा ख़त्म हुई,..प्रेम और शादी जैसे पवित्र बंधन लिव इन रिलेशनशिप में तबदील होने लगे है,.. लोगों ने स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता मान लिया है,..ऐसी स्वच्छंदता जिसके चलते सीमाओं का अतिक्रमण एकदम साधारण सी बात हो गई है। जबकि होना ये चाहिए था की स्वतंत्रता को स्वछंदता नहीं बल्कि स्वाधीनता का पर्याय माना जाना चाहिए था,.,स्वछंदता हमेशा कटी हुई पतंग की ही तरह गर्त में ढकेलने का काम करती है जबकि स्वाधीनता मुक्त रहने के बावजूद भी अपने पर नियंत्रण रखना सिखाती है,..स्वाधीन व्यक्ति अपने मन वचन और काया पर नियंत्रण रखना जानता है,..की गई भूलों को सुधारने का प्रयास करना भी जानता है,.. काल और परिस्थिति के अनुरूप ढलने की काबिलियत रखता है,..आज स्वतंत्रता को स्वाधीनता की जरुरत है,..

फर्क सिर्फ नज़रिये का है
फैसला खुद ही करें,..।
स्वाधीन होकर जियें,.
या स्वछन्द होकर मरें।।

हमेशा की तरह एक बात फिर कहना चाहूंगी,..ये सोच मेरी है सहमति या असहमति के लिए आप सभी स्वतंत्र हैं।मैंने भी तो आखिर अभिव्यक्ति की आज़ादी का उपयोग किया है,. ??

फिलहाल मैं अपनी सोच को साझा कर रही हूं कि मैं ये मानती हूं की सृष्टि ने हर चीज़ को,हर भावना को एक दूसरे से सम्बद्ध रखा है इसका अर्थ ही यही है जीवन में अनुशासन के लिए बंधन जरुरी है।अगर स्वतंत्रता चाहिए तो भी खुद से बंधन बंधना ही होगा,..क्योंकि सुख का मूल अगर स्वतंत्रता है तो स्वतंत्रता का स्वरुप स्वछंदता नहीं स्वाधीनता होना चाहिए,.. मैंने पहले भी कही थी,.. आज फिर कहती हूं।

सुनो!
मुझे नही चाहिये
विकृत मानसिकता वाली
आज़ादी
मुझे आदत है
उस सुख की,
उस सुरक्षा की,
जो अपनो के अपनेपन
और प्यार के बन्धन से मिलता है।
जो मुझे
सबकी नज़रो मे हमेशा
ऊंचा स्थान न भी दिलाए
पर
दिल की गहराई में
स्थायित्व दिलाता है,..
नही है
मुझे जरूरत
आभासी आजादी की
मै खुश हूं
अपने
इन वास्तविक बंधनो के साथ।

मासिक धर्म

अंधविश्वास नहीं, प्रक्रिया है

रिंकल शर्मा

पिछले हजारों सालों में समाज के अन्दर महिलाओं की स्थिति में बहुत बड़े स्तर पर बदलाव हुआ है। अगर गुज़रे चालीस-पचास सालों को ही देखे तो हमें पता चलता है की महिलाओं को पुरुषों के बराबर हक़ मिले, इस पर बहुत ज्यादा काम किया गया है। हम यह तो नहीं कह सकते की महिलाओं की स्थिति में सौ फीसदी बदलाव आया है पर इतना जरुर कह सकते है की महिलाएं अब अपने अधिकारों के लिए और भी अधिक जागरूक हो गयी है। यहाँ तक कि समाज में मासिक धर्म जैसे संवेदनशील मुद्दों पर भी खुल कर बातचीत होने लगी है। घर–परिवार और स्कूलों में भी बच्चों को इन मुद्दों के बारे में खुलकर बताया जाता है।

पहले के ज़माने में, समाज में, इस विषय पर जिस तरह से विचार - विमर्श होना चाहिए था , वो तो दूर इस विषय पर बोलने पर भी कड़ी पाबंदी थी। शिक्षा संस्थानों में भी ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी जिससे बच्चों को मासिक चक्र के बारे में सही शिक्षा मिल सके। जब कभी भी हम लोग पहली बार किसी दौर से गुजरते हैं तो हमारे मनोमस्तिष्क में एक हलचल, उधेड़बुन होती है। पहली बार मासिक धर्म आने के दौरान लड़कियों की मनः स्थिति भी कुछ ऐसी ही रहती है। लेकिन वह इस विषय पर खुल कर बोल भी नहीं सकतीं थी, सहमी रहती थीं। इस दौरान महिलाओं को अपवित्र समझा जाता था।

पुराने ज़माने में ही नहीं अपितु आज भी ,मासिक धर्म को स्त्री की पवित्रता और अपवित्रता से भी जोड़ा जाता है। 'अपवित्रता' का आलम ये है कि इस दौरान महिलाओं को कई रूढ़िवादी मान्यताओं से भी गुजरना पड़ता है, जैसे वो रसोई घर में नहीं जा सकती, वे खाना नहीं बना सकती, पूजा घर में प्रवेश नहीं कर सकती। कई स्थानों पर महिलाओं को पुरुष के पास भी नहीं सोने दिया जाता। ये हालात देश के ग्रामीण इलाकों में ही नहीं बल्कि शहरों में भी ऐसा ही किया जाता है। हमारे देश में भारतीय समाज का एक बड़ा तबका मानता है कि महिलाओं में होने वाली माहवारी की प्रक्रिया 'अपवित्रता' है। इस अन्धविश्वास का मूल कारण शिक्षा का अभाव है। क्योंकि अगर हम वेदों का अध्ययन करे तो उसमें हमें यह साफ़ देखने को मिलता है कि उस समय मासिक चक्र को एक सामान्य प्रक्रिया के रूप में ही लिया जाता था। जिसका जीता जागता उदाहरण गुवाहाटी में स्थित प्रख्यात ' कामाख्या मंदिर ' है।

कुछ समय पहले त्रावणकोर देवाश्वम बोर्ड के अध्यक्ष प्रयार गोपालकृष्णन के 'महिला विरोधी' बयान से सोशल मीडिया पर एक जंग शुरू हो गई और देश के युवाओं से गोपालकृष्णन को इसका जवाब भी मिला। बोर्ड के अध्यक्ष नियुक्त हुए गोपालकृष्णन के बयान ने उस वक्त चर्चाएं बटोरी, जब उन्होंने कहा कि महिलाओं को प्रसिद्ध साबरीमला मंदिर में प्रवेश की अनुमति तभी दी जाएगी जब उनकी शुद्धता की जांच करने वाली मशीन का आविष्कार हो जाएगा।गोपालकृष्णन के बयान का मतलब का था कि महिलाओं को तभी मंदिर में दाखिल होने दिया जाएगा जब ऐसी मशीनें आ जाएंगी जो ये चेक करें कि महिलाओं को मासिक धर्म चल रहा है या नहीं। जिसके बाद से सोशल मीडिया पर 'हैप्पी टू ब्लीड' के साथ एक मुहिम शुरू हुई और लोगों ने समाज में मासिक धर्म को लेकर फैल रहे अंधविश्वास के खिलाफ मोर्चा खोल दिया। इस दौरान लड़कियों ने हाथ में पेड्स, नैपकिन लेकर फोटो सोशल मीडिया पर पोस्ट किए और लोगों को जागरूक करने की कोशिश की।

समाज में जहाँ एक ओर गोपालकृष्णन जैसे लोग है , वहीँ दूसरी ओर अरुणाचलम मुरुगनथम जैसे लोग भी है, उन्होंने कम लागत वाले सैनिटरी नैपकिन्स बनाने की मशीन का आविष्कार किया था। मुरुगनानथम ने एक ऐसी मशीन का निर्माण किया था जो सैनिटरी नैपकिन्स सस्ते दाम में उत्पादित करती थी। ऐसी भी कहानी है कि सैनिटरी नैपकिन्स बनाने वाले मुरुगनानथम को उनकी पत्नी एक बार छोड़ कर चली गयी थी। ऐसा उन्होंने पति के काम से शर्म महसूस होने के कारण किया था। ऐसे समाज में, जहां पर इस विषय पर चर्चा करने पर पाबंदी हो वहां पर अगर कोई मासिक धर्म को लेकर सैनिटरी नैपकिन्स बनाने जैसा काम करे तो, वह परिवार शर्मसार महसूस करेगा ही।

हालाँकि मुरुगनाथम को बाद में पद्म सम्मान से नवाजा गया। अभी कुछ समय पहले प्रदर्शित,'पैडमैन' फिल्म अरुणाचलम मुरुगनथम की वास्तविक जीवन की कहानी से प्रेरित है। इस फिल्म प्रसिद्ध अभिनेता अक्षय कुमार ने अभिनय किया है। चाहे मुरुगनानथम के वास्तविक जीवन पर बनी यह फिल्म हो या फिर उनको मिला पुरस्कार, ये दोनों ही बातें हमें इस विषय पर समाज में खुल कर बोलने और चर्चा करने का लाइसेंस देती है कि चुप्प मत रहो, ऐसे विषय पर खुल कर बोलो, चर्चा करो, शर्म मत करो। समाज को शिक्षित करो। लड़कियों की शिक्षा को समाज का महत्वपूर्ण अंग बनाओ। गाँधी जी ने कहा था कि,' एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा की उपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है ।' ऐसा करने से समाज संवेदनशील बनेगा और राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव हो सकेगा।

(लेखिका/ निर्देशिका / अभिनेत्री / समाजसेविका)

सफलता की सीख सफल लोगों से

शिखर चंद जैन

आज के दौर में सफल होने के लिए आप किसी पर भी निर्भर नहीं रह सकते। आपको अपना करियर खुद डिजाइन करना होगा। इसके लिए यह पता होना जरूरी है कि किन खूबियों की बदौलत सफलता मिल सकती है। और यह जानने के लिए आपको दुनिया के कुछ सफल लोगों के सक्सेस मन्त्रों की जानकारी लेनी होगी. आइये जानते हैं दुनिया के कुछ सफल लोगों की इन खूबियों के बारे में।

भविष्य पर नजर - अमेजन के फाउंडर जेफ बेजॉस कहते हैं कि आपको दुनिया पर हमेशा नजर रखनी होगी और पता करना होगा कि यह किस तरफ जा रही है। अगर आप दुनिया के भविष्य को ध्यान में रखते हुए कुछ नया करने का प्रयास करेंगे तो आपको अपने जीवन में सफलता जरूर मिलेगी।

खुद का विश्लेषण करें - सैप्डील के सह-संस्थापक कुणाल बहल कहते हैं कि आप अपने जीवन के निर्माता खुद हैं। इसलिए खुद से सवाल करें कि आप क्या करना चाहते हैं और किस काम में बेस्ट हैं। अगर आपको खुद की खूबियों के बारे में पता लग जाता है तो सफल होने में देर नहीं लगती है। इसलिए पहले खुद को पहचानें।

नया सीखते रहें - फेसबुक के फाउंडर मार्क जुकरबर्ग मंदारिन भाषा तेजी से बोल लेते हैं। मार्क कहते हैं कि दुनिया तेजी सेबदल रही है। इसलिए आपको अपने अंदर नई खूबियां पैदा करनी चाहिए। इसके लिए नई चीजें सीखने के प्रति उत्सुक रहना चाहिए। नई चीजें सीखने से आपके आत्मविश्वास में भी इजाफा होता है।

काम के प्रति लगन रखें - अटलांटा के नौजवान उद्योपति राबर्ट एडवर्ड टर्नर तृतीय ने एक पत्रिका को दिए साक्षात्कार में कहा, 'मैं घर वालों की सारी आवश्यकताएं पूरी कर चुका हूं, फिर भी कमाए जा रहा हूं। क्यों? क्योंकि यह एक ऐसी मस्ती है, जो छोड़ते नहीं बनती।' यूनाइटेड टेकनेलौजीज के चेयरमैन हैरी ग्रे को भयंकर एक्सीडेंट के कारण अस्पताल में भर्ती होना पड़ गया। इस पर उन्होंने फाइलों के साथ अपने सेक्रेटरी को भी वहां बुलवा लिया, और महीनों पीठ के बल लेटे लेटे काम निपटाते रहे।

छुट्टी नहीं, काम चाहें - अटलांटा की की फूक्वा इंडस्ट्रीज के संस्थापक जॉन ब्रुक्स फूक्वा एक बार दो सप्ताह की छुट्टी मनाने स्विट्जरलैंड गए, मगर तीन दिन बाद ही दफ्तर लौट आए। बोले, 'महल सारे एक-से होते हैं, एक देखा तो समझो, सभी देख लिए।' जेरॉक्स के पीटर मैककोलो कहते हैं, 'जल्दी ही यह पता चल जाता है कि कौन दौड़ में पिछड़ जाएगा।''

लीडर बनने की ललक - सफल उद्यमियों को कड़ी मेहनत की प्रेरणा से मिलती है सत्ता या लीडरशिप की लालसा। मानसिटो कंपनी के प्रधान अधिकारी जॉन वेलर हैनली को अब तक याद है कि किशोरावस्था से ही वे दूसरों से मनचाहा करा लेने की फिराक में रहते थे। शुरू-शुरू में जब वे सोडावाटर की दुकान पर काम करते थे, तब भी वे ग्राहकों के माल्ट मिश्रित मिल्कशेक में अंडा डालकर पीने का आग्रह करते करते थे।

डोनाल्ड नेल्सन फ्राई अपने परिश्रम के बल पर 44 वर्ष की आयु में फोर्ट मोटर्स के ग्रुप वाइस प्रेसीडेंट बन गए, पर उन्हें तसल्ली नहीं हुई। कहते, 'मुझे एक पूरा कारोबार खुद चलाना है।' अंततः फोर्ड को छोड़कर वे बेल एंड हाबेल का प्रधान अधिकारी बन बैठे। यह कंपनी फोर्ड के मुकाबले बित्ते भर की थी, मगर 'पूरी की पूरी' उनकी अधीन थी।

जबर्दस्त जिज्ञासु बनें - उद्योगपति जबर्दस्त जिज्ञासु होते हैं। वह कभी भी अपनी जगह पर नहीं बैठते। वह दूसरे विभागों में घूमते हैं, लोगों से सवाल जवाब करते हैं, उन्हें परामर्श देते रहते हैं। एटी एंड टी के पूर्व प्रधान अधिकारी जॉन डिबट्स कई बार मेंटेनेंस विभाग के कर्मचारियों के साथ टेलीफोन लगाने या तारों की मरम्मत में उनका हाथ बंटाते रहते।

कोई मौका न चूकें - उद्योपतियों की कुछ और विशेषताएं भी होती हैं। मौका न चूकने के मामले में सब लाजवाब होते हैं। निजी फायदे का कोई भी मौका उनके हाथ से नहीं निकल सकता। इन सबके अलावा, यो लोग सच्चे अर्थों में आस्थावान होते हैं। अपने काम में, अपने माल में, अपनी कंपनी में और निरंकुश उद्योग प्रणाली में उन्हें गहरी आस्था होती है। और क्यों न हो, इसमें उन्हें सफलता जो मिली है।

सफलता की गारंटी है जिम्मेदारी का निर्वाह

इन्फोसिस के विशाल सिक्का कहते हैं कि अनिश्चितता से घबराकर कई इंसान नए कदम उठाना बंद कर देते हैं। सफलता पाने वाला व्यक्ति कभी भी अनिश्चितता से नहीं घबराता। करियर में सफलता के लिए आपको नई जिम्मेदारियां लेने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। इससे आपको अनुभव मिलता है जो भविष्य में काफी काम आता है।

भावनाओं पर काबू है जरूरी - अगर आप इमोशन्स पर कंट्रोल करना नहीं जानते हैं तो प्रोफेशनल व पर्सनल लाइफ में जिम्मेदार व्यक्ति नहीं बन सकते। भावनाओं को दबाने के बजाय उन्हें सही शब्दों और कार्यों के माध्यम से अभिव्यक्त करना सीखें। किसी व्यक्ति पर गुस्सा आ रहा है तो उस पर टूट पड़ने के बजाय संयम से काम लेना सही रहता है।

आत्मविश्वास कायम रखें - वह काम करें, जो आपको लगता है कि सही है। लोगों की सोच को अपनाने के बजाय अपनी स्वतंत्र सोच बनाएं। खुद पर विश्वास करें। अपनी तुलना दूसरों के साथन करें। खुद परविश्वास करने से ही मंजिल मिल सकता है। जिम्मेदार व्यक्ति जानता है कि उसको हर समस्या का समाधान खुद ही खोजना है।

फीडबैक का फायदा उठाएं - जिम्मेदार व्यक्ति अपनी आदतों पर गौर करता है और अपनी कमियों को दूर करने की कोशिश करता है। वह अपने व्यवहार के बारे में दोस्तों और परिजनों के कमेंट्स यानी फीड

बैक को ध्यान से सुनता है और खुद में जरूरी बदलाव करता है। अपनी कमियों को दूर करना अच्छी आदत है। इससे जिम्मेदारी का अहसास होता है।

अहसान को चुकाएं भी - कई बार आपने लोगों से अपना पक्ष लेने के लिए कहा होगा। जिम्मेदार व्यक्ति वापस लौटाने में यकीन रखता है और दूसरों की मदद करता है। जरूरी नहीं है कि हमेशा पैसे से मदद की जाए, आप समय देकर या स्किल्स सिखाकर भी मदद कर सकते हैं। किसी का अहसान सिर्फ लेना ही नहीं चाहिए बल्कि समय पर चुकाना भी चाहिए। इससे आगे के रास्ते खुलेंगे।

जिम्मेदारी पूर्ण व्यवहार करें - जिम्मेदार व्यक्ति अपने शब्दों और कार्यों से दूसरों को प्रभावित करता है। उसके चलने, बात करने के अंदाज से पता लग जाता है कि वह जिम्मेदार व्यक्ति है। वह अपने अच्छे गउणों के बारे में सबको बताता है। वह लोगों से उसी तरह से व्यवहार करता है, जैसा व्यवहार वह खुद अपने लिए चाहता है। इस तरह वह कभी परेशान नहीं होता।

लक्ष्य को प्राथमिकता दें - जिम्मेदार व्यक्ति पहले अपना लक्ष्य तय करता है और फिर उसे प्राप्त करने का एक ठोस प्लान बनाता है। वह अपने प्लान के अनुरूप काम करता है और मुश्किलों को दूर करने में जी-जान लगा देता है। वह अपने रोज के लक्ष्यों को पूरा करते हुए जीवन में बड़ा लक्ष्य हासिल करता है। वह हमेशा संतुष्ट रहता है।

विश्वसनीय बनें - आपको विश्वसनीय और आपकी बातों और कार्यों में अंतर नहीं होना चाहिए। गलती होने पर अपनी जिम्मेदारी लेना सीखें। अपनेनिणर्यों से जुड़े परिणामों के लिए सदैव तैयार रहें। गलतियों के लिए किसी अन्य को दोषी ठहराने की कोशिश न करें। ध्यान रहे, आप एक बार सबको ठग सकते हैं लेकिन बार बार सबके साथ गेम नहीं खेल सकते। विश्वसनीयता खत्म होने पर सफलता की राह मुश्किल हो जाएगा।

सामाजिक संबंधों को संवारें - जिम्मेदार व्यक्ति अपने मित्रों, रिश्तेदारों और परिवार के साथ समय गुजारना नहीं भूलता है। वह सब से नियमित रूप से मिलता जुलता है। अगर मिलना संभव नहीं होता, तो वह कॉल करके हाल-चाल पूछता है। उसके सामाजिक व्यवहार से ही उसकी जिम्मेदारी के बारे में पता लगता है।

भाई बहन खुशहाल रहे

गोपाल नारसन

बुराई से बचने की युक्ति है
रक्षा सूत्र का संकल्प
बहन भाई दोनो अपनाये
सद्गुण अपनाने का विकल्प
रक्षा सूत्र तो निमित्त है
रक्षा संकल्प अपनाने का
रक्षा तो परमात्मा करेंगे
फिर काहे घबराने का
भाई बहन खुशहाल रहे
मिलती सबसे यही दुआएँ
दीर्घ आयु जीवन रहे
सफल हो सब सदकामनाये।

राखी का त्यौहार

नेह डोर ऐसी बँधी, जिसका कहीं न मोल ।
त्याग और अनुराग का ,रिश्ता ये अनमोल ।।
भावों का गुंथन हुआ, जाग उठा उल्लास ।
कच्चे धागे ने किया, पक्का मन विश्वास ।।
राखी के त्यौहार ने, कर डाला अनमोल ।
वरना धागे का रहा, दो कौड़ी का मोल ।।
भरी सभा में द्रोपदी, बांध गई थी डोर ।
भरी सभा में कृष्ण ने, दिया न उसका छोर ।।
अक्षत, रोली ,राखियॉ, आए सबके द्वार ।
रहे सदा शाश्वत यहॉ, राखी का त्यौहार ।।

-संदीप सृजन

अघोरी

शिव ही शिव हैं जिसके अंदर
जानें जो शिव-माया का अंतर।
प्रेम शिव से करता है
शिव पर ही वो मरता है।
शिव हैं उसकी श्वांसों में
शिव उसकी प्रश्वासों में।
शिव मिलन को जिसने
जग की मर्यादाएं तोड़ी है।
शिव को भी है प्यारा सबसे
जिसे कहते हम अघोरी हैं।
मृत मांस का भोजन करता
सारी रीत उसने छोड़ी है।

मुकेश सिंह

प्राण बिनु तन है बस अवशेष
कहता हमें अघोरी है।
मैं क्या हूं समझाये वो ही
मेरी काया भी किराए की।
एकदिन मिट्टी में मिल जाएगा
आत्मा शिव में ही खो जाएगी।
शिव हैं सत्य, शिव ही सुंदर
शिव बिन जग माया घनघोर।
हम बस ढोंगी अभिनेता हैं
शिव को पुजे एक अघोर।।

खंजर का कोई मज़हब नहीं होता

भारत माता आज युवा से
प्रोढ़ता की ओर है।
दर्द के हिलोरे आज
भी पुरु जोर है
देश का जर्रा जर्रा
तेरा एहसान मंद है
चाह कर भी दर्द तेरा
बाँट सकते हम नहीं
इस जहाँ में तुझको
दर्द देने वाले माँ कम नहीं
अंग्रेजों की दी पीड़ा सहती रही
अब अपने ही पीड़ा दे रहे
किसको अपना ग़म सुनाओगी
समानता की बात होती है
और बढ़ रही विषमताएँ
खंजर का कोई मज़हब नहीं? होता
अनंत घावों से भरा सीना चाक है
जाख्म चाहो गिन लो देशवासियों
कौनसा घाव किसका? दिया है
अब तो रिसने लगा हर घाव है।
मैं तो सबकी मां हूँ
किसी में फर्क कर सकती नहीं आजादी का ढ़ोल हर वर्ष है पीटते
बाद में एक दूसरे पर तोहमतें लानते भेजते
मुँह इन्होंने जब भी खोले हैं
उगले हमेशा आग के शोले है
इन लपटों में शहर जल रहे
भारत माता की याद बस पंद्रह अगस्त को ही आती है।
सोचती हूँ दूर कहीं चली जाऊं
और अपने घावों का इलाज कराऊ
खंजर का कोई मज़हब नहीं हो

-अर्विना गहलोत
उत्तर प्रदेश

रेखा

-रामशर्मा 'परिन्दा',
मनावर

जाने कौन–सा धन
मुझमें देखा!
जाने क्यूँ
मुझसे रुठ गई
गरीबी रेखा।।
लाख चाहा मैंने
इसके नीचे आऊँ,
इसके कदमों तले
बिछ जाऊँ
और पा जाऊँ
छोटा कूपन,
अब नहीं
सही जाती मुझसे
मँहगाई की तपन।।
हे ! गरीबी की रेखा माता
मुझ पर तू
हो जा प्रसन्न,
ताकि मै भी खा सकूँ
एक रुपए किलो
अन्न।।
ये मँहगाई की मार
खा–खाकर
अब आने लगे है–चक्कर,
अब मेरा भी
मुँह मीठा करवा दे
दिलवा दे
शासकीय राशन दुकान से
शक्कर।।
यही अरज् है मेरी
बदल दे मेरी तकदीर,
बनवा दे मेरी भी
प्रधानमंत्री आवास योजना वाली
कुटीर।।
थक गया हूँ–मै
काम कर–करके
हो गया हूँ–सुस्त ,
मुझे आज तक
नही मिली
कोई चीज़ मुफ्त।।
मेरी अंतिम ईच्छा
पूरी कर दे,
तुझसे निवेदन करुँ–मै
अपनी आँखे मीचे !
एक बार तो ले–ले
हे ! गरीबी रेखा
मुझे अपने नीचे।।

उम्र भर सवालों में उलझते रहे

उम्र भर सवालों में उलझते रहे, सन्ह के स्पर्श को तरसते रहे
फिर भी सुकूँ दे जाती है तन्हाइयाँ आखिर किश्तोंमें हँसते रहे
आँखों में मौजूद शर्म से पानी, बेमतलब घर से निकलते रहे
दफ़्तर से लौटते लगता है डर यूँ ही कहीं बे-रब्त टहलते रहे
ख़ाली घर में बातें करतीं दीवारों में ही कुर्बत-ए-जाँ1 ढूढ़ते रहे
किरदार वो जो माज़ी2 में छूटे कोशिश करके उनको भूलते रहे
जब भी मिली महफ़िल कोई, छुप के शामिल होने से बचते रहे
करें तो भी क्या गुनाह तेरा और लोग फिकरे3 मुझपे कसते रहे
कभी मंदिर के बाहर गुनगुनाते रहे तो कभी हरम में छुपते रहे
मिला ना कोई राही 'राहत' तुर्बत-ए-अरमान4 पर फूल सजते रहे

शब्दार्थः
कुर्बत-ए-जाँ :- जीवन की निकटता (कोई अपना सा)
माज़ी :-अतीत
फिकरे :- व्यंग
तुर्बत-ए-अरमान :- आशाओं की क़ब्र

–डॉ. रूपेश जैन 'राहत'

प्राकृतिक सौंदर्य और मनुष्य का बढ़ता फासला

अनिता मिश्रा

हमारे आस-पास सब कुछ प्रकृति है,जो बहुत खूबसूरत पर्यावरण से घिरी हुई है। हम हर पल इसे देख सकते हैं और इसका आनंद उठा सकते हैं। हम हर जगह इसमें प्राकृतिक बदलावों को देखते,सुनते और महसूस करते हैं। हमें इसका पूरा फायदा उठाते हुए शुद्ध हवा के लिए रोज सुबह की सैर करने के बहाने घर से बाहर जाना चाहिए, तथा प्रकृति की सुबह की सुंदरता का आनन्द उठाना चाहिए। हालाँकि,सूर्योदय के साथ ये दिन में नारंगी और सूर्यास्त होने के दौरान ये पीले रंग-सा हो जाता है। थोड़ा और समय बीतने के साथ ही काली रात का रुप ले लेता है।

आज मानव घर में ही घुटकर रह जाता है। नेट-टीवी और सोशल मीडिया

ने जकड़ रखा है लोगों को,इसलिए

वो प्रकृति से दूर हो गए हैं। हमें प्रकृति के नजदीक जाना होगा। धरा भी धानी है,आसमान का रंग नीला है। रंग-बिरंगे फूल हैं,पेड़ों पर पंछी गाते हैं,यह महसूस करना होगा।

प्रकृति के पास हमारे लिए सब कुछ है,लेकिन हमारे पास उसके लिए कुछ नहीं है,बल्कि हम उसकी दी गई संपत्ति को अपने निजी स्वार्थों के लिए दिनों-दिन बरबाद कर रहे हैं। आज के आधुनिक तकनीकी युग में रोज बहुत सारे आविष्कार हो रहे हैं जिसका हमारी पृथ्वी के प्रति फायदे-नुकसान के बारे में नहीं सोचा जा रहा है। धरती पर हमेशा जीवन के अस्तित्व को संभव बनाने के लिए हमारी प्रकृति द्वारा प्रद्त्त संपत्ति के गिरते स्तर को बचाने की जिम्मेदारी हमारी है। अगर हम लोग अपनी कुदरत को बचाने के लिए अभी भी कोई कदम नहीं उठाते हैं,तो ये हमारी आने वाली पीढ़ी के लिए खतरा उत्पन्न कर देगा। हमें इसके महत्व और कीमत को समझना चाहिए,इसके वास्तविक स्वरुप को बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए। प्रकृति से प्यार करें,तभी हम

फासला घटा सकते हैं। हम प्रकृति

को हरा-भरा रखें, पेड़ लगाएं,वृक्ष

बचाएं,तभी तो प्रकृति आगे भी संरक्षित रहेगी। अपने जीवन को स्वस्थ बनाने के लिए हमें प्रकृति से जुड़ना ही होगा।

लेखनी क्यों कठघरे में?

वाणी बरठाकुर 'विभा'

'लेखनी क्यों कठघरे में ' इस बात को ऐसे ही स्पष्ट नहीं किया सकता है । इसके कई ऋणात्मक और धनात्मक कारण है।

रचनाकार हमेशा अपनी नजर में जैसा दिखता है अथवा उसके हृदय से जो निकलता है वही कलम के द्वारा कागज पर उतारता है । हर रचनाकार के लिए स्वयं की रचना खुद के बच्चों जैसी होती है । सभी चाहते हैं कि उसकी रचना पाठक का समादर प्राप्त करे। हर एक रचनाकार की विचार धारा भी अनेक होती है । किसी को धरती दिखाई देती है, किसी को अम्बर और कोई तो काल्पनिक जगत में घूमता रहता है । सभी के विचार युक्ति अलग - अलग होने के कारण हमेशा अच्छी रचना भी कठघरे में आ जाती है । जब अपने बेटा-बेटी सम रचना को लाकर कठघरे में खड़ा कर देते हैं तो रचनाकार के मन में अक्सर मायूसी छा जाती है और तब खुद को हारे हुआ लेखनीकार मान लेता है । मगर यह कतई उचित नही है । क्योंकिष्ठष्ठकबीर दास जी ने अपनी एक साखी में लिखा है किष्ठष्ठ.

निंदक नेड़ा राखिये, आँगणि कुटि बँधाइ ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ ।।

अर्थात, निंदक को हमेशा अपने समीप रखना चाहिए, अपनी आँगन में ही एक कुटिया बनाकर देना चाहिए । जैसे पानी और साबुन बिना कपड़े साफ नही होते है ठीक उसी तरह निन्दक बिना गलतियों को नही सुधार सकते है । इस कथन शत प्रतिशत सत्य है । रचनाकार के लिए यह बहुत जरूरी है कि रचना को कठघरे में लाया जाये।

कभी-कभी देखा जाता है कि अच्छी रचना लोगों के नजर में नहीं आने की वजह से समय पर इसे सम्मान नहीं मिलता । लेकिन बाद में जब कठघरे में लाते हैं अथवा कभी किसी का स्पर्श मिलते ही नजर आने लगती है। इसलिए मैं यही कहना चाहूँगी कि कोयले की खान को बहुत कष्ट से खोदने के बाद ही हीरा निकलता है ।

राजनीति को राजनीति की भाषा में भाषा का पाठ पढ़ाने का उचित समय

-विनोद बब्बर

किसे याद न होगा आज से लगभग पांच वर्ष पूर्व उस समय भाजपा अध्यक्ष और वर्तमान में केन्द्रीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा, 'एक समय भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था। आधुनिकता की चकाचौंध में सबकुछ खो गया है। मैं कहना चाहता हूं कि सबसे ज्यादा क्षति इस देश को पहुंची है तो वो है अंग्रेजी भाषा के कारण। लगता है हम अपनी भाषा और संस्कृति से ऊबते जा रहे है।' उस समय राजनाथ जी के वक्तव्य को विपक्षी प्रवक्ता ने ढ़ोग बताया था। आरोप - प्रत्यारोप के दौर में भाषा की अस्मिता का सवाल दब गया था। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या आज स्थिति में बदलाव हुआ? आज माननीय राजनाथ जी का मत क्या है? यह इसलिए भी विचारणीय है क्योंकि हम ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन की तैयारियों में लगे हैं।

दुनिया के शायद ही किसी अन्य देश में ऐसा हुआ हो कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी अपनी मातृभाषा के लिये संघर्ष करना पड़ा हो। न्यायालयों की कार्यवाही राजभाषा में करने की मांग को लेकर धरना दे देने वाले लोगों को जेल भेजा गया। हो। कहने को देश के संविधान में हिन्दी संघ की राजभाषा है तो राज्यों में वहाँ की मातृभाषा को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हमारे कई राज्यों का गठन भी भाषा के आधार पर ही हुआ है परंतु देश व राज्यों की राजभाषा की स्थिति क्या है, यह कौन नहीं जानता?

क्या यह असत्य है कि इस स्थिति के लिए यदि कोई जिम्मेवार है तो वह है हमारे नेता जो वोट तो देश की भाषा में मांगते हैं लेकिन सत्ता की कुर्सी तक पहुंचकर नौकरशाही के दबाव में आकर विदेशी भाषा के भक्त बन जाते हैं। यह प्रश्न-आखिर कब तक मौन रहेगा कि ऐसा दबाव क्या है कि संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर हिन्दी में भाषण देकर राष्ट्र का गौरव बढ़ाने वाले स्वनाम धन्य नेता भी सत्ता के शिखर पर पहुंचने के बाद बेबस हो जाते हैं?

यहां हमारा उद्देश्य राजनीति की तर्क-कुतर्क की परंपरा में भाषा के सवाल को उलझाने का नही, बल्कि भाषा और राष्ट्र की अस्मिता को रेखांकित करना है। यह कोई आश्चर्य नहीं कि 'पक्ष से विपक्ष तक के विभिन्न-विचारधाराओं के नेताओं में लाख मतभेदों के बावजूद इस बात पर एकमत हैं कि भारतीय भाषाओं की उपयोगिता समाप्त हो गई है; ज्ञान की भाषा अंग्रेजी ही हो सकती है। सांस्कृतिक बहुलवाद के पुरोधा भी भाषा के सवाल पर अंग्रेजी की खोल में सिमट जाते हैं।'

यह दुर्भाग्यपूर्ण अवधारणा तेजी से फल-फूल रही है कि अंग्रेजी ही देश में महत्व और सम्मान पाने का एकमात्र माध्यम है। शायद यही कारण है कि आज नर्सरी स्कूलों से विश्वविद्यालयों तक अंग्रेजी का बोलबाला है। उच्च शिक्षा की अधिकांश सामग्री अंग्रेजी में ही उपलब्ध है। भाषायी मूढ़ता के कारण अनेक प्रतिभाओं की असमय हत्या हो जाती है क्योंकि एक भाषा विशेष के नाम पर उन्हें अच्छे विश्वविद्यालयों

अथवा व्यवसायिक कोर्स में प्रवेश से वंचित होना पड़ता हैं।

यह सत्य है कि वर्तमान युग में किसी एक भाषा से काम चलने वाला नहीं है। भारतीय भाषाओं में लिखने का मतलब यह नहीं है कि अंग्रेजी नहीं पढ़ने की कसम खा ली गई है। त्रिभाषी होना आज की आवश्यकता है लेकिन अपनी मातृभाषा और मातृभूमि की भाषा की कीमत पर नहीं। हिंदी के महत्व को दुनिया उसमझ रही है तभी तो पेंगुइन जैसे प्रकाशन भी हिंदी में पुस्तकें छापने लगे हैं। आज भी हिंदी के समाचारपत्र भारत में सर्वाधिक बिकते है।

विचारणीय है कि आज भर में 60 से 72 घंटों में अंग्रेजी सिखाने के दावें करने वाले बहुतायात में है तो इसका मतलब स्पष्ट है कि तीन महीने में जर्मन, फ्रेंच या रूसी भाषा सीखी जा सकता है तो अंग्रेजी को बचपन से ही लादना क्यों जरूरी है? आखिर क्यों नहीं विद्यालयों में भारतीय भाषाओं की शिक्षा दी जा रही है? हमारी अपनी भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान की पूंजी को प्रेषित करने से संकोच क्यों?

इस प्रश्न का भी उत्तर तलाशना होगा कि हमारे शहरों जितने बड़े

देशों में नोबल विजेता पैदा होते है लेकिन हमारे इतने विशाल देश में नहीं होते कहीं इसका कारण विदेशी भाषा की दीवानगी तो नहीं? यह सर्वमान्य तथ्य है कि विदेशी भाषा में हमारे ज्ञान की मौलिकता नहीं हो सकती बल्कि उसे महज रटा जा सकता है। कौन नहीं जानता कि विश्व विख्यात वैज्ञानिक न्यूटन, आइंस्टीन, मैक्सप्लांक बहुत पढ़े लिखे नहीं थे। शेक्सपियर, तुलसीदास, महर्षि वेदव्यास आदि के पास कोई डिग्री नहीं थी, इन्होनें सिर्फ अपनी मातृभाषा में काम किया।

जहाँ तक निज भाषा और उसकी संवेदना का प्रश्न है, गांधीजी की पोती तारा भट्टाचार्य ने राजघाट पर आयोजित एक कार्यक्रम में कहा था कि बचपन में वह अपने दादा जी के साथ अंग्रेज राजकुमार से मिली तो उसने तारा से हाथ मिलाते हुए 'हाऊ डू यू डू?' कहा। बालिका तारा उसे बता रही थी 'कल रात उसे बुखार था इसलिए वहष्ठष्ठ.' तो अंग्रेज राजकुमार मुस्कुरा रहा था। इसपर गांधीजी ने तारा को आगे कुछ कहने से रोका। बाद में तारा ने पूछा कि आपने मुझे क्यों रोका तो गांधीजी ने उत्तर दिया, 'हाऊ डू यू डू के जवाब में तुम्हे केवल फाइन ही कहना चाहिए था क्योंकि अंग्रेजी में केवल यही कहने की परम्परा है' इसपर बालिका तारा ने बिगड़ते हुए कहा, 'दादाजी, यह कैसी भाषा है- जिसमें आप पूछे गए प्रश्न का सही उत्तर देने के बजाय केवल 'फाइन' कहने को मजबूर है। नहीं मैं अंग्रेजी नहीं सीखना चाहती।'

स्पष्ट है कि भारतीय भाषाओं के प्रचार, प्रसार और निजी जीवन से रोजमर्रा के कामकाज में अपनी भाषाओं का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए।

काश हमारे नौकरशाहो को समझ आता कि मातृ भाषा/ देश भाषा में शिक्षा से - 'प्रत्येक छात्र के कम से कम 5 से 6 वर्ष बचते। जिन्हें अंग्रेज़ी,चीनी, रूसी, जापानी, इत्यादि भाषाएं पढनी हो, वे इन बचे हुए वर्ष में सघन पढाई कर पाते। इसके कारण, केवल अंग्रेज़ी के ही नहीं, अन्य भाषाओं में होते शोधों के प्रति सारा राष्ट्र लाभान्वित हो जाता। पढाई के वर्ष बचने से, राष्ट्र की शिक्षा पर हो रहे अनावश्यक खर्च का कम से कम एक-तिहाई बचता जिसका अन्यत्र उपयोग किया जा सकता है। छात्र जल्दी तैयार होकर परिवार और समाज का सहयोगी बन जाता। उसके जीवन के उत्पादक वर्षों में वृद्धि होती। जन भाषा में चिन्तन का अभ्यास अन्वेषणों को प्रेरित करता। अपनी भाषाओं के सार्वजनिक चलन से अनगिनत लाभ होते, जिसकी कल्पना भी की नहीं जा सकती। हम अपनी भाषाओं को लेकर अनावश्यक हीन ग्रंथि से पीडित न होते।'

अगर हमारे शासक नेता व नौकरशाह इसे समझने में असमर्थ रहते है कि विश्व हिंदी सम्मेलनों को महज एक कर्मकाण्ड की संज्ञा ही दी जा सकती है। आज की आवश्यकता है कि राजनीति को राजनीति की भाषा में ही भाषा का पाठ पढ़ाया जाये। पर यक्ष प्रश्न यह है कि क्या समस्त भाषाप्रेमी दलगत राजनीति से ऊपर उठकर भारतीय भाषाओं के सम्मान के लिए अपने आकाओं से आंख से आंख मिलाने के लिए तैयार हैं?

सम्भावना

प्रभा मुजुमदार

थामे रखनी है
अपने हाथों मे एक मशाल
ताकि गुजर सकें
वक्त-बेवक्त अकेले
अन्धी सुरंगो से होकर
बेखौफ़.
षडयंत्रो से
परिचित हो कर भी
दिख सके निश्चिंत
बना कर रखनी है
खुद अपने लिये सुरंगे
जो निकाल सके
सही वक्त पर
लाक्षागृहो से.
अपने ही प्रयासो से
पाने होंगे मंत्र
रथी-महारथियो के रचे
चक्र-व्यूहों को
सुरक्षित भेद सकने के लिये.
रखना होगा
थोडी सी हंसी और
उल्लास को बचा कर
विषाद और आंसू की
वैतरणी को
पार कर सकने के लिये.
बचा कर रखने होंगे
कुछ अंकुर
सृष्टि के अंत तक
फिर नये जीवन की
सम्भावना के लिये.

मेरी नानी

यशपाल निर्मल

सबसे अच्छी मेरी नानी ।
रोज सुनाती एक कहानी।।
सबसे अच्छी मेरी नानी ।
रोज सुनाती एक कहानी।।
परियों जैसी दिखती है।
सुंदर सुंदर लिखती है। ।
कोयल सी इसकी वाणी।
सबसे अच्छी मेरी नानी ।
रोज सुनाती एक कहानी।।
सबकी आव भगत करती।
नहीं किसी से भी डराती।।
है बड़ी यह ज्ञानी ध्यानी ।
सबसे अच्छी मेरी नानी ।
रोज सुनाती एक कहानी।।
भूखों को यह देती खाना।
चिडि़यों को खिलाती दाना।।
पौधों को रोज देती पानी।
सबसे अच्छी मेरी नानी ।
रोज सुनाती एक कहानी।।
झूठ न बोलु है ये सच्ची।
बच्चों संग बन जाए बच्ची।।
बातें करती बड़ी स्यानी।
सबसे अच्छी मेरी नानी ।
रोज सुनाती एक कहानी।।

मानसून सत्रः भाजपा-कांग्रेस के बीच 'हिट एंड रन' की राजनीति

उमेश त्रिवेदी

कांग्रेस और भाजपा नेताओं के बीच कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता और पूर्व केन्द्रीय मंत्री आनंद शर्मा के इस बयान पर तलवारें खिंच गई हैं कि 'कांग्रेस के बारे में प्रधानमंत्री मोदी जिस प्रकार के अनर्गल आरोप लगा रहे हैं, वह उनकी बीमार मानसिकता प्रतीक है'। केन्द्रीय कानून मंत्री रविशंकर प्रसाद ने कांग्रेस के आरोप को शर्मनाक और हताशा का प्रतीक बताया है। वैसे आनंद शर्मा का यह कथन एकदम खारिज करने योग्य है कि 'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं'। 18 जुलाई से प्रारंभ होने वाले लोकसभा के मानसून सत्र के पहले कांग्रेस की राजनीतिक रणनीति का खुलासा करते हुए आनंद शर्मा ने यह बात कही थी।

राज्यसभा में काग्रेस के उपनेता आनंद शर्मा का यह आक्षेप राजनीतिक-शालीनता के दायरों के पार 'बिलो द बेल्ट' हिट करने वाली श्रेणी में आता है। यह राजनीतिक रूप से अतिरंजित और अशालीन है। अपरिपक्वता से कांग्रेस को बचना चाहिए। नरेन्द्र मोदी जैसा चतुर वक्ता केवल इसी मुद्दे के सहारे मानसून-सत्र के दरम्यान उठाए जाने वाले लोक महत्व के सभी मुद्दों को हाशिए पर ढकेल सकता है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता, गुजरात विधानसभा चुनाव के दौरान, कांग्रेस के निष्कासित नेता मणिशंकर अय्यर के उस बयान का हश्र नही भूले होंगे, जिसने आखिरी सप्ताह में चुनाव का रुख बदल दिया था। अय्यर के कथन 'मोदी नीच किस्म की राजनीति करते है' के अंशों को अपने ऊपर ओढ़कर मोदी ने चुनाव की फिजा को ही बदल दिया था कि कांग्रेस मुझे निचली जाति का बताकर दलितों का अपमान कर रही है।

इस कथन के आगे-पीछे आनंद शर्मा ने जो कुछ कहा, उसकी राजनीतिक-मीमांसा जरूर होना भी चाहिए। शर्मा ने मोदी की मानसिक अस्वस्थता के आरोप के समर्थन में जो कारण नत्थी किये हैं, उनमें एक यह है कि प्रधानमंत्री आदतन झूठ बोलते हैं। शर्मा के इस कथन में यह संशोधन हो सकता है कि मोदी आदतन नहीं, इरादतन झूठ बोलते हैं। तोल-मोल कर बोलते हैं और खम ठोककर बोलते हैं। वैसे शर्मा का यह सोच जायज है कि आदतन अथवा इरादतन, चाहे जो हो, प्रधानमंत्री का इस तरह झूठ बोलना अथवा लोगों को गुमराह करना राष्ट्र की चिंता का विषय होना चाहिए। मोदी को यह सोचना चाहिए कि वो सिर्फ भाजपा के नहीं, पूरे देश के प्रधानमंत्री हैं। उन्हें देश और पद की गरिमा का ध्यान रखना चाहिए। वो देश को गुमराह करने और झूठे बयान देने से बचें।

कांग्रेस की नाराजी का सबब यह भी है कि प्रधानमंत्री मोदी केवल राष्ट्रीय मुद्दों पर देश और जनता को गुमराह नहीं कर रहे हैं, वो कांग्रेस के बारे में भी लगातार गलतबयानी कर रहे हैं। मोदी का यह आरोप गलत है कि कांग्रेस तीन तलाक से संबंधित विधेयक को रोकना चाहती है, जबकि यह विधेयक प्रवर समिति के विचाराधीन है। इसी तारतम्य में प्रधानमंत्री को कांग्रेस को मुस्लिमों की पार्टी बताने के लिए भी कांग्रेस से माफी मांगना चाहिए। मोदी ने आजम गढ़ में तीन तलाक के मुद्दे पर कांग्रेस पर विरोध करने का आक्षेप लगाते हुए पूछा था कि क्या कांग्रेस सिर्फ मुस्लिम पुरुषों की पार्टी है?

मानसून सत्र के पहले राजनीति के बादलों में बिजली की यह गड़गड़ाहट कह रही है कि सदन में संवाद कम, शोर ज्यादा होने वाला है। हंगामे की आशंकाओं के बीच जहां सत्ता पक्ष प्रतिपक्ष से सहयोग मांग रहा है, वहीं राहुल गांधी चिट्ठी लिखकर स्पीकर से यह सुनिश्चित करने का अनुरोध कर रहे हैं कि बजट-सत्र की तरह यह मानसून-सत्र भी बरबाद नहीं हो जाए। सत्ता पक्ष की ओर से सदन को सुचारू चलाने की यह पहल दिखावा ज्यादा है। वैसे भी लोकसभा का संवैधानिक गांभीर्य अथवा संसदीय-संवाद मोदी-सरकार के एजेण्डे का हिस्सा नहीं रहा है। पिछला बजट-सत्र इसका जीता-जागता सबूत है। जो सरकार बजट-सत्र जैसे महत्वपूर्ण अवसरों पर होने वाली कार्यवाही को कोरे-कागज का हिस्सा बना सकती है अथवा अविश्वास प्रस्ताव को हवा में उड़ा सकती है, वह सरकार प्रतिपक्ष की राई जैसी मामूली भूलों को पहाड़ बना सकती है। हो सकता है कि मानसून सत्र के पहले दिन ही सदन में यह विवाद होने लगे कि मानसिक रूप से प्रधानमंत्री को अस्वस्थ कहने के मामले में पहले कांग्रेस माफी मांगेष्ठ। कोई कुछ भी कहे, मानसून-सत्र का नाटकीय अंदाज निराला ही रहने वाला है।

एक बेटे का कबूलनामा

नीरज त्यागी

जब ना लिख पाया कोई भी,अपनी किताब ए गुनाह ।
हमने कर ली तैयारी लिखेंगे ऐसा जो खुद को कर ले फनाह ।।
अपने ही माँ बाप के ददी को मैं बाट ही ना पाया।
जब जरूरत पड़ी उन्हें,मैं अपनी सहूलियत से उनके काम आया।।
जिन्होंने मुझे बड़ा करने में अपने बहुत से सपनो को कर दिया फनाह।
जब भी काम करने पड़े उनके मेरा मनवा रहा बड़ा ही अनमना।।
अब दिल से चाहता हूँ कि मैं अपने माँ बाप के काम आओ ।
पर वो जो हर कठिनाई में साथ थे मेरे अब उन्हें कहाँ से लाओ।।
पिता की गोदी और माँ का आँचल जब मुझ पर छाया था।
एक बस वही समय था जब मैं खुद पर इतराया था।।

प्लास्टिक कचरे से गहराता संकट

-फ़िरदौस ख़ान

प्लास्टिक ज़िन्दगी का एक अहम हिस्सा बन चुका है। अमूमन हर चीज़ के लिए प्लास्टिक का इस्तेमाल हो रहा है, वो चाहे दूध हो, तेल, घी, आटा, चावल, दालें, मसालें, कोल्ड ड्रिंक, शर्बत, सनैक्स, दवायें, कपड़े हों या फिर ज़रूरत की दूसरी चीज़ें सभी में प्लास्टिक का इस्तेमाल हो रहा है। बाज़ार से फल या सब्ज़ियां ख़रीदो, तो वे भी प्लास्टिक की ही थैलियों में ही मिलते है। प्लास्टिक के इस्तेमाल की एक बड़ी वजह यह भी है कि टिन के डिब्बों, कपड़े के थैलों और काग़ज़ के लिफ़ाफ़ों के मुक़ाबले ये सस्ता पड़ता है। पहले कभी लोग राशन, फल या तरकारी ख़रीदने जाते थे, तो प्लास्टिक की टोकरियां या कपड़े के थैले लेकर जाते थे। अब ख़ाली हाथ जाते है, पता है कि प्लास्टिक की थैलियों में सामान मिल जाएगा। अब तो पत्तल और दोनो की तर्ज़ पर प्लास्टिक की प्लेट, गिलास और कप भी ख़ूब चलन में हैं। लोग इन्हें इस्तेमाल करते हैं और फिर कूड़े में फेंक देते हैं। लेकिन इस आसानी ने कितनी बड़ी मुश्किल पैदा कर दी है, इसका अंदाज़ा अभी जनमानस को नहीं है।

दरअसल, प्लास्टिक कचरा पर्यावरण के लिए एक गंभीर संकट बन चुका है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक़ देश में सबसे ज़्यादा प्लास्टिक कचरा बोतलों से आता है। साल 2015-16 में करीब 900 किलो टन प्लास्टिक बोतल का उत्पादन हुआ था। राजधानी दिल्ली में अन्य महानगरों के मुक़ाबले सबसे ज़्यादा प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। साल 2015 के आंकड़ों की मानें, तो दिल्ली में 689.52 टन, चेनन्ई में 429.39 टन, मुंबई में 408.27 टन, बेंगलुरु में 313.87 टन और हैदराबाद में 199.33 टन प्लास्टिक कचरा पैदा होता है। सिर्फ़ दस फ़ीसद प्लास्टिक कचरा ही रि-साइकिल किया जाता है, बाक़ी का 90 फ़ीसद कचरा पर्यावरण के लिए नुक़सानदेह साबित होता है।

रि-साइक्लिंग की प्रक्रिया भी प्रदूषण को बढ़ाती है। रि-साइकिल किए गए या रंगीन प्लास्टिक थैलों में ऐसे रसायन होते हैं, जो ज़मीन में पहुंच जाते है और इससे मिट्टी और भूगर्भीय जल विषैला बन सकता है। जिन उद्योगों में पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर तकनीक वाली रि-साइकिलिंग इकाइयां नहीं लगी होतीं। उनमें रि-साइक्लिंग के दौरान पैदा होने वाले विषैले धुएं से वायु प्रदूषण फैलता है। प्लास्टिक एक ऐसा पदार्थ है, जो सहज रूप से मिट्टी में घुल-मिल नहीं सकता। इसे अगर मिट्टी में छोड़ दिया जाए, तो भूगर्भीय जल की रिचार्जिंग को रोक सकता है। इसके अलावा प्लास्टिक उत्पादों के गुणों के सुधार के लिए और उनको मिट्टी से घुलनशील बनाने के इरादे से जो रासायनिक पदार्थ और रंग आदि उनमें आमतौर पर मिलाए जाते हैं, वे भी अमूमन सेहत पर बुरा असर डालते हैं।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि प्लास्टिक मूल रूप से नुक़सानदेह नहीं होता, लेकिन प्लास्टिक के थैले अनेक हानिकारक रंगों, रंजक और अन्य तमाम प्रकार के अकार्बनिक रसायनों को मिलाकर बनाए जाते हैं। रंग और रंजक एक प्रकार के औद्योगिक उत्पाद होते हैं, जिनका इस्तेमाल प्लास्टिक थैलों को चमकीला रंग देने के लिए किया जाता है। इनमें से कुछ रसायन कैंसर को जन्म दे सकते हैं और कुछ खाद्य पदार्थों को विषैला बनाने में सक्षम होते हैं। रंजक पदार्थों में कैडमियम जैसी जो धातुएं होती हैं, जो सेहत के लिए बेहद नुक़सानदेह हैं। थोड़ी-थोड़ी मात्रा में कैडमियम के इस्तेमाल से उल्टियां हो सकती हैं और दिल का आकार बढ़ सकता है। लम्बे समय तक जस्ता के इस्तेमाल से मस्तिष्क के ऊतकों का क्षरण होने लगता है।

हालांकि पर्यावरण और वन मंत्रालय ने रि-साइकिंल्ड प्लास्टिक मैन्यूफैक्चर एंड यूसेज़ रूल्स-1999 जारी किया था। इसे 2003 में पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम-1968 के तहत संशोधित किया गया है, ताकि प्लास्टिक की थैलियों और डिब्बों का नियमन और प्रबंधन सही तरीक़े से किया जा सके। भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) ने धरती में घुलनशील प्लास्टिक के 10 मानकों के बारे में अधिसूचना जारी की थी, मगर इसके बावजूद हालात वही 'ढाक के तीन पात' वाले ही हैं।

हालांकि दिल्ली समेत देश के कई राज्यों में पॉलीथिन और प्लास्टिक से बनी सामग्रियों पर रोक लगाने का ऐलान किया जा चुका है। इसका उल्लंघन करने पर जुर्माने और क़ैद का प्रावधान भी है।प्लास्टिक के इस्तेमाल से होने वाली समस्याएं ज़्यादातर कचरा प्रबंधन प्रणालियों की ख़ामियों की वजह से पैदा हुई हैं। प्लास्टिक का यह कचरा नालियों और सीवरेज व्यवस्था को ठप कर देता है। इतना ही नहीं नदियों में भी इनकी वजह से बहाव पर असर पड़ता है और पानी के दूषित होने से मछलियों की मौत तक हो जाती है। नदियों के ज़रिये प्लास्टिक का ये कचरा समुद्र में भी पहुंच रहा है। वर्ल्ड इकोनॉमिक फ़ोरम की रिपोर्ट के मुताबिक़ हर साल तकरीबन 80 लाख टन कचरा समंदरों में मिल रहा है। समंदरों में जो प्लास्टिक कचरा मिल रहा है, उसका तक़रीबन 90 फ़ीसद हिस्सा दस नदियों से आ रहा है, जिनमें यांग्त्जे, गंगा, सिंधु, येलो, पर्ल, एमर, मिकांग, नाइल और नाइजर नदियां शामिल हैं। इनमें से आठ नदियां एशिया की हैं। इनमें सबसे ज़्यादा पांच नदियां चीन की, जबकि दो नदियां भारत और एक अफ़्रीका की है। चीन ने 46 शहरों में कचरे को क़ाबू करने का निर्देश जारी किया है, ताकि नदियों के प्रदूषण को कम किया जा सके। प्लास्टिक पशुओं की मौत का भी सबब बन रहा है। कूड़े के ढेर में पड़ी प्लास्टिक की थैलियों को खाकर आवारा पशुओं की बड़ी तादाद में मौतें हो रही हैं।

प्लास्टिक के कचरे की समस्या से निजात पाने के लिए प्लास्टिक थैलियों के विकल्प के रूप में जूट से बने थैलों का इस्तेमाल ज़्यादा से ज़्यादा किया जाना चाहिए। साथ ही प्लास्टिक कचरे का समुचित इस्तेमाल किया जाना चाहिए। देश में सड़क बनाने और दीवारें बनाने में इसका इस्तेमाल शुरू हो चुका है। प्लास्टिक को इसी तरह अन्य जगह इस्तेमाल करके इसके कचरे की समस्या से निजात पाई जा सकती है। बहरहाल, प्लास्टिक कचरे से निपटने के लिए बेहद ज़रूरी है कि इसके प्रति जनमानस को जागरूक किया जाए, क्योंकि इस मुहिम में जनमानस की भागीदारी बहुत ज़रूरी है। इसके लिए जन आंदोलन चलाया जाना चाहिए।

जानिए भारत के कुछ अजब और गज़ब राजाओ के बारे में

भारत में लोकतंत्र से पहले यहां पर राजा-महाराजाओं का राज चलता था। इनका राज करने का तरीका काफी अलग होता था। सबसे खास बात तो है कि इनके शौक और फैसले भी जरा हटकर होते थे। तभी तो कोई कुत्ते की शादी पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित करते थे तो कोई विदेशी कारें खरीद कर उनसे कूड़ा उठवाते थे। आइए जानें देश के ऐसे ही 10 अजब-गजब महाराजाओं और महारानियों के बारे में

१. अलवर के महाराज

इन अजब-गजब महाराजाओं में अलवर के राजा जय सिंह का नाम भी शामिल है। एक बार वे लंदन यात्रा के दौरान सामान्य वेशभूषा में रॉयल रोयस के शोरूम गए। वहां पर इनके साथ साधारण भारतीय की तरह बर्ताव हुआ। इस बात का इन्हें काफी बुरा लगा। इसके बाद जब वे दोबारा गए तो पूरे राजसी ठाठ से गए और वहां से 10 कारें खरीद लाए। इसके बाद भारत में इन विदेशी कारों की छत हटवाकर उन्हें कूड़ा उठाने में लगा दिया। इस बात की जानकारी होने पर रॉयल रोयस के अधिकारियों को राजा जय सिंह से माफी मांगी और उन्हें मनाना पड़ा।

२. बीकानेर के महाराज

बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह का अपनी जनता के प्रति प्रेम दर्शाने का तरीका काफी अलग था। इनके बारे में कहा जाता है कि वह गरीबों में सोना खूब बांटते थे। एक बार तो उन्होंने अपने वजन के बराबर सोना गरीबों को बांटा था। सोना इतना ज्यादा था कि उस सोने को गरीबों के पालतू जानवर भी नहीं लाद पा रहे थे।

जूनागढ़ के महाराज जनता की तरह ही अपने पालतू कुत्तों को भी प्यार करते थे। शायद तभी उनके पास कुल 800 कुत्ते थे और हर कुत्ते की सेवा में एक-एक सेवक हुआ करता था। इन कुत्तों का इलाज ब्रिटिश सर्जन से होता था। किसी एक कुत्ते के मरने पर एक दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित किया जाता था।इतना ही नहीं एक बार दो कुत्तों की शादी कराई। शादी का खर्च करीब 20 लाख रुपये आया था। इसके अलावा पूरे देश में छुट्टी घोषित करा दी गई थी ताकि हर कोई कुत्तों को इतमिनान से आशीर्वाद दे सके।

४. कपूरथला के महाराज

कपूरथला के महाराज जगजीत सिंह के शौक भी काफी अलग थे। वह लक्ज़री ब्रांड लुइ विटन के सबसे बड़े ग्राहक थे। इसका उदाहरण है कि उनके पास करीब 60 बड़े लुइ विटन के शानदार बक्से थे। यात्रा के बेहद शौकीन महाराज जगजीत सिंह हर जगह अपने साथ इन बक्सों को ले जाते थे।

५. हैदराबाद के निज़ाम

हैदराबाद के निज़ाम मीर उस्मान अली खां के शौक भी कम नहीं थे। वह इन अजब-गजब शौकों की सूची में शामिल थे। इन्हें कीमती जवाहरातों का बड़ा शौक था। दुनिया के पांचवें सबसे बड़े 184.97 कैरट के जैकब डायमंड को एक पेपर वेट की तरह ये प्रयोग करते थे। ये डायमंड इनके न रहने के बाद भारत सरकार के खजाने में जमा हो गया। इन्हीं सबकी वजह से ही उनका करीब खजाना 2 बिलियन डॉलर था।

६. महाराजा स्वामी माधोसिंह

महाराजा स्वामी माधोसिंह को बर्तनों का बड़ा शौक था। इनका नाम गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज है। इनके खजाने में दुनिया के 2 सबसे बड़े चांदी के बर्तन थे। इन्हें बनाने के लिए करीब 14000 सिक्कों को पिघलाए गए थे। सबसे खास बात तो यह है कि इन चांदी के पतीलों में वह लंदन यात्रा के दौरान गंगाजल भर के ले जाते थे।

७. ग्वालियर के महाराज

इन महाराजा की मेहमानवाजी का कोई जोड़ नहीं था। इनकी मेहमानवाजी के काफी चर्चे थे। इनके पास चांदी से बनी एक टॉय ट्रेन थी। इसका इस्तेमाल शाही दावतों के दौरान लोगों तक सिगार और शराब पहुंचाने के लिए होता था। इसे देखने के लिए लोगों की काफी भीड़ होती थी।

८. उदयपुर के महाराणा

उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह को क्रिस्टल का गजब का शौक था। शायद इसीलिए अपने पूरे महल में क्रिस्टल लगवाकर उसे क्रिस्टल गैलरी नाम दिया था। इतना ही नहीं पंखे, गिलास, डिनर सेट, टेबल-कुर्सी और परफ्यूम की बोतलें सब क्रिस्टल से जड़े थे। इसके अलावा उनका बिस्तर भी क्रिस्टल का था। उनके इस शौक को पूरा करने का ठेका इंग्लैण्ड की एफ़. एंड सी. आसेल्लेर कंपनी ने लिया था।

९. महारानी इंदिरा देवी

महारानी इंदिरा देवी के शौक भी काफी निराले थे। इन्होंने 20वीं शताब्दी के मशहूर शू मेकिंग कंपनी Salvatore Ferragamo' से 100 जोड़ी जूते बनवाए थे। सबमें कीमती रत्न जड़े हुए थे। महारानी ने उन पर काले वेलवेट पर मोती और डायमंड लगवाया था।

१०. महारानी सीता देवी

बड़ौदा की महारानी सीता देवी का नाम भी अजबोगरीब शौक रखने वाली महारानियों में शामिल था। उन्हें ज्वैलरी के साथ ही साड़ियों का बेहद शौक था। शायद तभी उनके पास 1000 साड़ियां थीं। सबकी मैचिंग के जूते और हैंडबैग भी थे। इसके अलावा वह रूबी जड़ित सिगरेट होल्डर भी रखती थी। इतना ही नहीं उन्होंने यूरोप से एक सोने की जीभ्ही भी मंगाई थी।

सावन के गीतों में परिवारिक संबंधों के नवरस

राकेश सैन

सावन, नाम सुनते ही मन में राहत की फुहारें से बरस जाती हैं और मन में तैर जाते हैं उमड़ते-घुमड़ते बादल, कूकती कोयल और पंख फैलाए मोर, सेवीयां, घेवर, बागों में पड़े झूले और पींघ झूलती युवतियों के गीत। भारतीय समाज में सावन केवल बरसात व भीषण गर्मी से राहत के लिए ही नहीं जाना जाता बल्कि इसका सांस्कृतिक रूप से इतना महत्त्व है कि इसको लेकर अनेक ग्रंथ अटे पड़े हैं। सावन आते ही हर भारतीय के घर में अनेक तरह की तैयारियां शुरू हो जाती हैं। सावन जहां बिरहन को जलाता है वहीं इसके गीतों में माँ-बेटी, भाई-बहन, पति-पतनी, सास-बहु, देवरानी-जेठानी, सखी-सहेली के बीच संबंधों के संबंधों में व्याप्त नवरस का पान करने का अवसर मिलता है। नवरस यानि वह रस जो मीठा भी है और कड़वा भी, कसैला भी है और फीका भी, जिसमें चौसे आम की खटमिटाहट है तो आंवले का कसैलापन भी। इन्हीं सभी रसों यानि संबंधों से ही तो बनता है परिवारिक जीवन। नवब्याहता दुल्हन अपने मायके आती है तो कहीं भाई सिंधारा लेकर अपनी बहन के घर पहुंचता है। ससुराल से सावन की छुट्टी ले मायके में एकत्रित हुई युवतियां व नवब्याता झूला झूलती हुई अपने-अपने पति, सास, ससुर, देवर, ननद के बारे में अपने संबंधों का बखान करती हैं। नवब्याहता ससुराल व मायके की तुलना करते हुए गाती है कि :-

कड़वी कचरी हे मां मेरी कचकची जी
हां जी कोए कड़वे सासड़ के बोल
बड़ा हे दुहेला हे मां मेरी सासरा री
मीठी कचरी है मां मेरी पकपकी री
हां जी कोए मीठे मायड़ के बाल
बड़ा ए सुहेला मां मेरी बाप कै जी

सावन में मनाई जाने वाली तीज पर हर बहन को सिंधारे के साथ अपने भाई के आने की प्रतीक्षा होती है। सिंधारे के रूप में हर माँ-बाप अपनी बेटी को सुहाग-बाग की चीजें, सेवीयां-जोइन्ये, अचार, घेवर, मिठाई, सासू की तील (कपड़े), बाकी सदस्यों के जोड़े भेजता है। भाई की तैयारी को देख कर उसकी पतनी पूछती है :-

झोलै मैं डिबिआ ले रह्या
हाथ्यां मैं ले रह्या रूमाल
खसमड़े रे तेरी कित की त्यारी सै
बहाण मेरी सुनपत ब्याही सै
हे री तीज्यां का बड़ा त्युहार
सिंधारा लै कै जाऊंगा

भारी बरसात में बहन के घर जाते हुए अपने बेटे की फिक्र करती हुई माँ कहती है कि भयंकर बरसात में नदी-नाले उफान पर है। तुम कैसे अपनी बहन के घर जाओगे तो बेटा जवाब देता है :-

क्यूँ कर जागा रे बेटा बाहण के देस
आगे रे नदी ए खाय
सिर पै तो धर ल्यूँ मेरी मां कोथली
छम दे सी मारूंगा छाल
मीहां नै झड़ ला दिए

उधर बहन अपने भाई की बड़ी तल्लीनता से प्रतीक्षा करती हुई कभी घर के चौखट पर आती है तो कभ

है :-

आया तीजां का त्योहार
आज मेरा बीरा आवैगा
सामण में बादल छाए
सखियां नै झुले पाए
मैं कर लूं मौज बहार
आज मेरा बीरा आवैगा

अपने मायके से भाई द्वारा लाये गये सिंधारे को बहन बड़े चाव से रिश्तेदारों व आस-पड़ौस को दिखाती और पांच को पचास-पचास बताती हुई गाती है कि :-

अगड़ पड़ोसन बूझण लागी,
के के चीजां ल्यायो जी।
भरी पिटारी मोतियां की,
जोड़े सोलां ल्यायो जी।
लाडू मेरा बाजणा,
बजार तोड़ी जाइयो जी।

बहन अपने भाई को घी-शक्कर से बने चावल परोसती है। उसके लिए खीर, माल-पुए कई तरह के पकवान तैयार करती है और खाना खिलाते खिलाते सुख-दुख भी सांझे करती हुई है :-

सासू तो बीरा चूले की आग
ननद भादों की बीजली
सौरा तो बीरा काला सा नाग
देवर सांप संपोलिया
राजा तो बीरा मेंहदी का पेड़
कदी रचै रे कदी ना रचै

जिसके कंत (पति) बाहर देस-परदेस में कमाने गए हैं उस दुल्हन के मन की व्यथा भी कोई उसके जैसी ही समझ सकती है। अपने गीत में इस व्यथा को ब्यान करती हुई वह कहती है कि -

तीजां बड़ा त्योहार सखी हे सब बदल रही बाना
हे निकली बिचली गाल जेठानी मार दिया ताना
हे जिनका पति बसें परदेस ऐसे जीने से मर जाना
हे बांदी ल्यावो कलम दवात पति पै गेरूं परवाना
लिखी सब को राम राम गोरी के घर पै आ जाना

लोकगीत हमारे जीवन के हर पक्ष से जुड़े हैं, चाहे मौका सुख का हो या दुःख का, विरह का हो या मिलन का। यह हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है जिन्हें सहेज कर रखना बहुत जरूरी है।

भारतीय वर्णमाला की संकल्पना

लीना मेहंदले

भारतीय भाषा, भारतीय लिपियाँ, जैसे शब्दप्रयोग हम कई बार सुनते हैं, सामान्य व्यवहार में भी इनका प्रयोग करते हैं। फिर भी भारतीय वर्णमाला की संकल्पना से हम प्रायः अपरिचित ही होते हैं। पाठशाला की पहली कक्षा में अक्षर परिचय के लिये जो तख्ती टाँगी होती है, उस पर वर्णमाला शब्द लिखा होता है। पहली की पाठ्यपुस्तक में भी यह शब्द होता है। लेकिन जैसे ही पहली कक्षा से हमारा संबंध छूट जाता है, तो उसके बाद यह शब्द भी विस्मृत हो जाता है। फिर हमारी वर्णमाला की संकल्पना पर चिन्तन तो बहुत दूर की बात है।

इसीलिये सर्वप्रथम वर्णमाला शब्द की संकल्पना की चर्चा आवश्यक है। भारतीय वर्णमाला सुदूर दक्षिण की सिंहली भाषा से लेकर सभी भारतीय भाषाओं के साथ-साथ तिब्बती, नेपाली, ब्रह्मदेशी, थाय भाषा, इंडोनेशिया, मलेशिया तक सभी भाषाओं की वर्णमाला है। यद्यपि उनकी लिपियाँ भिन्न दिखती हैं, लेकिन सभी के लिये एक वर्णन देवनागरी लागू है। बस, हर लिपी में आकृतियाँ अलग हैं। अतिपूर्व देश चीन, जापान व कोरिया तीनों में चीनी वर्णमाला प्रयुक्त है। तमाम मुस्लिम देशों मे फारसी-अरेबिक वर्णमाला है जबकि युरोप व अमेरीकन भाषाएँ ग्रीको-रोमन-लॅटीन वर्णमाला का उपयोग करती है जिसमें उस भाषानुरूप वर्णाक्षरों की संख्या कहीं 26 (अंग्रेजी भाषा में), तो कहीं 29 (ग्रीक के लिये) इस प्रकार कम-बेसी है।

मानव की उत्क्रांती के महत्वपूर्ण पडावों में एक वह है जब उसने बोलना सीखा और शब्द की उत्पत्ति हुई। वैसे देखा जाय तो चिरैया, कौए, गाय, बकरी, भ्रमर, मख्खी आदि प्राणी भी ध्वनि का उच्चारण करते ही है, लेकिन मानव के मन में शब्द की परिकल्पना उपजी तो उससे नादब्रह्म अर्थात् ॐकार और फिर शब्दब्रह्म का प्रकटन हुआ। आगे मनुष्य ने चित्रलिपी सीखी व गुहाओं में चित्र उकेर कर उनकी मार्फत संवाद व ज्ञान को स्थायी स्वरूप देने लगा। वहाँ से अक्षरों की परिकल्पना का उदय हुआ। अक्षर चिह्नों का निर्माण हुआ और वर्णक्रम या वर्णमाला अवतरित हुई।

भारतीय मनीषियों ने पहचाना की वर्णमाला में विज्ञान है। ध्वनि के उच्चारण में शरीर के विभिन्न अवयवों का व्यवहार होता है। इस बात को पहचानकर शरीर-विज्ञान के अनुरूप भारतीय वर्णमाला बनी और उसकी वर्गवारी भी तय हुई। सर्वप्रथम स्वर और व्यंजन इस प्रकार दो वर्ग बने। फिर दीर्घ परीक्षण और प्रयोगों के बाद व्यंजनों में कंठ वर्ग के पाँच व्यंजन, फिर तालव्य वर्ग के व्यंजन, फिर मूर्धन्य व्यंजन, फिर दंत और फिर ओष्ठ इस प्रकार वर्णमाला का एक क्रम सिद्ध हुआ। क ख ग घ ङ, इन अक्षरों को एक क्रम से उच्चारण करते हुए शरीर की ऊर्जा कम खर्च होती है, इस बात को हमारे मनीषियों ने समझा। विश्व की अन्य तीनों वर्णमालाओं का शरीर शास्त्र अथवा उच्चारण शास्त्र से कोई भी संबंध नहीं है। परंतु भारत में यह प्रयोग होते गए। व्यंजनों में महाप्राण तथा अल्पप्राण इस प्रकार और भी दो भेद हुए। इससे भी आगे चलकर यह खोज हुई कि ध्वनि के उच्चारण में मंत्र शक्ति है। तो इस मंत्र शक्ति को साधने के लिये अलग प्रकार का शोध व अध्ययन आरंभ हुआ। उच्चारण में उदात्त, अनुदात्त, स्वरित जैसी व्याख्या हुई। शरीर शास्त्र की पढ़ाई और चिंतन से कुंडलिनी, षट्चक्र, ब्रह्मरंध्र, समाधि में विश्व से एकात्मता, सर्वज्ञता इत्यादि संकल्पनाएँ बनीं। आणिमा, गरिमा, लघिमा, इत्यादी सिद्धियों की प्राप्ति हो सकती है, इस अनुभव व ज्ञान तक भारतीय मनीषी पहुँचे। भारतीय कुंडलिनी विज्ञान के अनुसार षट्चक्रों में पँखुडियाँ हैं और प्रत्येक पँखुडी पर एकेक अक्षर (स्वर अथवा व्यंजन) विराजमान है। उस उस अक्षर पर ध्यान केंद्रित करने से एकेक पँखुडी व एकेक चक्र सिद्ध किया जा सकता है। इसी कारण हमें सिखाया जाता है – अमंत्रं अक्षरम् नास्ति- जिसमें मंत्रशक्ति न हो, ऐसा कोई भी अक्षर नहीं।

इस प्रकार हमारी वर्णमाला में वैज्ञानिकता समाई हुई है, विज्ञान का विचार यहां हुआ है और यह विरासत हमारे लिए निश्चित ही अभिमान की बात है।

मुख्य मुद्दा है वर्णमाला और उससे परिभाषित राष्ट्र, जो कि श्रीलंका से कोरिया की सीमा तक पसरा हुआ है। भारत देश में हजारो वर्षों की परिपाटी के कारण वर्णमाला के विभिन्न आयाम प्रकट हुए। वह लोककलाओं का भी एक विषय बनी। वर्ण शब्द का दूसरा अर्थ है - रंगछटा। तो शरीर के अंदर षट्चक्रों में जो-जो वर्णाक्षर का स्थान है वहाँ-वहाँ उस चक्र का रंग भी वर्णित है। सारांश में हमारी वर्णमाला की उपयोगिता केवल लेखन तक मर्यादित नही अपितु जीवन के कई अन्य अंगों में इस ज्ञान के अगले आयाम प्रकट हुए हैं।

वर्णमाला के विषय में इतना प्रदीर्घ विवेचन इसलिये आवश्यक है कि नये युग में अवतरित संगणक (कम्प्यूटर) शीर्षक तंत्र ज्ञान और वर्णमाला का अन्योन्य संबंध है। यह नया तंत्र ज्ञान सर्वदूर व्यवहार में होने के कारण उसका अतिप्रभावी संख्या बल है जिसकी भेदक शक्ति भी प्रचंड है। जीवन की प्रत्येक सुविधाएँ व ज्ञान प्रसार दोनों के बाबत इस तंत्रज्ञान से कई मूलगामी परिवर्तन हुए हैं।

एक तरफ हमारी हजारों वर्षों की परंपरा का अभिमान रखने वाली और उसे विविध आयामों में प्रकट करने वाली हमारी वर्णमाला है और दूसरी ओर अगली कई सदियों पर राज करने वाला एक सशक्त तंत्र ज्ञान। अब यह भारतीयों को तय करना है कि इस नये तंत्र और पुरातन वर्णमाला का संयोग किस प्रकार हो। यदि वह सकारात्मक हुआ तो हमारी वर्णमाला अक्षुण्ण टिकी रहेगी। इतना ही नहीं वरन् इस नये तंत्र को समृद्ध भी करेगी। यदि दोनों का मेल नहीं हुआ तो इस संगणक तंत्र में वह सामर्थ्य है कि वह हमारी वर्णमाला, हमारी लिपियाँ, हमारी बोलियाँ, भाषाएँ और हमारी संस्कृति को विनष्ट कर दे। संगणक तंत्र

की इस शक्ति को हमें समझना होगा, स्वीकारना भी होगा कि यह तंत्र हमारा विनाशक भी बन सकता है और सकारात्मक ढंग से व्यवहार में लाया गया तो हमारी वर्णमाला, भाषा व संस्कृति को समृद्धि के शिखर पर भी बैठा सकता है।

इस सकारात्मक संयोग की संभावना कैसे बनती है इसे जानने के लिये थोड़ा-सा संगणक के इतिहास को समझना होगा।

बीसवीं सदी की विज्ञान प्रगति में क्ष-किरण मेडिकल शास्त्र की छलांग, अणु विच्छेदन व उससे अणु-ऊर्जा-निर्माण, खगोलीय दूरबीनें, ॲटम बम आदि कई घटनाएँ गिनाई जा सकती हैं। उनसे पहले एक मस्तिष्क युक्त यंत्र की परिकल्पना की गई। इसकी पहल थी वे सरल से गुणा-भाग करने वाला कॅलक्युलेटर्स! मुझे याद आता है कि 1967-68 में प्रयोगशालाओं में ये कॅलक्युलेटर्स रखे होते थे। हम विद्यार्थी मजाक करते थे कि इससे अधिक वेग तो हमारा गुणा-भाग हो जाता है। लेकिन हाँ तब संख्याएँ बड़ी-बड़ी होती थीं तो इनका वेग और अचूक गणित हमारे वश की बात नहीं थी। परन्तु उन्हीं दिनों यूरोप में यह संकल्पना काफी आगे निकल चुकी थी कि गणित के जोड़, घटाव, गुणा, भाग चिह्नों से परे पहुँचकर मानवी भाषा को सीख ले ऐसे यंत्र चाहिये। इसके लिये अंग्रेजी भाषा चुनी गई। संगणक तंत्र की पूरी इमारत अंग्रेजी की नींव पर रखी जाने लगी और सभी पंडितों ने पहचाना की उनकी भाषा को नामशेष करने का सामर्थ्य इस तंत्र में है। इसे पहचान कर सबसे पहले जापान ने और फिर कई यूरोपीय देशों ने तय किया कि उनका संगणक उनकी भाषा की नींव पर बनेगा।

संगणकीय व्यवहार दो प्रकार के होते हैं- परदे पर दृश्य व्यवहार जिनकी सहायता से मनुष्य उनसे संवाद कर सके और परदे के पीछे (अर्थात् प्रोसेसर के अंदर) चलने वाले व्यवहार। तो सभी प्रगत राष्ट्रों ने आग्रहपूर्वक अपनी-अपनी भाषा को ही परदे पर रखा। यूरोपीय देशों को यह सुविधा थी कि उनकी वर्णमाला के वर्णाक्षर और अंग्रेजी के अक्षरों में काफी समानता थी। इसके विपरीत जापानी भाषा नितान्त भिन्न थी। फिर भी जापानियों ने अपनी जिद निभाई। पीछे-पीछे चीन और अरेबिक-फारसी लिखने वाले देशों ने भी यही किया। पिछड़ा रहा केवल भारत व भारतीय भाषाएँ क्योंकि हमारे लिये अंग्रेजी ही महानता थी, स्वर्ग थी और हमें गर्व था कि चूँकि हमारी 20 प्रतिशत जनता अंग्रेजी जानती है (इसकी तुलना में 1990 में केवल 3 प्रतिशत चीनी जनता अंग्रेजी जानती थी) तो इसी आधार पर हम पूरी दुनिया का संगणक-बिजनेस अपनी मुट्ठी में कर लेंगे। इस सोच के कारण आज हम किस प्रकार चीन से पिछड़ रहे हैं, इसकी चर्चा थोड़ा रुककर करते हैं।

गलत सोच का एक घाटा परदे के पीछे के व्यवहारों में भी हुआ। इसे समझते हैं। संगणक के मूलगामी व्यवहार के लिये उसे केवल दो बातें समझ में आती हैं- हाँ और ना। अर्थात् उसके विशिष्ट सर्किट में बिजली प्रवाह है या नहीं है। लेकिन कई दशकों पहले मोर्स ने जब मोर्स कोड बनाया था तो उसके पास भी दो ही मूल नाद थे- लम्बी ध्वनि डा और छोटी ध्वनि डिड्। ऐसे दो, चार, पाँच या छह नादों को अलग क्रम से एकत्रित करने से अंग्रेजी के एक-एक वर्णाक्षर को सूचित किया जा सकता था। मसलन च् के लिये डिड्-डिड्-डिड् या ? के लिये डिड्-डा। इसी तरह हाँ-ना के आठ संकेतों से अलग-अलग संकेत श्रृंखलाएँ बनाकर उनसे अंग्रेजी अक्षर सूचित हों इस प्रकार से एक सारणी बनाई गई। तो की-बोर्ड पर ? की कुंजी दबाने से ? की संकेत-श्रृंखला के अनुरूप संगणकीय प्रोसेसर के आठ सर्किटों में विद्युत-धारा या तो बहेगी या नहीं बहेगी। उसे देखकर प्रोसेसर उसे पढ़ेगा कि यह श्रृंखला मुझे ? कह रही है। फिर प्रोसेसर के द्वारा प्रिंटर को आदेश दिया जायेगा कि ? प्रिंट करना है।

इस प्रकार की-बोर्ड पर प्रत्येक अक्षर की कुंजी का स्थान, उससे उत्पन्न होने वाली संकेत-श्रृंखला और उसे प्रिंट करने पर दिखने वाला वही अक्षर ये बातें तो आरंभिक काल में ही तय हो गई थीं। गड़बड़ ये रही कि यदि संगणक को यह मानवी संदेश अपनी हार्ड-डिस्क में स्टोअर कर रखना हो तो क्या होगा?

तब आवश्यकता हुई प्रोग्रामर की। उसे एक अलग मॅपिंग-चार्ट बनाना था कि हार्ड-डिस्क में इन अक्षरों को कहाँ रखा जायेगा। आरंभिक काल में हर संस्था का प्रोग्रामर अपना-अपना चार्ट बनाता था। तो एक संगणक पर स्टोअर किया गया संदेश दूसरे संगणक पर नहीं पढ़ा जा सकता था। फिर सबने इकट्ठे बैठकर तय किया कि इसे भी स्टॅण्डर्डाइज किया जायेगा ताकि दुनिया के किसी भी संगणक पर स्टोअर किया गया संदेश दूसरे किसी भी संगणक पर पढ़ा जा सके।

1990 तक ऐसा स्टॅण्डर्डायजेशन दुनिया की हर भाषा के वर्णाक्षरों के लिये सर्वमान्य हो गया - सिवाय भारतीय भाषाओं के। क्योंकि हमारे सॉफ्टवेयर बनाने वाले प्रोग्रामर अपना कोडिंग गुप्त रखकर पैसा बटोरना चाहते हैं और इनकी जमात में सबसे आगे हैं सरकारी सॉफ्टवेयर कंपनी सी-डॅक के कर्ता-धर्ता। यह परिस्थिति आज भी बरकरार है और शायद आगे कई वर्षों तक चले।

लेकिन इस कथाक्रम में एक टिविस्ट आया 1988-1991 के काल में। उसी सरकारी सी-डॅक के एक वैज्ञानिक गुट ने भारतीय वर्णमाला के अनुक्रम का अनुसरण करने वाला की-बोर्ड बनाया। उससे लिखे जाने वाले अक्षर हार्ड-डिस्क में स्टोअर करने के लिये एक बेहद सरल तरीके वाला कोड तैयार किया और 1991 में इसे ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टॅण्डर्ड्स के ऑफिस में इनस्क्रिप्ट नाम से रजिस्टर करवा लिया। इसका अर्थ हुआ कि इस की-बोर्ड और इस कोड का कोई कॉपीराइट नहीं रहेगा। इसका उपयोग कोई भी कर सकता है और अगले बड़े-बड़े सॉफ्टवेयर भी लिखे जा सकते हैं।

लेकिन सी-डॅक के बाकी लोगों को यह बात रास नहीं आई। की-बोर्ड का डिजाइन तो गुप्त नहीं रखा जा सकता। लेकिन स्टोरेज कोड को बदला जा सकता है सो बदला गया और उसे मार्केट में भारी दाम पर बेचने के लिये उतारा गया। नतीजा यह रहा कि जो भारतीय भाषाई सॉफ्टवेयर 1991 में करीब 2 हजार रुपयों में बेचा जा सकता था उसे

कोल्ड स्टोरेज में रखकर नये स्टोरेज कोड के साथ बाजार में उतारा गया जिसकी कीमत 14 हजार थी। बाकी कंपनियों के भी सीक्रेट कोड थे और उनके भाषाई सॉफ्टवेयर भी इसी दाम पर थे। जैसे 'श्री' या 'कृतिदेव'। उनकी मार्केटिंग और ऑफ्टर सेल सर्विस भी अच्छे थे सो सी-डॅक को टिकना भारी पड़ने लगा। फिर सरकार ने आदेश निकालकर सभी सरकारी कार्यालयों में केवल सी-डॅक का सॉफ्टवेयर 'इजम' ही खरीदा जाने की व्यवस्था की। साथ ही सी-डॅक ने उस गुट के वैज्ञानिकों को बाहर कर दिया जो मेरी समझ से कम से कम पद्मश्री के हकदार थे। खैर!

सभी भारतीय भाषाई सॉफ्टवेयरों के की-बोर्ड का डिजाइन वही था जो रेमिंग्टन टाइप राइटरों का था। तर्क यह था कि जो हजारों टाइपिस्ट काम कर रहे हैं उनकी सुविधा हो। कुछ कंपनियों ने भारतीय वर्णमाला को ही धता बताते हुये अंग्रेजी स्पेलिंग से लिखने वाले सॉफ्टवेयर बनाये जैसे- बरहा। सी-डॅक का सॉफ्टवेयर ये दोनों सुविधाएँ दे रहा था- पर एक तीसरा ऑप्शन भी दे रहा था वर्णमाला अनुसारी की-बोर्ड का जिसमें अआईईउऊ एऐओऔ एक क्रम से थे। इसी प्रकार कखगघङ पास-पास। चछजझञ पास-पास। टठडढण, तथदधन, पफबभम भी पास-पास। इसलिये नये सीखने वालों के लिये यह निहायत आसान था। इसके अक्षर-क्रम को समझने के लिये दस मिनट पर्याप्त हैं और स्पीड के लिये पंद्रह से बीस दिन। फिर भी यह की-बोर्ड लोगों तक नहीं पहुँच पाया। क्योंकि सामान्य ग्राहक के लिये पूरे सॉफ्टवेयर की कीमत बहुत अधिक थी। सरकारी कार्यालयों के पुराने टाइपिस्टों के लिये टाइपराइटर वाला ऑप्शन था और वरिष्ठ अधिकारियों के लिये अंग्रेजी स्पेलिंग से हिन्दी लिखने का। फिर भी जिन अत्यल्प प्रतिशत लोगों ने यह वर्णमाला-अनुसारी इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड सीखा उन्हें इससे प्रेम हो गया। इसमें एक खूबी और थी। हिन्दी में एक परिच्छेद लिखकर केवल सिलेक्ट ऑल और चैज टू मलयाली कह देने से सारी लिखावट मलयाली या किसी भी अन्य भारतीय लिपि में बदल सकती थी।

1991 से 1998 तक भारतीय भाषाओं के अलग-अलग कंपनियों के अन-स्टण्डर्डाइज्ड सॉफ्टवेयरों के चलते भारतीय भाषाओं का संगणक लेखन बिखरा रहा, जहाँ एक सॉफ्टवेयर से लिखा लेखन दूसरे के द्वारा नहीं पढ़ा जा सकता था। इस बीच 1995 में इंटरनेट का प्रवेश हुआ और दुनिया में संगणक के जरिये संदेश-आवागमन आरंभ हुआ। लेकिन नॉन स्टॅण्डर्डाइजेशन के कारण इस इंटरनेट रिवोल्यूशन पर सारा भारतीय लेखन फेल रहा।

एक रिवोल्यूशन और आया जिसका नाम था युनीकोड। संगणकों के चिप्स में हर वर्ष सुधार होते गये जिससे उनकी स्पीड बढ़ी, क्षमता बढ़ी और वे कॉम्प्लेक्स वर्णमाला के लायक बनते गये। संसार की चार वर्णमालाओं में तीन कॉम्प्लेक्स हैं- भारतीय, चीनी और अरेबिक। फिर भी भारतीय वैज्ञानिकों ने कम क्षमता वाले पुराने संगणकों पर भी अपनी वर्णमाला को ॲडजस्ट कर लिया था। इसलिये रोमन वर्णमाला की भाषाओं की तुलना में कम ही सही पर कंप्यूटर पर भारतीय भाषाओं का चलन बढ़ रहा था। लेकिन सॉफ्टवेयरों की आपसी नॉन-कम्पटेबिलिटी उनकी प्रगति को पीछे खींच रही थी। अरेबिक या चीनी वर्णमालाएँ कम स्टोरेज वाले संगणकों पर नहीं आ सकती थीं। जैसे ही स्टोअरेज क्षमता बढ़ी, जैसे ही मेगा-बाइट वाले हार्ड डिस्क की जगह गेगा बाइट और टेरा बाइट वाले हार्ड डिस्क आये तो अरेबिक और चीनी भाषाई सॉफ्टवेयर भी उन पर समाने लगे। इस पूरे बढ़े हुये व्यवहार के लिये पुराने स्टोरेज-स्टॅण्डर्ड को बदलकर यूनीकोड नामक नया स्टॅण्डर्ड दुनिया ने अपनाया जो इंटरनेट व्यवहारों को भी समाहित कर सके। इस स्टॅण्डर्ड को तय करने वाली जो विश्वभर के संगणक-तंत्रज्ञों की कमेटी बनी वे किसी नॉन-स्टॅण्डर्ड सॉफ्टवेयर को नहीं अपना सकते थे। चीनी और अरेबिक सॉफ्टवेयर प्रोग्रामर्स तो अपनी-अपनी वर्णमाला के लिये एक स्टॅण्डर्ड लागू करने के लिये तैयार हुये। उन्होंने अपने-अपने देश में उस तरह का कानून लाकर उन-उन भाषाओं के संगणकीकरण की पद्धति को स्टॅण्डर्ड कर दिया। लेकिन भारतीय भाषाओं के सॉफ्टवेयर डेवलपर्स अब भी एकवाक्यता के लिये तैयार नहीं थे। सी-डॅक भी नहीं।

ऐसे में भारत देश में सौभाग्य से यूनीकोड कमेटी को एक उपाय मिल गया। वर्षों पुराना ब्यूरो ऑफ इंडियन स्टॅण्डर्ड्स (एक्ष्च) द्वारा मान्य किया जा चुका इनस्क्रिप्ट का स्टॅण्डर्ड यूनीकोड ने स्वीकार कर लिया। इस प्रकार एक प्रश्न हल हुआ। लेकिन मायक्रोसॉफ्ट कंपनी ने इस स्टॅण्डर्ड के सॉफ्टवेयर को अपनी सिस्टम में लेने से इंकार कर दिया।

ज्ञातव्य है कि यह इंकार की भाषा वे ना तो किसी चीनी वर्णमाला की भाषाओं के लिये कर सके (अर्थात् चीनी, जापानी व कोरियाई) और न अरेबिक वर्णमाला की भाषाओं के लिये। लेकिन भारतीयों की आपसी फूट और लालच के कारण वे भारत में यह सीनाजोरी करने लग गये थे।

लेकिन इस देश का एक आंशिक सौभाग्य और रहा। मायक्रोसॉफ्ट को टक्कर देने के लिये बनी एक नई ऑपरेटिंग सिस्टम लीनक्स के कर्ताधर्ताओं ने घोषणा कर दी कि वे भारतीय भाषाओं के लिये एक्ष्च् तथा यूनीकोड द्वारा स्वीकृत स्टॅण्डर्ड को अपनायेंगे। ज्ञातव्य है कि लीनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम फ्री डाउनलोड वाली सिस्टम है। इस कारण 1998 से 2002 तक यह नजारा रहा कि जिसने लीनक्स को अपनाया उसके भाषाई लेखन इंटरनेट पर टिकने लगे। अतः सर्च इंजिनों में खोजने लायक हुये। जिसने इसे नहीं अपनाया उन्हें अपना भाषाई लेखन इंटरनेट पर डालने के लिये पीडीएफ या जीपेग अर्थात् चित्र बनाकर ही डालना पड़ता था। वह लेखन गूगल सर्च में पकड़ में नहीं आता है।

हालांकि लीनक्स ऑपरेटिंग सिस्टम अधिक प्रगत होने के कारण सामान्य उपयोगकर्ता के लिये काफी भारी पड़ती थी, फिर भी भाषाई लेखन को इंटरनेट पर रखने के लिये लोग उसे अपनाने लगे। अब मायक्रोसॉफ्ट को लगा कि उनका इंडियन मार्केट हाथ से जा सकता है। तब उस कम्पनी ने भी उन्हीं भारतीय भाषा तंत्रज्ञों की सहायता से अपना एक प्रोपायटरी सॉफ्टवेयर बनाया ग-386 जो हर भारतीय भाषा के लिये

एक-एक फॉण्ट के साथ इंटरनेट व यूनीकोड कॅम्पटिबल भाषा-लेखन की सुविधा देता है। इसके लिये वर्णमाला अनुसारी अर्थात् सी-डॅक के उन वैज्ञानिकों का बनाया इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड सीखना पड़ता है जो कि बहुत सरल है। इस प्रगति को मैंने आंशिक सौभाग्य कहा है। क्योंकि यूनीकोड ने एक दुर्भाग्यपूर्ण फैसला लिया। हर भारतीय भाषा को अलग कम्पार्टमेंट में रखा। अर्थात् इनस्क्रिप्ट विधि से लेखन करने पर भी पहले की तरह हिन्दी लेखन को केवल कन्वर्ट टू बंगाली कहने से यह बंगला लिपि में नहीं लिखा जायेगा। उसे फिर से बंगला में लिखना पड़ेगा। इस प्रकार भाषाई एकात्मता की धज्जियाँ उड़ गईं। इसका बडा दुष्परिणाम गीता-प्रेस जैसी बहुभाषाई संस्थाओंको होता है।

यहाँ भी ज्ञातव्य है कि हालांकि चीनी वर्णमाला आधारित जापानी, चीनी और कोरियाई लिपियाँ अलग हैं लेकिन उन्होंने एकजुट होकर यूनीकोड पर दबाव बनाया कि उन्हें एक कम्पार्टमेंट में रखा जाये ताकि लिप्यंतरण संभव हो। लेकिन यह सुविधा भारतीय भाषाओं को उपलब्ध नहीं है। यूनीकोड कन्सोशिऱ्यम का कहना है कि यह अलगाव उन्होंने सी-डॅक के कहने पर तथा भारत सरकार की मान्यता से किया है।

इस पूरे घटनाक्रम फलस्वरूप आज भी पूरे देश में इनस्क्रिप्ट का उपयोग करने वालों का प्रतिशत 10-15 से अधिक नहीं है। इसका सबसे बड़ा दुष्परिणाम उन्हें भुगतना पड़ रहा है जिन्हें 10वीं कक्षा से पहले स्कूल छोड़ना पड़ा और ऐसे बच्चे 70 प्रतिशत के लगभग है। उन्हें यदि इनस्क्रिप्ट की-बोर्ड की सहायता से इंटरनेट टिकाऊ लेखन कला सिखाई जाये तो यह उनके लिये रोजगार जुटाने का, साथ ही अपना ज्ञानवर्द्धन करने का साधन बन सकता है।

दुष्परिणाम भुगतने वाला दूसरा बड़ा वर्ग है प्रकाशन संस्थाओं का। उन्हें अलग-अलग फॉण्ट का उपयोग अनिवार्य है। सी-डॅक का इजम सॉफ्टवेयर या श्री या कृतिदेव। इन सभी कंपनियों के पास सुंदर-सुंदर और कई तरह के फॉण्ट सेट हैं। लेकिन वे इंटरनेट टिकाऊ नहीं हैं। उन्हें ना लें तो प्रकाशन का काम सुपाठ्य नहीं रहेगा। उन्हें लेकर काम करें तो इंटरनेट पर तत्काल भेज पाने की सुविधा से वंचित हो जाते हैं और स्पीड में मार खाते हैं। दुनिया के अन्य प्रकाशकों की तुलना में हमारे प्रकाशन में पाँच से सात गुना अधिक समय और श्रम खर्च होता है। क्योंकि हम एडिटेबल फाइलें नहीं भेज सकते हैं, लेकिन उन प्रोप्रयटेरी फॉण्ट्स को पब्लिक डोमेन में डाला जाय तो प्रकाशन की कठिनाइयाँ दूर हो जायेंगी।

मनुष्य के विकास में शब्दों को बोलना और भाषा को लिपिबद्ध करना ये दो महत्वपूर्ण पड़ाव रहे हैं। दोनों में भारत ही अग्रसर था और इसी कारण सोने की चिड़िया बना और हजारों वर्ष विश्व-गुरु रहा। आज उतना ही प्रभावी संगणक तंत्र उदित हुआ है। क्या हम उसका उपयोग कर अपनी वर्णमाला, अपनी लिप्यंतरण की सुविधा, अपनी भाषाई व सांस्कृतिक विरासत इत्यादि बचा लेंगे या उसी के हाथों इन्हें नष्ट कर देंगे - यह फैसला हमें करना है। इसी कारण रोमन का आधार छोड़कर अपनी वर्णमाला के आधार से बनी इनस्क्रिप्ट पद्धति का उपयोग करने में ही हमारी भलाई है ।

मानवता ही धर्म हमारा

रमेश कुमार सिंह 'रुद्र'

धर्म-अधर्म चिल्लाते क्यों सब ये प्रथा पुरानी।
स्वार्थवश सृजन हुआ था, है ये कथा कहानी।
क्यों पचड़े में पड़ने जायें, किसके साथ लड़ेंगे
मानवता ही धर्म हमारा, हम यही बात करेंगे।

मानव ही मानवता को अब शर्मसार कर जाता
दुनियां को समझाऊँ कैसे,मैं समझ नहीं पाता
द्वेष-दम्भ लोभ-मोह छल-कपट पास में रखता
सनन्मार्ग दिखलाओ जन,नही किसी से पचता।

जाति धर्म का लिए सहारा लोग यहां चलते हैं।
आपस में तकरार कर सभी लोग यहां लड़ते हैं
भ्रष्ट-पथ बन चला चहूँ ओर भ्रमित कर डाला।
भ्रमित पथिक भ्रम टूटा तो सामने आया काला।

भ्रष्टयुक्त जब हो चला यहां गरीबों का रखवाला
शोषित हुआ भूखा पेट ओर छीन लिया निवाला।
दर्द भरे सड़क किनारे आवास को मजबूर हुए
पेट की अगिन बुझी नहीं तो बच्चे सब मजदूर हुए।

चाट रहे हैं जुठे पत्तल ऐसे मानव को देखा हूँ
मानवीय मूल्यों को नोचते दानव को देखा हूँ।
निस्सहाय अबला के उपर,जुल्म करते देखा हूँ
मरें हुए मानव के उपर भी,मन को भरते देखा हूँ।

इसका कारण कौन यहाँ है कौन बना भ्रष्टाचारी
कौन लूटा सूख-चैन यहाँ लूट लिया ईमानदारी
कर दिया खोखला देश में पड़े सभी मानव को
सत्ता लोभी कारण है सब फैल रहे सत्ताधारी।

मानव ही करता सब कुछ और नही है कोई
अपने आप में सब ईश्वर उसे जगाओ हर कोई
बुद्ध की वाणी अब फैलाओ नहीं करें अनदेखा।
मानव है एक यहाँ पर,यही बताये सब कोई।

चीन में दिखाया काली माता ने अपना चमत्कार चीन के सभी लोग माँ काली के भक्त हो गए !

वैसे तो आपने बहुत से चमत्कारिक मंदिरो के बारे में सुना होगा और वो सकता है आपने उसे देखा भी हो परंतु आज हम आपको ऐसे मंदिर के बारे में बताने जा रहे है। जिसे जानकर आपको शायद यकीन न हो। चीन में काली माता के चमत्कार को देखकर लोग चकित रह

जाते है। वैसे तो आपने भगवान् का कई प्रकार की मिठाइ्या और फल से भोग लगते हुए देखा होगा लेकिन चीन के लोग काली माँ के लिए चाउमिन का भोग लगते है !

आपको यकीन नही हो रहा होगा लेकिन ये सच है जी हां यहाँ देवी माँ के लिए चाउमिन का भोग ही लगाया जाता। ये मंदिर कोलकाता में टंगरा में स्थित है। इस मंदिर में चाउमिन का भोग लगाया जाता है। फिर इसी प्रसाद को भक्तो में बाट दिया जाता है। इस कारण इस मंदिर का नाम चाउमिन काली माँ पड़ गया है। यह मंदिर कई सौ साल पुराना है पिछले 55 सालो से इसोन चेन इस मंदिर की देख भाल कर रहे है ! इस मंदिर के पीछे भी एक चीनी बच्चे की कहानी जुडी हुई है ये कहानी कई साल पुरानी है। दरअसल एक बार चीन में बीमारी के चलते सब लोग परेशान हो रहे थे डॉक्टर भी इस बीमारी का इलाज नही कर पा रहे थे। तब सभी लोग देवी माँ के शरण में आ गए और उनसे प्रार्थना करने लगे। यहाँ सात दिनों तक पूजा आराधना करने पर माँ ने इनकी पुकार सुन ली। उसी समय सारे बच्चे इस बीमारी से मुक्त हो गए। तब से ही इस मंदिर की काफी मान्यता बढ़ी है। दूर दूर से लोग इस मंदिर के दर्शन करने के लिए आते है !

इस मंदिर में देवी माँ की मूर्ति के सामने चाइनीज अगरबत्तियां और केंडल जलाई जाती है। चीनी लोगो के दिल में इस मंदिर के प्रति बहुत गहरी आस्था है। वह देवी की सच्चे मन से पूजा करते है इस मंदिर में चाउमिन का भोग लगाया जता है। 60 साल पुराने इस मंदिर में पूजा के दौरान कई लोग माँ के दर्शन के लिए आते है। इस मंदिर में माँ की पूजा अर्चना हिन्दू धर्म के अनुसार ही होती है।

भारत और चीन की सभ्यता में ये मंदिर मेल का प्रतीक है क्योंकि, इस मंदिर में काली माँ की पूजा हिन्दू धर्म के अनुसार ही होती है लेकिन इस मंदिर में माँ का भोग कुछ अलग तरीके से लगाया जाता है अपने देखा होगा की, भारत में माँ के मंदिर में लोग कई तरह के फलों और मिठाई का भोग लगाते है। लेकिन चीन में लोग माता के इस मंदिर में चाउमिन का भोग लगते है।

जब भी करता हूँ इक़रार

भरत मल्होत्रा

जब भी करता हूँ इक़रार
अपनी चाहत का उससे
सब जानकर भी बनते हुए अंजान
अल्हड़पन से खिलखिलाती
पूछने लगती है व्याख्या एहसासों की
बिल्कुल पगली सी है
कैसे समझाऊं उसे
एहसास व्याख्यायित करने के लिए नहीं होते
होते हैं खुशबू की तरह जो नज़र नहीं आते
रंग होते हैं जो छुए नहीं जाते
बस महसूस किए जाते हैं रूह से
आज फिर उसकी ज़िद
कि बताऊँ उसके ख़ातिर तड़प अपनी
एहसास से परे शब्दों में मुखर
उसे कैसे जताऊं
कि मेरी लत बन गई है वो
हर पल ऐसे ही तड़पता हूँ उसके लिए
जैसे डूबता हुआ कोई
तड़पता है किनारे के लिए
मरता हुआ कोई जैसे तड़पता है एक साँस के लिए
ठीक वैसे ही जैसे
कान्हा की बंसी सुनकर तड़पती थीं ब्रज की गोपियाँ सारी
जैसे लैला-मजनू, हीर-रांझा, सोहनी-महिवाल तड़पते थे एक दूजे के लिए
मछली तड़पती है जैसे पानी से बिछड़ कर
जैसे कोई सदियों का भूखा तड़पता है रोटी के लिए
सहरा में गुम हुआ कोई प्यासा
तड़पता है जैसे एक बूंद के लिए
जैसे कोई भटका हुआ राही तड़पता है मंजिल के लिए
जैसे कोई ड्रग एडिक्ट तड़पता है ड्रग के लिए
कुछ इसी तरह तड़पता हूँ मैं उसके लिए ...

क्या वर्गीकृत भारत, एक सच्चाई है?

बेनी प्रसाद राठौर

भारत की विशालता एक समय में कितनी रही होगी और उस विशालता में समाहित हुआ भूगोल और भूगोल के साथ उससे जुड़ा सम्पूर्ण इतिहास, कितना और कैसा रहा होगा, इसका परिमाप सबके पास अलग-अलग है । मगर मैं इतना सा जानता हुँ की उस विशाल भारत में मेरा न तो कोई भूगोल था और न हीं कोई इतिहास । 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के नारे ने आज जितनी सुर्खि़याँ बटोरी है, क्या उस समय का विशाल भारत उसकी विशालता पर इतराकर ऐसे ही दम्भ भरता होगा, जैसे आज भरा जा रहा है अथवा उसे उसकी विशालता में वैसी ही लघुता का अहसास होता होगा जैसा आज मुझे तथाकथित 'श्रेष्ठ' भारत में अपने अस्तित्व का होता है । कई बार मैं समझ नहीं पाता, दिखावा उस समय था या दिखावा वर्तमान में है। मैं समझना चाहता हुँ कि उस भारत की विशालता के परिमाप क्या थे ? उस विशालता का आंकलन भौगोलिक था, ऐतिहासिक था अथवा सामाजिक या फिर आर्थिक ? और इन्हीं परिमापों से फिर मैं अपनी लघुता का परिमापन करूँगा कि मेरी लघुता, जो निरपेक्ष नहीं है, मेरे समकक्षों से भी लघु क्यों हैं?

मैं जब-जब 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के नारे को सुनता हुँ, तब-तब मन अपने-आप में कचोटता है कि क्या भारत वास्तव में 'एक' है और क्या यह 'श्रेष्ठ' भी है? जीवन में अब तक जितने भी अनुभव हुए, अध्ययन से प्राप्त विश्लेषण हुआ , उनमें कहीं न कहीं हो सकता है 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' का अर्थ मालूम न हुआ हो किन्तु इस विश्लेषण ने कम से कम 'एक' का अर्थ और 'श्रेष्ठ' होने के परिमापों से तो ज़रूर परिचित करा ही दिया है। इस परिचय ने अंदर ही अंदर यह महसूस करा दिया कि दिखावा, छलावा, दंभ, झूठी शान और अनगिनत भेद्भावाओं के साथ टुकड़ों में बँटे विशालकाय समुदाय को भी 'एक' का नारा देकर किस तरह बरगलाया जाता है और किस तरह विभिनन वर्गों में व्याप्त वर्ग विभेद के होने वाले अहसास को आर्थिक एवं राजनीतिक रूप से सशक्त वर्गों एवं समुदायों द्वारा छिनन-भिनन कर दिया जाता है।

आज वर्गीकृत भारत इतने टुकड़ों में बँट चुका है, जिनको जोड़ पाना अब नामुमकिन ही है। ये टुकड़े सामाजिक, आर्थिक अथवा राजनीतिक हों या फिर मानव समुदायों में फैलाये गए ऊँच-नीच के ज़हर से उत्पनन हुए हों किन्तु अब भारत में मेरे लिए उस स्थिति का अनुमान लगा पाना असंभव ही है, जिसमें इन टुकड़ों को जोड़कर विभेद रेखा को अदृश्य करते हुए 'एक' भारत का निर्माण किया जा सके। तब यह प्रशन उठना लाज़मी ही है कि क्या भारत को अब आगे भी इसी तरह वर्गीकृत होकर रहना पड़ेगा अथवा ये प्रत्येक वर्ग अपने-आप को स्वतन्त्र और सम्माजनक स्थिति में देखने के लिए 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' जैसे नारों को दरकिनार करके अस्तित्व एवं अधिकारों के शीत संघर्ष को ग्रीष्म रूप देंगे।

सदियों से मौन बैठा समुदाय अत्याचारों में जकड़े हुए अब और इंतज़ार नहीं कर सकता । आख़िर कब तक एक शांत संघर्ष के दिखावे में पड़े रहकर परिणामों की बाट जोहते रहेंगे । जिस समाज ने प्रत्येक व्यक्ति को एक वर्ग में तब्दील कर दिया हो एवं अधिकारों और समता पर सदियों से जड़े तालों को तोड़ने पर रोक लगा रखी हो, उस समाज को स्वयं की श्रेष्ठता का दंभ भरने का कोई हक़ नहीं है । क्या अब ये मान लिया जाए की तथाकथित लचीला भारतीय समाज अपने-आप को बदल पाने में असमर्थ हो चुका है और यदि ऐसा है तो 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' जैसे नारे अपने आप में अप्रासंगिक हो जाते हैं। जो सिर्फ़ और सिर्फ़ समाज की अक्षम्य ख़ामियों को छिपाने हेतु परदों के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं।

आख़िर अब भी ऐसी स्थितियाँ क्यों हैं की हम भारतीय समाज में व्याप्त टुकड़ों की सच्चाई को खुलकर स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। क्या इस सच्चाई को उजागर न कर पाने के पीछे कुछ ख़ास समुदायों का रणनीतिक दबाव है अथवा शोषित वर्ग की आवाज़ में अभी भी वह तीव्रता पैदा नहीं हुई जो परिवर्तन को समाज के केंद्र बिंदु तक लाने में सक्षम हो सके और यदि हम सच्चाई को स्वीकार कर चुके है तो अब इंतज़ार करने का कोई ठोस कारण नहीं रह जाता।

न जाने कितनी पीढ़ियाँ इस अमानवीय भेदभाव के ज़हर को पीते हुए दम तोड़ चुकी हैं किन्तु अब आने वाली एक भी पीढ़ी इस बात के लिए क़तई तैयार नहीं होगी की वो भी अपने जीवन को अपने पूर्वजों की तरह इस दमघोंटू समाज में घुँट-घुँट कर मरने के लिए छोड़ दे। अब वर्तमान और आने वाली पीढ़ी अपने जीवन काल में परिवर्तन की प्रक्रिया में शामिल होने के साथ ही प्रत्यक्ष परिणाम भी देखना चाहेंगी, जिससे कम पर न तो किसी से समझौता किया जा सकता है और न हीं 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' जैसे झूठे नारों से मोहित होकर इंतज़ार की बेड़ियों में जकड़ा रहा जा सकता है। परिवर्तन 'वांछित' सदैव से था किन्तु इस पीढ़ी में 'अनिवार्य' है । उसके लिए संघर्ष का स्वरूप चाहे किसी भी प्रकार का हो, स्वीकार्य होगा।

-श्रीमती मनीषा नेमा

ज्वलंत समस्या का ज्वलंत प्रश्न

मुझे यकीन है आज हर माता-पिता अपने बच्चों के विद्रोही स्वभाव को लेकर परेशान हैं, और उनके भविष्य को लेकर चिंतित भी..निश्चित तौर पर सभी ने कभी न कभी आत्ममंथन भी किया होगा, कि ऐसा क्यों है?

जो मूल बात और कारण मुझे समझ में आया वो है..न्यूक्लियर फैमली या एकल परिवार.

चलिए एक पिक्चर की तरह इसे महसूस करते हैं।

हम खुद तो सयुंक्त परिवार से आए है, और संयुक्त न भी हो तो हमारा छोटा सा शहर, आस-पास के लोग सब अपने से होते थे..हम पर नज़र रखने 10-12 आँखें तो होती ही थी. टोकाटाकी हमें भी पसंद नहीं थी अपनी बढ़ती उम्र में, और किसी को भी पसंद नहीं होती. अगर माता-पिता डांट दें तो कोई दूसरा प्यार से हमें मना लेता था. संरक्षण, स्वतंत्रता, बंधन, निगरानी कभी भी साफतौर पर सामने नहीं आता था. आँखों का गुस्सा, प्यार, भौहों की सिकुड़न, बिना शब्दों के ही सब कुछ समझा जाती था क्योंकि इन्हीं इशारों को देख-देख हम बड़े हुए थे.

अब आप न्यूक्लियर फैमली को ले लें।.वही चार आँखें।बोलती, डांटती, पीछा करती, समझाती।।आखिर बोरियत तो होगी ही, और बोरियत से झुंझलाहट, चिडचिडापन।।

हम संयुक्त से निकल कर एकल में आ गए पर आपने कभी सोचा है कि हम जिस संरक्षण में पले है उसका भाव हमारे अचेतन में बसा हुआ है. अगर उसे डर कह दें तो भी कुछ गलत नहीं. एकल परिवार में दो लोग दस लोगों की जिम्मेदारी उठाते है. इसी डर और भाव वश हम बच्चों से प्रशन करते हैं. दिन रात प्रवचन देते हैं, टोकाटोकी भी ये ही भाव करवाते है।.

अब ज़रा एक परिदृश्य देखिये।।..

बच्चा देर से घर लौटता है-

'कहाँ गए थे बता कर नहीं गए??'- भाव 'कुछ प्रॉब्लम हो गई तो कहाँ ढूँढने जाएंगे इतने बड़े शहर में'

'किसके साथ गए थे??'- 'कितने सारे दोस्त बन गए हैं स्कूल, कॉलेज में, क्या पता कौन सा दोस्त कैसा है??'

'क्या खा कर आ गए'- 'कितना कंटामिनेशन है बीमार हो गए तो स्कूल, कोचिंग, डांस क्लास, स्पोर्ट क्लास कौन जाएगा??'

'और अब ये खतरनाक डिवाइसेज़..मोबाइल, टीवी, होम थिएटर आदि आदि- इनने तो बर्बाद ही कर दिया है, आँख पर असर, ब्रेन पर असर, रेस्टलेसनेस।।. और फिर चिड़-चिड़, न खेलते हैं, न दो घड़ी धूप में जाते हैं जो बहुत ज़रूरी है. और हम तो धूप में खेल-खेल कर बड़े हुए है।' अब ये सारे डर हमें और बेचैन कर देते हैं. हम और सवाल करते जाते हैं समझाते जाते है. और बच्चे अनावश्यक टोकाटोकी से विद्रोही होते जाते हैं. पर बच्चे समझ नहीं सकते क्योंकि वे इसी युग में पैदा हुए है.

और एक डर तो मैंने अभी बताया ही नहीं।।.'अब हम चिर कर चार तो नहीं हो सकते न।दोनों में से कोई एक भी हर समय, हर जगह तो बच्चों के साथ रह नहीं सकता तो अकेले बच्चे घर पर हों तो गैस, गीज़र, चाबी, आदि आदि का डर' ।..बार-बार फोन करना, बाहर जाएं तो सही गलत की पहचान पर प्रवचन आवश्यक हो जाता है.

हमारा भूतकाल था हमारा संयुक्त परिवार, वर्तमान है न्यूक्लियर फैमिली पर भविष्य को माइक्रो न्यूक्लियर नहीं बनने देना है.

तो फिर क्या करें?

थोड़ा सा नया ज़माना आप भी अपनाएं, बच्चों के दोस्त बन जाएँ, अपने आप को समझाएं, अपने डर पर काबू पाएं, और ये जो विष बच्चों में भर रहा है उसका काट समय-समय पर पिलाते जाएं अर्थात् धर्म, सत्संग से अच्छी किताबों से, सकारात्मक विचारों से उन्हें जोड़ें, और इसके लिए ज़रूरी सारे साम, दाम, दंड, भेद अपनाएं और अपने क्रिया-कलापों को भी उसी दिशा में ले जाएं. हमें भी बाद में ही समझ में आया था कि हमारे माता-पिता की शख्ती हमारी भलाई के लिए थी, उन्हें भी समझ में आएगा.

यकीनन हमारे माता-पिता ने या हमारी पहले की पीढी ने हमें स्वयं से ज्यादा शिक्षित बनाया था, अगर हम समझदारी नहीं दिखा सकते तो क्या फ़ायदा इस उच्च शिक्षा का.

और ये जो दौर है वर्तमान का दौर है, भविष्य में वक्त के साथ और तेजी से बदलाव होने वाले है, हमें उनके साथ भी तो एडजेस्ट करना है।

देवेन्द्र सोनी

पुस्तक पर प्रतिक्रिया/ समीक्षा

कोमलता से चुभन का यथार्थ एहसास कराती हैं शैलेन्द्र की कविताए

पुस्तक समीक्षा - सच , समय और साक्ष्य
शिवना प्रकाशन , सीहोर ।
मूल्य - 175

बैंक प्रबंधक के पद पर रह कर वित्तीय आंकड़ों में उलझते- सुलझते सेवानिवृत हुए प्रेम और मानवीय संवेदनाओं के कुशल चितेरे कवि, लेखक और विचारक शैलेन्द्र शरण ने अतिव्यस्तता के बावजूद भी अपनी भावनाओं को निरन्तर प्रवाहित होते रहने दिया जो विभिन्न प्रमुख पत्र / पत्रिकाओं के माध्यम से समय समय पर पाठकों तक पहुंचती रही ।

अब शिवना प्रकाशन से उनकी दो किताबें प्रकाशित हुई हैं । एक - काव्य संग्रह और दूसरा गजल संग्रह । इनका आवरण तो आकर्षित करता ही है साथ ही रचनाएँ भी मन को किसी चुम्बक की तरह अंत तक खींचती हैं । यह उनके लेखन की ही विशेषता है ।

काव्य संग्रह- ' सच, समय और साक्ष्य ' अतुकांत या नई कविताओं का संकलन है। इसमें उनकी प्रतिनिधि कविताएं शामिल हैं। ये कविताएं कोमलता से चुभन का एहसास कराती हुई यथार्थ अभिव्यक्ति हैं।

वर्तमान में अतुकांत या नई कविता लिखने का चलन बढ़ता हुआ नजर आता है। काव्य लेखन के नियमों से परे इन कविताओं में कुछ ही शब्दों में गहरी और संदेशपूर्ण बात कही जा सकती है , जो जन मानस को सीधे तौर पर प्रभावित करती हैं ।

मेरा मानना है - ये अतुकांत कविताएं किसी भी विचारवान और भावुक व्यक्ति को सफल कवि बनाने मैं सक्षम हो सकती हैं । बस अपनी बात कहने का सलीका आना चाहिए ।

सामान्यतः पाठकों को आज सीधी और सरल बात ही सुहाती भी है । इन कविताओं में लेखक प्रयोगधर्मी बन सांकेतिक रूप में भी वह सब व्यक्त कर देता है जो उसे अंदर ही अंदर मथता रहता है। इसे भी पाठक आसानी से समझ लेते हैं । मुझे , नई या अतुकांत कविता की विशेषता भी यही लगती है।

कवि शैलेन्द्र शरण के इस संग्रह में मुझे वह सब मिला जो एक आम पाठक भी कहना तो चाहता है पर व्यक्त नहीं कर पाता -

उन दिनों
अंकित होते रहे शब्द
मन में , जो
कहे गये न लिखे गये

शैलेन्द्र की कविताएं सच के साथ समय की भी साक्षी हैं और सदा रहेंगी भी ।

संग्रह में शामिल रचनाओं पर चर्चा करूँ , इससे पहले वे खुद अपनी रचनाओं के बारे में क्या कहते हैं , इसे देखिए - ' मेरी कविताओं का मूल स्वर - प्रणय या प्रेम है । इसीलिए इन्हें बाहर लाने में एक अनजाना भय सा बना रहा । मैने जितना जाना और महसूस किया , उसका सार यह है कि कविता यथार्थ को समझने का बौद्धिक प्रयास है। कविता के माध्यम से प्रेम की अनुभूतियों को भीतर तक जाकर व्यक्त किया जा सकता है। अनुभूतियां क्षण की हों या लंबे समय की , किसी सामान्य व्यक्ति की हों या व्यक्ति विशेष की , आशा की हों या निराशा की , यही कविता का रूप धर सामने आती हैं । '

व्यापक रूप से आज वैश्विक चलन परिवर्तित हो रहा है । यह परिवर्तन सकारात्मक और जन हिताय हो तो प्रभावित करता है और इसके विपरीत हो तो विचलित भी करता ही है ।

अपनी ' चलन ' कविता में उनका यह कहना -

चलन है आज - कल
एक बेहतर कि तलाश में
एक बेहतर छोड़ देना ।

यह स्थिति दर्दनाक तो है ही हमारी संस्कृति , हमारे अस्तित्व पर भी प्रश्नचिन्ह लगाती है। कवि शैलेन्द्र इससे चिंतित तो दिखाई देते ही हैं, पाठकों को भी सोचने पर विवश कर देते हैं ।

डॉ. प्रताप राव कदम , कवि शैलेन्द्र के बारे में लिखते हैं - हालाँकि शैलेन्द्र ने राजनीति और सामाजिक विषमताओं पर कविताएं लिखीं हैं किंतु उनका मूल स्वर प्रेम का ही है । एक छटपटाहट , एक छूटे हुए को अबेरने की कोशिश , हताशा में भी हिम्मत - सा प्रस्फुटित हो जाता प्रेम। किसी थके हारे व्यक्ति में दम भरने जैसा असर करता है ।

सच ही है यह। देखिए -

हमेशा ही
बुरे लगते रहे झूठ
अब चाहता हूँ
सारे झूठ सुन लूँ
जो सुनने में
भले लगने लगे हैं ।

विवशता में ही सही पर अब जन मानस यह कहने, सुनने के लिए बाध्य तो हो ही गया है।

एक कटु सत्य देखिए -

साक्ष्य को दरकार है सच की
और सच को जीत के लिए चाहिए समय
सच , साक्ष्य और समय
इन दिनों प्रबंध के विषय हैं ।

जब इस कविता को हम पूरी पढ़ते हैं तो समझ आती है न्यायिक स्थिति । चाहे वह भौतिक हो या फिर कुदरती -

जो कहे गए
सच नहीं सिर्फ तर्क थे
जो तर्क गलत साबित हुये
उनके सामने साक्ष्य थे
जो सच और साक्ष्य , समय से पहले हार गए
वे झूठ से नहीं , जिंदगी से डरे हुए थे।

हकीकत से रूबरू कराती है शैलेन्द्र की यह कविता और सोचने को विवश करती , हम सबकी अभिव्यक्ति बन जाती है।

इस काव्य संग्रह में शामिल कविताओं में कवि शैलेन्द्र की वे सब अनुभूतियां देखने को मिलती हैं जो हमारी अपनी प्रतीत होती हैं , जिन्हें बड़ी आसानी से कवि अपनी कविताओं में व्यक्त कर देता है और पाठकों को लगता है जैसे वह खुद भी तो यही कहना चाहता था । यही कविता के प्राण हैं जिसने इन रचनाओं को जीवंत बना रखा है।

इसीलिए दैनिक सुबह सबेरे के वरिष्ठ सम्पादक अजय बोकिल जी उन्हें - मानवीय सरोकारों के कवि मानते हैं । मैं श्री बोकिल जी के इस कथन से भी पूरी सहमति रखता हूँ कि - ' शरण समय को सत्य के आईने में पकड़ना चाहते हैं और वे स्वयं इसके साक्षी बनना चाहते हैं ।'

यही सार्थकता है - ' सच , समय और साक्ष्य ' काव्य संग्रह की ।

कद्र है

अनूपा हबीला

'क्या जी! मैं सारा दिन तुम्हारा इंतज़ार करती हूं और तुम आकर सीधे अपने मम्मी- पापा के कमरे में चले जाते हो, मेरे बारे में कुछ भी नहीं सोचते' गुस्से से भरी हुई ऋतु बोली।

'दिन भर का थका-हारा आया हूँ, घर आने पर लोगों की पतिन्यां चाय-पानी पिला कर, प्यार भरी मीठी- मीठी बातें करती हैं और तुम गुस्सा कर रही हो'।

'लोगो के पति भी तो ऑफिस से आने के बाद सीधे पतने के पास आते हैं, कहीं इधर उधर नहीं जाते ना, तुम्हे तो मेरी कोई कद्र ही नहीं'

' कद्र है जानेमन! मुझे अपनी दादी की सूनी आंखें अभी भी याद है, इसीलिये तो बच्चों के दादा - दादी के कमरे में जाता हूं।'

' तो क्या ?'

'आज मैं वहां जा रहा हूं तो कल बच्चे भी, तुम्हारे पास आएंगे।'

अजारक्त बस्ती

शील निगम

कक्षा में रक्त के विभिन्न समूहों की चर्चा चल रह रही थी। गीता मैडम श्याम पट्ट पर रक्त की बूँदों के चित्र बनाकर 'रक्त समूह' के नाम लिख रही थीं। तभी सविता ने कुछ कहने के लिए हाथ उठाया और खड़ी हो गई।

'मैडम, मेरे पडौस में रहने वाले रोहन को कई बार अस्पताल जाना पड़ता है,खून चढ़वाने।'

हालांकि विषयांतर हुआ था,फिर भी मैडम ने सविता की जिज्ञासा शांत करने के लिए कहा-'हाँ इस बीमारी को 'थैलेसीमिया' कहते हैं। विश्व में बहुत से देशों में लोगों को यह बीमारी होती है। जरूरत के अनुसार समय-समय पर उन्हें रक्त चढ़ाया जाता है।'

तभी सीमा ने कुछ कहा,जो बहुत ही आश्चर्यजनक था।

'मैडम, मेरे दादा जी वैद्य हैं। उन्होंने मुझे बताया कि इसके बारे में आज से पाँच हज़ार वर्ष पहले महर्षि चरक ने 'चरक संहिता' में भी उल्लेख किया था,जो इस बीमारी का इलाज है।

मैडम को इस बात की जानकारी नहीं थी। उन्होंने तुरंत मोबाइल पर गूगल पर जानकारी देखी। बात सही थी।

गीता मैडम ने बताया-'बकरे के खून में रक्त कणों की मात्रा अधिक होती है। संरचना जटिल होने के कारण रक्त कण आसानी से टूटते नहीं। बकरे के रक्त को 'अजारक्त बस्ती' कहा जाता है। इसे एनिमा के जरिए रोगी की बड़ी आंत तक पहुँचाया जाता है। जहाँ रक्तकणों को अवशोषित कर लिया जाता है। भारत पहला देश है,जिसने इस इलाज में पहल की है। भारत में बहुत से बच्चों पर यह प्रयोग सफल रहा है।'

सभी लड़कियों ने आश्चर्यमिश्रित नज़रों से इस जानकारी का जरिया बनने के लिए सीमा को बधाई दी,पर मंजुला से न रहा गया। उसने खड़े हो कर कहा-'मैडम हमारे देश की पुरानी खोजों तथा सूत्रों पर विदेशी कंपनियाँ अपना एकाधिकार जमाकर अपने नाम से पेटेंट करवा लेती हैं। क्या इस प्रक्रिया में भी ऐसा होने की संभावना है?

'होना तो नहीं चाहिए। 'साँच को आँच क्या?' 'प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?' इस प्रयोग के परिणाम तो दुनिया देख ही रही है.' गीता मैडम ने कहा। और फिर छुट्टी की घंटी बज गई। सभी लड़कियाँ मेडिकल साइंस की इस उपलब्धि से अपने देश के लिए गौरवान्वित महसूस कर रहीं थीं। उनमें चिकित्सक बनकर सेवा करने की भावना जाग्रत हो चुकी थी।

भाषा के नाम पर लड़ाई

(लेखक द पायनियर के ओपिनियन एडिटर, वरिष्ठ राजनीतिक टिप्पणीकार और लोक मामलों के विश्लेषक हैं)

राजेश सिंह

चार महीने पहले द्रमुक नेता एम के स्टालिन ने चेतावनी दी थी कि यदि केंद्र सरकार तमिलनाडु में राजमार्गों पर लगे मील के पत्थरों पर अंग्रेजी मिटाकर हिंदी में लिखती है तो 'नया हिंदी विरोधी आंदोलन' छेड़ दिया जाएगा। उन्होंने दावा किया कि सरकार का कदम 'हिंदी को पिछले दरवाजे से राज्य में दाखिल कराने' का सबूत है और दिखाता है कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाला केंद्र 'तमिलों की भावनाओं का सम्मान नहीं करता है।' मील के पत्थरों पर 'राष्ट्रीय' आधिकारिक भाषा में लिखे जाने का भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण का कदम उन्हें 'हिंदी को थोपने' जैसा लगा। जल्द ही तमिलनाडु के दूसरे नेता भी यही बोलने लगे। पीएमके के संस्थापक एस रामदास ने 'भीषण आंदोलन' छेड़ने की धमकी दी और एमडीएमओ के नेता वाइको ने तीखे लहजे में इस कदम की निंदा की। इस बीच कुछ उत्साही तमिल लोगों ने राज्य में राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे लगे मील के पत्थरों पर लिखे हिंदी नामों को बिगाड़ना शुरू कर दिया। अननद्रमुक सरकार ने अभी तक संतुलित रुख अपनाया है। एक पल के लिए भूल जाते हैं कि मील के पत्थरों पर लिखे किसी भी तमिल शब्द को हटाकर हिंदी लिखने की बात नहीं कही गई है। अब आगे बात करते हैं।

कुछ ही दिन पहले बेंगलूरु में कनन्ड़ समर्थक कार्यकर्ता मेट्रो स्टेशन के बोर्डों पर हिंदी के इस्तेमाल के विरोध में सड़कों पर उतर आए। वहां अंग्रेजी या स्थानीय भाषा को हटाया नहीं गया, केवल हिंदी को जोड़ा गया था। लेकिन अति-उत्साही आंदोलनकारियों के लिए इतना ही काफी था। उन्होंने पूरे महानगर मे प्रदर्शन किया और अड़ गए कि सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी का प्रयोग नहीं होना चाहिए। इस तरह मेट्रो स्टेशन से शुरू हुईबात मॉल और जिमनेजियम तथा दूसरी जगहों पर फैलती गई। कनन्ड़ भाषा की स्वयंभू रखवाली कनन्ड़ रक्षण वेदिके (केआरवी) राज्य सरकार को हिंदी बंद करने के लिए विवश करने की कवायद में अगुआ बन गई है और उसके सदस्य दबाव बनाने के लिए पूरे शहर में फैल गए हैं। लेकिन उसे इतनी मेहनत करने की जरूरत नहीं है क्योंकि सिद्धरमैया की अगुआई वाली कांग्रेस सरकार पहले ही मानती है कि भाजपा-नीत केंद्र गैर हिंदी भाषी राज्यों पर 'हिंदी थोपने' की कोशिश कर रही है। यहां भी, यह याद दिलाने की जरूरत नहीं कि मेट्रो छह वर्ष पहले शुरू हुई थी और हिंदी के बोर्ड तभी से लगे हैं। मेट्रो के हाल ही में शुरू किए गए नए मार्ग पर भी कनन्ड़ और अंग्रेजी के साथ हिंदी लिखे बोर्ड लगे थे।

इस बात से सवाल उठता हैः तमिलनाडु और कर्नाटक में छोटे स्तर पर ही सही, अचानक गुस्सा क्यों फूट पड़ा है? इसकी फौरी वजह क्या हो सकती है? अगर समझदारी से सोचें तो राष्ट्रीय राजमार्ग पर हिंदी लिखे पत्थर लगे होने से देश भर के मुसाफिरों को उनकी यात्रा में मदद मिलेगी। इसी तरह बेंगलूरु मेट्रो के स्टेशनों पर हिंदी में लिखे नाम उन हजारों यात्रियों के लिए बहुत काम के हैं, जो कर्नाटक से बाहर के हैं और कनन्ड़ नहीं समझते। लेकिन समझदारी की बात ही कौन करता है। तमिलनाडु में द्रमुक सत्तारूढ़ अननद्रमुक के भीतर चल रही समस्याओं का फायदा उठाने की कोशिश कर रही है और कोई भी मुद्दा - चाहे कितना भी पुराना और रद्दी हो - जनता का ध्यान खींचेगा और उसके लिए कारगर रहेगा। इसके अलावा हाल ही में अपनी पार्टी की कमान संभालने तथा अपनी कुर्सी को परिवार से मिलने वाली चुनौतियों के कारण स्टालिन ऐसे 'मुद्दे' उठाने की फिराक में हैं, जो द्रविड़ों को आकर्षित करते हैं और हिंदी के खिलाफ मुहिम छेड़ने से बेहतर और क्या हो सकता है! पड़ोसी कर्नाटक में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और केआरवी सरीखे कनन्ड़ समर्थक उग्र समूह अच्छी तरह समझते हैं कि लोहा गर्म होने पर चोट करना कितना फायदेमंद होता है। उन्हें पता है कि सरकार पर दबाव डालने का यही समय है और जब दबाव भाषा से जुड़ी भावनाओं की शक्ल में आता है तो राज्य के किसी भी सार्वजनिक पदाधिकारी के लिए उसका विरोध करना लगभग असंभव हो जाता है। इसके अलावा कनन्ड़ समर्थक मांग को किसी भी शक्ल में पेश किया जाए, सत्तारूढ़ दल के लिए ही नहीं, उसके विरोधियों के लिए भी इस मांग का विरोध करना मुश्किल होगा।

देश में भाषाई दंभ की ताकत को कम नहीं माना जा सकता। लेकिन जिस तरह से अभी यह नजर आ रही है, उस पर विचार करने से पहले यह समझना ठीक रहेगा कि राजनीति विज्ञान के विचारक कई दशकों से भाषा को व्यक्ति की पहचान का महत्वपूर्ण और जरूरी हिस्सा बताते आए हैं। इसी कारण यह उस देश (या राज्य) की पहचान का भी जरूरी हिस्सा है, जिसमें व्यक्ति रहता है। वास्तव में दूसरी बातों के अलावा भाषा भी राज्य और देश के बीच बारीक अंतर करती है। इमानुअल कैंट के दर्शन को और विकसित करने वाले जर्मनी के लेखक-विचारक और दार्शनिक योहान गॉटलिप फिटे भाषा जैसी साझा कड़ियों पर बहुत जोर दिया ओर कहा कि जहां भाषा अलग होती है, वहां राष्ट्र भी अलग होता है। उन्होंने कहा, 'एक ही भाषा बोलने वाले लोगों को प्रकृति ही कई अदृश्य कड़ियों के जरिये एक दूसरे से बांध देती है, किसी भी मानवीय कला के आने से पहले ही वे एक दूसरे को समझते हैं और दूसरे को अधिक से अधिक स्पष्ट तरीके से समझा भी देते हैं।' प्रख्यात भाषा विज्ञानी एडवर्ड सैपिर ने कहा कि 'एक जैसी भाषा उन लोगों के बीच सामाजिक एकजुटता का विशिष्ट संकेत बन जाती है, जो उस भाषा को बोलते हैं।' इस तरह भाषा सांस्कृतिक भाईचारा विकसित करने में मदद करती है।

जब भारत राज्यों का संघ बना तो राज्यों का गठन भाषा के आधार पर किया गया। भौगोलिक नजदीकी जैसे दूसरे पहलुओं पर भी विचार किया गया, लेकिन भाषा प्राथमिक कारण बनी। भाषा आवश्यक निर्देशक सिद्धांत बन गई क्योंकि देश में ढेरों भाषाएं हैं - जो मौखिक, लिखित तथा साहित्यिक रूप में बहुत सशक्त है - और उनका समावेश बिल्कुल उसी तरह किया जाना था, जैसे विभिन्न रियासतों को एकीकृत भारत में मिलाया गया था। इस प्रकार कथित हिंदी पट्टी, द्रविड़ पट्टी, कनन्ड़ पट्टी, तेलुगू पट्टी और दूसरी पट्टियां तैयार हुईं। अंग्रेजी और हिंदी संपर्क भाषा बन गईं। माना गया था कि इस व्यवस्था से सभी संतुष्ट हो जाएंगे और क्षेत्रीय भाषाओं को दोनों संपर्क भाषाओं के बराबर गौरव मिलेगा। लेकिन मेलजोल के इस विचार को आजादी के बमुश्किल दशक भर बाद ही चुनौती दे दी गई और उसकी शुरुआत दक्षिण ने ही की। तमिलनाडु में 1960 के दशक के हिंदी विरोधी आंदोलन ने भाषाई एकता की इमारत ही हिला डाली और ऐसा अविश्वास पैदा कर दिया, जो आज भी चल रहा है। लेकिन 1960 के दशक में जो हुआ, वह उससे पहले के एक अभियान की ही आगे की कड़ी था।

हिंदी-विरोधी आंदोलन 1937 में तत्कालीन मद्रास प्रेसिडेंसी में शुरू हुआ। स्कूलों में हिंदी को अनिवार्य भाषा बनाने के विरोध में आरंभ इस आंदोलन में छात्रों से लेकर राजनेताओं और आम आदमी तक समाज के तमाम तबके शामिल हो गए। राज्य में सी राजगोपालाचारी के नेतृत्व वाले कांग्रेस शासन ने फैसला ले लिया था। ईवी रामासामी पेरियार जैसे विपक्षी नेताओं ने राजनीतिक हथकंडे के तौर पर विरोध शुरू किया और बाद में वह द्रविड़ आंदोलन के अगुआ बन गए। आंदोलन करीब तीन वर्ष तक चलता रहा। सरकार ने फौरन सख्त (कई लोगों की नजर में बर्बर) कार्रवाई की, जिसके कारण असंतोष सुलगता रहा और आंदोलन को काबू में किए जाने के बाद भी सुलगता रहा। अंत में 1940 में राजगोपालाचारी सरकार के इस्तीफे के बाद अंग्रेजों ने स्कूलों में हिंदी के अनिवार्य प्रयोग का निणय्र रद्द कर दिया। तमिलनाडु का जन्म ही इस विचार के साथ हुआ कि राज्य के लोगों पर हिंदी नहीं 'थोपी' जाएगी।

विरोध का दूसरा और अधिक हिंसक तथा तीव्र दौर साठ के दशक के मध्य में शुरू हुआ। इसका कारण था संविधान द्वारा हिंदी को आधिकारिक और अंग्रेजी को 'सहायक' भाषा स्वीकार किया जाना। 26 जनवरी, 1950 को संविधान लागू किए जाने से पहले संविधान सभा में इस विषय पर तीव्र विरोध किया गया था। किंतु द्रविड़ तथा हिंदी विरोधी भावनाओं के बल पर आई द्रमुक ने अपना विरोध जारी रखा। तमिल गौरव को सम्मान देने और डर मिटाने के लिए जवाहरलाल नेहरू की सरकार ने 1963 में आधिकारिक भाषा अधिनियम लागू कर दिया, जिससे सुनिश्चित कर दिया कि 1965 के बाद भी अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा, जबकि संविधान में कहा गया था कि उस वर्ष के बाद हिंदी ही देश की एकमात्र आधिकारिक भाषा होगी।

लेकिन यह आश्वासन तथा कानून भी द्रमुक को संतुष्ट नहीं कर सके। 1965 आते-आते हिंदी विरोधी आंदोलन मद्रास राज्य में जोर पकड़ गया और हर तरफ दंगे भड़क गए। अगले तीन महीने तक आगजनी, लूटपाट, पुलिस गोलीबारी रोज की बात बनी रही। आधिकारिक अनुमानों के मुताबिक कम से कम 70 लोगों की जान चली गई (हालांकि अनाधिकारिक अनुमानों में आंकड़े बहुत अधिक थे)। जब प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने सीधा आश्वासन दिया कि अंग्रेजी ही आधिकारिक भाषा बनी रहेगी तब जाकर विरोध बंद हुए और स्थिति सामान्य हुई। किंतु द्रमुक को मनचाहा राजनीतिक फायदा मिल चुका था और कांग्रेस को द्रविड़ भूमि पर हिंदी 'थोपने' की कोशिश करने वाली पार्टी बताकर उसने 1967 के विधानसभा चुनावों में जीत दर्ज की और सत्ता हासिल कर ली। वास्तव में कांग्रेस उस झटके से कभी उबर ही नहीं पाई, तब भी नहीं, जब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आधिकारिक भाषा अधिनियम में संशोधन कर दिया और हिंदी के साथ ही अंग्रेजी को भी अनिश्चित काल तक आधिकारिक भाषा के रूप में प्रयोग करने की अनुमति मिल गई। इसे देखते हुए अंग्रेजी के साथ हिंदी के प्रयोग से तमिलनाडु में हाल ही में लोगों को दिक्कत नहीं होनी चाहिए थी क्योंकि तमिलनाडु की जनता और राजनीतिक पार्टियों को संतुष्ट करने वाली यथास्थिति बरकरार रखी गई है।

दूसरा बड़ा भाषाई वितंडा 1980 के दशक मध्य में एकदम अप्रत्याशित स्थान - गोवा - में खड़ा हुआ था। राजनीतिक जमात के एक वर्ग, चर्च और कई संगठनों ने मिलकर कोंकणी को 'आधिकारिक भाषा' का दर्जा दिए जाने की मांग शुरू कर दी थी ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि व्यापक रूप से बोली जा रही और धार्मिक कार्यक्रमों में प्रयुक्त हो रही मराठी को स्थानीय भाषा की कीमत पर फायदा नहीं मिल सके। कई कांग्रेसी नेताओं और छुटभैयों का राजनीतिक जीवन इसी आंदोलन के बल पर संवर गया। कोंकणी और मराठी दोनों को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिए जाने की सलाह कोंकणी-समर्थक खेमे को बरदाश्त नहीं थी। अंत में मराठी को 'समान' दर्जा तो मिला, लेकिन 'आधिकारिक' दर्जा नहीं। आंदोलन हिंसक और कुरूप स्वरूप वाला हो गया। दो अखबारों ने एकदम विपरीत रुख अपना लिए उनकी पहचान उस खेमे से बन गई, जिसका समर्थन वे कर रहे थे। एक अंग्रेजी दैनिक हेराल्ड था, जिसने एक पुर्तगाली अखबार शुरू किया था और महज तीन वर्ष पुराना था। दूसरा मराठी दैनिक गोमंतक था, जिसने मराठी को भी आधिकारिक भाषा के रूप में प्रयोग किए जाने के पक्ष में अभियान चलाया। एक समय स्थिति इतनी भयावह हो गई थी कि लोग गोमंतक हाथ में लेकर कोंकणी समर्थकों के सामने जाने से और हेराल्ड लेकर मराठी समर्थक लोगों के सामने जाने से भी डरने लगे थे! अंत में आंदोलन के बल पर दोनों अखबार खूब चल निकले। मराठी अखबार तो पहले ही स्थापित था, हेराल्ड ने परिस्थितियों का पूरा फायदा उठाया और अपने प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ते हुए राज्य में पैठ जमा ली। वास्तव में भाषा आंदोलन के दौरान उसने इतना फायदा हुआ कि आज तक उसका बहुत असर है।

उस आंदोलन का भी एक अतीत था। 1961 के अंत में गोवा को पुर्तगालियों के शासन से मुक्त कराए जाने के बाद उसे महाराष्ट्र में मिलाने का सशक्त आंदोलन शुरू हो गया। तर्क यह था कि चूंकि गोवा संस्कृति और भाषा के मामले में बड़े आकार के राज्य के इतने करीब है, इसलिए इसके विलय में झंझट भी नहीं होगा और विलय स्वाभाविक भी है। महाराष्ट्रवादी गोमंतक पार्टी (एमजीपी) जैसे क्षेत्रीय दल इस विचार का समर्थन कर रहे थे (हालांकि एमजीपी बाद में गोवा को अलग रखने पर राजी हो गई)। इससे कोंकणी पर मराठी को तरजीह दिए जाने की बात भी साफ हो गई। इसका प्रतिकार होना स्वाभाविक ही था और वे ताकतें एकजुट हो गईं, जो गोवा को अलग बनाए रखना चाहती थीं और कोंकणी को वह सम्मान दिलाना चाहती थीं, जो राज्य में सभी जातियों, संप्रदायों और धर्मों द्वारा बोली जाने वाली भाषा होने के बावजूद उसे तब तक नहीं मिला था। मराठी प्रकाशनों का वर्चस्व होना और कोंकणी प्रकाशन नहीं होना भी चिंता का मसला बन गया। मानो इतना ही काफी नहीं था, इसलिए कोंकणी की लिपि पर भी विवाद हो गयाः एक खेमा देवनागरी का समर्थन कर रहा था और दूसरा रोमन लिपि का। कुछ लोगों ने हास्यास्पद तर्क देते हुए कहा कि देवनागरी का प्रयोग मराठी ताकतों के सामने घुटने टेकने जैसा होगा और इसलिए उन्होंने रोमन लिपि के प्रयोग का समर्थन किया। इस कहानी में एक विडंबना है। स्वतंत्रता के बाद हुए पहले विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को पछाड़कर मराठी समर्थक एमजीपी सत्ता में आ गई। लेकिन भाषा आंदोलन के दौरान प्रताप सिंह राणे के नेतृत्व वाली कांग्रेस सरकार का झुकाव मराठी की ओर माना गया। याद रहे कि गोवा में भाषा आंदोलन तमिलनाडु के आंदोलन से बिल्कुल अलग था क्योंकि वह हिंदी के विरोध में नहीं था। इस तरह किसी भी राज्य ने - दक्षिणी राज्यों ने भी - ऐसा हिंदी विरोधी प्रदर्शन नहीं देखा है, जैसा तमिलनाडु में हुआ। महाराष्ट्र में पिछले कुछ दशकों में मराठी मानूस के समर्थन में शिवसेना द्वारा चलाए गए विभिनन्आंदोलन भी हिंदी का विरोध नहीं कर रहे थे बल्कि महाराष्ट्र के बाहर से आए लोगों से मराठी संस्कृति के सम्मान और पालन करने की मांग कर रहे थे।

अलग गोरखालैंड की मांग पर पश्चिम बंगाल के हिल्स क्षेत्र में हाल में हुए हिंसक टकराव का भाषाई पहलू भी है - धारणा है कि राज्य की ममता बनर्जी सरकार ने हिल्स में लोगों पर बंगाली भाषा थोपने का प्रयास किया और एक आदेश के जरिये राज्य शिक्षा बोर्ड के अधीन सभी स्कूलों में बांग्ला सीखना अनिवर्या कर दिया। सरकार को अधिसूचना वापस लेनी पड़ी और स्पष्ट करना पड़ा कि बांग्ला 'थोपने' का उसका कोई इरादा नहीं था, लेकिन तब तक नुकसान तो हो ही चुका था और पश्चिम बंगाल में हिल्स क्षेत्र में स्थिति तभी से गंभीर बनी हुई है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि भारत जैसे देश में, जहां दर्जनों मान्यता प्राप्त भाषाएं है और उनसे भी अधिक बोलियां है, भाषा विवाद को सामान्य माना जा सकता है, लेकिन ये विवाद इतने न बढ़ जाएं कि विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान बचाए रखने के नाम पर लोगों को अलग भाषाई मानसिकताओं में बांटने की कोशिश की जाए।

योग बनाए निरोग

प्रेरणा सेंद्रे इन्दौर

जीवन में जब बढ़ने लगे वियोग,
अनेक रोग जब कर रहे भोग..
जब शरीर को करना हो निरोग,
तो एक ही रास्ता है योग।
सांसों को जब लगाना हो आयाम,
तो करें मानुष थोड़ा प्राणायम..
आसन से आती सकारात्मकता,
ध्यान से दूर होती नकारात्मक्ता।

जब शरीर को करना हो निरोग,
तो एक ही रास्ता है योग।

अष्टांग योग से शुरू होती योगशाला की कक्षा,
यम नियम आसन प्राणायाम समाधि से रक्षा..
यम का पालन करके मन की होती शुद्धि,
नियम का पालन करके शरीर की शुद्धि।

सरल से कठिन की ओर जाना आसन में,
हर आसन के बाद आना है विश्राम में..
प्राणायाम से श्वांसों में आती लयबद्धता,
प्रत्याहार से इंद्रियों को साधक है साधता।

सरल सहज मन को बनाए अपनी धारणा,
तभी तो योगी में बनती ध्यान की प्रेरणा।

शरीर बने सरल,मिटे सब व्याधि,
योगी तब लगा सकता पूर्ण समाधि..
यही सम्पूर्ण शरीर और अष्टांग का है योग,
तो मानव से निश्चित दूर भागे वियोग?

भाषा आंदोलन का नया स्वरूप

योगेन्द्र यादव

इक्कीसवीं सदी के भाषा आंदोलन का स्वरूप क्या होगा? 'अंग्रेजी हटाओ' की जगह 'अंग्रेजी पचाओ' का नारा कैसा रहेगा? क्या हिंदी प्रचार के बदले भारतीय भाषा प्रसार का प्रयास होगा? क्या विरोध प्रदर्शन की बजाय विकल्प निर्माण पर ध्यान रहेगा?

भाषा आंदोलन की 50वीं वर्षगांठ पर यह सब सवाल मन में उठे. सन् 1967 में 29 नवंबर के दिन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के छात्र संघ ने भाषा से सवाल पर आंदोलन किया. उग्र युवाओं पर पुलिस ने गोली चलायी थी, दो विद्यार्थी घायल हुए थे.

उसके बाद दिल्ली में संसद का घेराव हुआ था. भाषा आंदोलन के कई सिपाही महीनों तक जेल में रहे. उनमें से कई आज राष्ट्रीय नेता भी हैं. आंदोलनकारियों को सत्ता मिल गयी, लेकिन आंदोलन की मांग जस-की-तस ही रही. भाषा का सवाल हमारे जीवन में कभी-कभार ही उठता है, जैसे संयुक्त परिवार में जमीन के बंटवारे का सवाल. यह कचोटता रोज है, लेकिन चुप्पी जल्दी से टूटती नहीं है. जब टूटती है, तो अक्सर झगड़े की शक्ल लेती है. कभी कनन्ड़ के आग्रही बेंगलुरु में हिंदी के नामपट्ट पर झगड़ा करते हैं. कभी तमिलनाडु की पार्टियां केंद्र सरकार के किसी फरमान का विरोध करती हैं.

भारतीय भाषाएं एक-दूसरे से उलझती रहती हैं. और ऊपर बैठी अंग्रेजी वाली आंटी भीनी-भीनी मुस्कुराहट फेंकती रहती है. देहात या कस्बे से आनेवाले युवक-युवतियां अंग्रेजी से जूझते रहते हैं. ठीक से अंग्रेजी न बोल पाने के हीन बोध में दबे रहते हैं. हर कोई अपने बच्चों को इंग्लिश मीडियम स्कूल भेजने की होड़ में है, टूटी-फूटी अंग्रेजी सिखानेवाले नीम-हकीमों का बाजार गर्म है. सत्ता की अघोषित राजभाषा अंग्रेजी पांव पसारती जा रही है, बाकी सब भाषाएं अपने-अपने दड़बे में सिकुड़ती जा रही हैं. ऐसे में भाषा आंदोलन को याद करें, तो क्यों? हमारे समय का भाषा आंदोलन कैसा होगा?

पिछले पचास साल में देश की आबादी के भाषाई संतुलन में कोई खास बदलाव नहीं हुआ है. हिंदी न तब बहुमत की भाषा थी, न आज है. संख्या बल आज भी भारतीय भाषाओं के पास है, लेकिन सत्ता बल अंग्रेजी के पास. हिंदी को मातृभाषा कहनेवाले लोग 2001 में 41 प्रतिशत थे, जो अब 43 के करीब हो गये होंगे. (अनुमान इसलिए लगाना पड़ा क्योंकि अब भी 2001 के जनगणना के भाषाई आंकड़े सार्वजनिक नहीं हुए हैं). मातृभाषा की संख्या में अंग्रेजी कहीं नहीं टिकती. 2001 में सिर्फ दो लाख लोगों (0.02 प्रतिशत) ने ही अंग्रेजी को मातृभाषा बताया था. पिछले 50 साल में बदलाव संख्या बल में नहीं, भाषाई सत्ता के समीकरण में आया है. मीडिया में आज भी भारतीय भाषाओं का बोलबाला है. लेकिन अंग्रेजी चैनल के विज्ञापन ज्यादा महंगे होते हैं, अंग्रेजी न्यूज चैनल खबरों का एजेंडा तय करते हैं.

आज भी देश की सबसे सुंदर साहित्यिक रचनाएं भारतीय भाषाओं में हो रही हैं, लेकिन दो कौड़ी का साहित्य लिखनेवाले अंग्रेजी के लेखक दुनिया के सवालों पर अपना ज्ञान बघारते रहते हैं. फिल्में आज भी हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में बन रही हैं. लेकिन समाजशास्त्र, नीति निर्धारण और विज्ञान की भाषा अंग्रेजी है.

राजनीतिक सत्ता में कौन रहता है, इससे भाषा का कोई वास्ता नहीं है. कांग्रेस राज ने भारतीय भाषाओं को धता बताया, तो राष्ट्रीयता, संस्कृति और परंपरा की दुहाई देनेवाली बीजेपी ने भी भारतीय भाषाओं के लिए कुछ नहीं किया. अटलजी जैसे हिंदी कवि के प्रधानमंत्री होते हुए भी हिंदी की स्थिति में एक सूत भी सुधार नहीं हुआ. तो क्या 21वीं सदी में दोयम दर्जे का नागरिक होने को अभिशप्त होंगी भारतीय भाषाएं? अगर 21वीं सदी में भाषा के आंदोलन को सार्थक बने रहना है, तो उसे वक्त के हिसाब से कैसे बदलना होगा?

किसी एक भाषा के बजाय तमाम भारतीय भाषाओं का आंदोलन बनाना होगा. हिंदी भाषा-भाषी अक्सर एक झूठे अहंकार का शिकार होते हैं. संविधान कहीं भी हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित नहीं करता, लेकिन हिंदी वाले अपने सर पर यह हवाई मुकुट लगाये घूमते हैं. इससे हिंदी को कुछ नहीं मिलता. देश के भविष्य में हिंदी की विशिष्ट भूमिका यही है कि वह भिनन्-भिनन् भाषा बोलनेवालों के बीच सेतु का काम कर सकती है. हिंदी झुकेगी, तो फैलेगी और ऐंठ दिखायेगी, तो सिकुड़ेगी.

दरअसल, राष्ट्रभाषा और राजभाषा के विवाद से पिंड छुड़ाने की जरूरत है. हर राष्ट्र को एक राष्ट्रभाषा चाहिए, यह यूरोप की बीमार मानसिकता की सोच है. हमारी सभ्यता हमेशा से बहुभाषीय रही है. उस बहुभाषीय संस्कार को सरकारी कामकाज, शिक्षा-ज्ञान की दुनिया में अपनाने की जरूरत है. 60 के दशक का त्रिभाषा फॉर्मूला सही कदम था, लेकिन इसका मतलब सिर्फ यह नहीं था कि गैर हिंदी भाषी अपनी मातृभाषा और अंग्रेजी के साथ हिंदी भी सीखें.

इसका मतलब यह भी था कि हिंदी अंग्रेजी के अलावा एक अन्य भारतीय भाषा भी सीखें. ऐसा हुआ नहीं और त्रिभाषी फॉर्मूला बेकार हो गया. भारतीय भाषाओं के आंदोलन को अंग्रेजी से अपने रिश्ते को पुनर्परिभाषित करना होगा. अब अंग्रेजी भी एक भारतीय भाषा है. आज के समय में देश को दुनिया से जोड़ने का सेतु अंग्रेजी भाषा है. इसलिए अंग्रेजी से झगड़ने या उसे हटाने की बजाय अंग्रेजी को हजम करने की जरूरत है. जैसे अंग्रेजी ने भारतीय भाषाओं के हजारों शब्द अपनी डिक्शनरी में शामिल कर लिये हैं, उसी तरह हम भी अंग्रेजी के शब्द हजम करना शुरू करें.

हमारी असली ऊर्जा अंग्रेजी हटाने के बजाय भारतीय भाषाओं को बनाने में खर्च होने चाहिए. आज अधिकांश भारतीय भाषाओं में समाजशास्त्र, विज्ञान और देश दुनिया के वर्तमान और भविष्य को समझ सकने की सामग्री का घोर अभाव है. भारतीय भाषा माध्यम में उच्च शिक्षा लेनेवाले अधिकांश विद्यार्थियों को अपनी भाषा में अच्छे स्तर की किताबें नही मिलतीं.

कुछ भारतीय भाषाओं को छोड़कर अधिकांश भाषाओं में बाल साहित्य और किशोर साहित्य का तो मानो अकाल है. इस अभाव को पूरा करने के लिए अनुवाद और भारतीय भाषा लेखन का अभियान चलना चाहिए. कॉलेज और यूनिवर्सिटी में पढ़ानेवाले अध्यापकों के मूल्यांकन का एक प्रमुख आधार यह होना चाहिए कि उन्होंने भारतीय भाषाओं में कितनी और कैसी सामग्री तैयार की है. ऐसे नये आंदोलन की शुरुआत के रूप में हिंदी दिवस की जगह भारतीय भाषा दिवस मनाना शुरू कर दें, तो कैसा रहे?

आज का सेहतनामा

जब आप खुद को ही खुद से अलग कर देते हैं तो यह लक्षण है डिप्रेशन का। यह एक ऐसी बीमारी है जो किसी को भी, कभी भी अपने घेरे में ले सकती है। कुछ लोग तो इस डिप्रेशन नामक बीमारी को झेल नहीं पाते हैं और आत्महत्या जैसे कदम उठा लेते हैं। इसकी लाख दवा भी लोग खा लें, लेकिन जब तक वह खुद इस बीमारी से निजात नहीं पाना चाहेंगे तब तक यह रोग भी उनका दामन नहीं छोड़ेगी।

डिप्रेशन किसी बीमारी का नाम नहीं है और न ही यह कोई दिमागी फितूर होता है। यह एक ऐसी मानसिक हालत होती है, जिसमें इन्सान की सोचने समझने की शक्ति कम हो जाती है। वह किसी भी प्रकार का सही डिसीजन नहीं ले सकता।

देखा जाए, तो डिप्रेशन ने एक बीमारी का रूप धारण कर लिया है जिसने बच्चों से लेकर बूढों को अपनी चपेट में ले लिया है। इसका मुख्य कारण होता ही दुःख। जब भी हम अधिक दुखी हो जाते हैं तो हम अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं जिसके कारण हम डिप्रेशन के शिकार हो जाते हैं। हमें कई तरह के डिप्रेशन का सामना करना पड़ सकता है जैसे कि :-

ङडिप्रेशन के प्रकारङ

ङमेजर डिप्रेशनङ

जब भी किसी का साथ अचानक छुट जाता है, तो आप इसे इमोशनल डिसऑर्डर कह सकते हैं। जब भी आप मेजर डिप्रेशन में होते हो, तो आप खुदकुशी की हद तक जा सकते हो।

ङटिपिकल डिप्रेशनङ

यह ऐसा डिप्रेशन होता है जिसमे इन्सान अपनी खुशी या गम को किसी के साथ शेयर नहीं करता।

ङसाइकाटिक डिप्रेशनङ

यह ऐसी हालत होती है जिसमे रोगी को अनजान आवाजें सुनाई देती है, साथ ही काल्पनिक चीजों में उसे यकीन होने लगता है, उसे शक करने की बीमारी हो जाती है और वह खुद से ही बाते करने लगता है।

ङडिस्थायमियाङ

जिन्दगी तो समान्य चल रही होती है, लेकिन वो अक्सर उदास रहते हैं वह अपनी लाइफ को इंजॉय नहीं करते। यह उदासी लगातार एक वर्ष से चली आ रही है तो इसे डिस्थायमिया कहते हैं।

ङपोस्टपॉर्टमङ

जब भी महिलाओं की डिलीवरी होती है, तो कई बार महिला डिप्रेशन में चली जाती है। ऐसे डिप्रेशन को हम पोस्टपॉर्टम डिप्रेशन कह सकते हैं

ङमेनियाङ

ऐसा हम चाहते है वैसा न हो तो ऐसे में अक्सर मायूसी आ जाती है। इसमें व्यक्ति की भावनाओं तथा संवेग में कुछ समय के लिए असामान्य परिवर्तन आ जाते है, जिनका प्रभाव उसके व्यवहार, सोच और निद्रा पर पड़ता है।

ङडिप्रेशन के लक्षणङ

1. यादाश्त का कमज़ोर होना।
2. काम में दिल न लगना।
3. बिना बात पर क्रोधित होना।
4. सोचने की क्षमता कम होना।
5. मन में अपने बारे में बुरे विचार आना।
6. पूरी नींद न आना।
7. जीवन को खत्म करने का मन में विचार आना।
8. अपना बिल्कुल भी ध्यान न रखना।
9. मुंह का सुखना, सिरदर्द, जोड़ो में दर्द का होना आदि डिप्रेशन के लक्षण होते हैं।

ङडिप्रेशन को दूर करने के कुछ घरेलू उपायङ

अकसर डिप्रेस्ड लोग खुद को कमरे में बंद कर इस बीमारी से छुटकारा पाने का हल ढूंढ़ते हैं या फिर दोस्तों के बीच समय बिताते हैं, उनसे सलाह लेते हैं ताकि वह जल्द ही इससे दूर हो सके। आपको आज बताएगा सबसे हैरान कर देने वाली डिप्रेशन की इलाजष्ठ जी हां, अपने डाइट को थोड़ा सा चेंज कर देने से आप डिप्रेशन से निजात पा सकते हैं।

दरअसल हमारे किचन में ऐसे कुछ मसाले मौजूद हैं जिनको रोजाना खाने में उपयोग करने से आपकी यह डिप्रेशन की समस्या दूर भाग जाएगी और आपका मूड भी फ्रेश हो जाएगा।

ज्यादातर लोग इस बीमारी से पीछा छुड़ाने के लिए कई महंगी-महंगी दवाइयां खाते हैं, लेकिन अब डिप्रेशन में खर्च होने वाले पैसे आपके बच जाएंगे क्योंकि दवाई का ही काम करेगी घर की रसोई में रखें मसालें।

आइए बताते हैं उन मसालों के नाम जिनको अपने डाइट में शामिल करने से आपको बहुत फायदा पहुंचेगा

ङदालचीनीङ

सबसे पहले नाम आता है दालचीनी का। इसमें एक अलग सी महक होती है। यह आपके दिमाग को एक्टिनव रखने का काम तो करता ही है साथ ही यह आपके मूड को भी फ्रेश करता है। यही नहीं, यह आपकी याददाश्त को भी बढ़ाने में भी बहुत लाभदायक है।

ङकेसरङ

क्या आप जानते हैं कि केसर को खुशी का मसाला भी कहा जाता है। अध्ययनों की मानें तो केसर के इस्तेमाल से टेंशन दूर होती है। ये मूड को लाइट करने का काम करता है।

ङहल्दीङ

हर दर्द की दवा कहलाने वाली हल्दी, डिप्रेशन को भी दूर भगाने का काम बखूबी करती है। पीली हल्दी के इस्तेमाल से ऐसे लोगों के मूड बहुत अच्छा हो जाता है। बता दें कि हल्दी में एंटी-इन्फ्लामेट्री और एंटी-ऑक्सीडेंट्स की अच्छी मात्रा पायी जाती है, जो आपके मूड को बेहतर बनाने का काम करता है।

ङकस्तूरी मेथीङ

यह आपके खाने का स्वाद तो बढ़ाती ही है साथ ही डिप्रेशन को भी कम करती है। इसकी खूशबू ही काफी है आपका मूड खुशनुमा बनाने के लिए।

ङडिप्रेशन से बचने के अन्य उपायङ

1. जब भी आप डिप्रेशन में होते हो, तो आप को संतुलित आहार लेना चाहिए जैसे फल, सब्जी, आदि खाने से मन खुश रहता है।

2. तनाव या डिप्रेशन से दूर रहने के लिए व्यायाम सबसे अच्छा माना जाता है। व्यायाम करने से सेहत तो अच्छी होती है और साथ ही शरीर में सकारात्मक उर्जा का संचार होता है।

3. अगर आप जॉब करते हो और काम करके थक चुके हो तो ऐसे में आप को कुछ समय के लिए छुट्टियां लेनी चाहिए। ताकि आप डिप्रेशन को आसानी से दूर कर सकें।

4. जब भी आपको जिंदगी में कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़े तो आप को किसी से मदद मांगने में शर्म नहीं करनी चाहिए।

5. यदि आप का वजन अधिक है जिसके कारण आपको अवसाद प्राप्त हो रहा है, तो आपको चाहिए की आप अपने वजन को कम करें, ऐसा करने से आपका मुड़ सामान्य हो जाएगा।

6. यदि आप अपने जीवन में अच्छे दोस्त बनाते हो, तो वह आपको सहानुभूति के साथ-साथ सही सलाह भी देते हैं।

7. जो लोग आप को पसंद नहीं करते और आप को दूसरो के सामने गिराने की कोशिश करते हैं, ऐसे लोगो से दूरी बनाकर रखनी चाहिए। ऐसा करने से आप का मन शांत रहता है।

8. जब आप अपनी पूरी नींद लेते हैं तो आप को सकारात्मक उर्जा की प्राप्ति होती है। इसलिए हमें रात को सात से आठ घंटे की नींद लेनी चाहिए।

9. जब भी आप का मुड़ खराब हो, तो आपको संगीत के साथ नाता जोड़ लेना चाहिए। क्योंकि जब आप संगीत के साथ नाता जोड़ते हैं, तो आप अपना सारा गम भूल जाते हो और आप का मुड़ ठीक हो जाता है।

संगीत और स्वास्थ्य

प्रियंका शाह 'पंखी'

संगीत में रुचि तो बचपन से ही रही थी पर तब ज्यादा उसकी महत्व पता नही था। माँ को पुराने फिल्मी गाने बजाने का शौक था और हम भी उसमें रुचिवान होते गये।

संगीत का प्रभु भक्ति के साथ भी संबंध है यह सब माँ ने बालक थे हम तभी से सिखाया था। पर साक्षात्कार तब हुआ जब मेरी संगीत में रुचि देखकर और मधुर आवाज को ध्यान में लेते हुए माँ ने मुझे संगीत क्लास में भर्ती कराया था। तब मै बड़ी हो चुकी थी यह करीब मेरे सातवी क्लास के वेकेशन की बात है। वो क्लास सबसे अलग था, वहाँ दिखने में कोई खास प्रभाव नहीं था एक छोटा सा कमरे में एक थोड़े वृद्ध दादा सिखा रहे थे, पर उनका ज्ञान शास्त्रीय संगीत का बहुत अनोखा था। आज के भौतिक सुखों और दिखावट के जमाने कम लोगो को ही ये सुहाये। मुझे खुशी है कि मेरी माँ ने उनके ज्ञान को देखा बाहरी दिखावे को नहीं। और इसी वजह से बहुत कम विद्यार्थी ही आते थे वहाँ सीखने के लिए, सबको कहाँ शास्त्रीय संगीत भाये! जो पुराने समय मे राजा महाराजाओं के दरबार में बजते थे वैसे राग वो दादा सिखाते थे। इन दौरान कई संगीत के चमत्कारों को देखे साथ महसूस किये। और यह में दृढ़ता से कह सकती हूँ संगीत स्वस्थ्य के लिए अनोखी हीलिंग है। मेरी शुरुआत तो भोपाली राग से हुई थी जो आगे बढ़ते हुऐ करीब 10 से 12 राग को सीख कर दुर्भाग्यवश छूट गयी थी। जब भी सिर दर्द हो मध्याह्न में राग मधुमालती गाने या सुनने से उसमे राहत मिलती है। सुबह के राग अलग, शाम के अलग रात्रि के अलग है और उस काल में उनको गाने या सुनने से कई बीमारियों से मुक्ति मिलती हुई देखी।

ङराग मल्हार को बारिश का राग कहते है। वो सही तरीके से कोई संगीत वाद्यों के साथ गा ले, तो किसी भी मौसम में बारिश आयेगी ही। राग शिवरंजनी , राग मालकौंस, राग कलावती, राग भैरवी, राग यमन, राग काफी, जैसे कई राग वो दादा गुरु से सुनने तथा सीखने मिले थे।ङ इनमे यमन राग बहुत पसंद है मुझे। फिर क्या मुंबई शिफ्ट होना हुआ। वो कक्षाएँ छोड़ना पड़ा और यहाँ मुंबई जैसी नगरी में भी वो तरीके से शिखाने वाले कोई कक्षाएँ नहीं है।

आज के रॉक स्टार अगर शास्त्रीय संगीत के महत्त्व को और उसके आंनद को महसूस करले तो आज भी संगीत के माध्यम से अनेक लोग लाभान्वित हो सकते है। कैंसर जैसी बीमारी पर संगीत का प्रभाव है तो छोटी मोटी बीमारी सरलता से दूर हो उसमे कोई दो राय नहीं। ङआज के मन पसंद फिल्मी गानों से बेशक मुझे खुशी मिलती है पर शांति और सुकुन तो सिर्फ शास्त्रीय संगीत से ही मिल पाता है।तभी आज भी मेरा मन वो गुरु को कई बार नमन और धन्यवाद कहता है साथ मेरी आँखें मुंबई जैसी नगरी में उनके जैसे शिक्षक ढूंढती है।

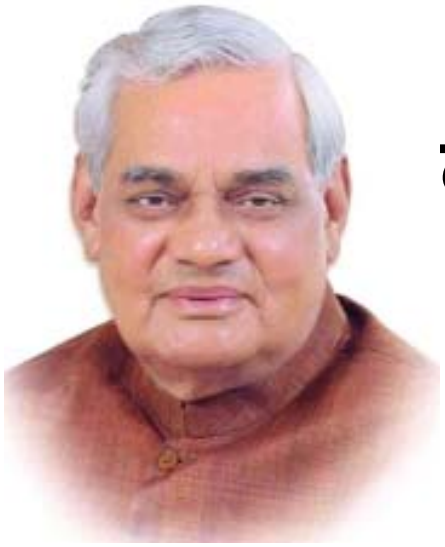

अटलजी को यह कैसी श्रद्धांजलि ?

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

पिछले तीन दिनों में तीन ऐसी घटनाएं हुई हैं, जिन पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के नेताओं को गंभीरता से विचार करना चाहिए। ये तीनों घटनाएं ऐसी हैं, जो अटलजी के स्वभाव के विपरीत हैं। यदि अटलजी आज हमारे बीच होते और स्वस्थ होते तो वे चुप नहीं रहते। बोलते और अपनी शैली में ऐसा बोलते कि संघ और भाजपा की प्रतिष्ठा बच जाती बल्कि बढ़ जाती। पहली घटना। स्वामी अग्निवेश जब अटलजी के पार्थिव शरीर पर श्रद्धांजलि अर्पित करने भाजपा कार्यालय गए तो उन्हें कुछ कार्यकर्ताओं ने मारा-पीटा। धक्का-मुक्की की। कुछ बहनों और बेटियों ने उन पर चप्पलें भी तानीं।

ये लोग कौन हो सकते हैं ? क्या ये रस्ते-चलते लोग हैं ? नहीं, ये सक्रिय कार्यकर्ता हैं। भाजपा के हैं, संघ के हैं। इसीलिए उन्होंने एक संन्यासी पर हाथ उठाया। उन्हें देशद्रोही कहा। उन्हें नक्सलवादी कहा। उन नौजवानों ने अग्निवेशजी की उम्र (79) का भी लिहाज नहीं किया। अटलजी भी अग्निवेशजी की कुछ बातों से सहमत नहीं होते थे। मैं भी नहीं होता हूं। अटलजी की और मेरी भी विदेश नीति के कुछ मुद्दों पर तीखी असहमति हो जाती थी। मैं 'नवभारत टाइम्स' में संपादकीय भी लिख देता था लेकिन वे घर बुलाकर मिठाई खिलाकर मुझसे बहस करते थे। उन्होंने कभी भी किसी अप्रिय शब्द का प्रयोग नहीं किया लेकिन उनकी महायात्रा के समय किसी संन्यासी के साथ ऐसा अभद्र व्यवहार करनेवालों की यदि संघ और भाजपा के नेता भर्त्सना नहीं करेंगे तो क्या यह अटलजी को सच्ची श्रद्धांजलि मानी जाएगी ?

दूसरी घटना !! यह हुई बिहार में मोतीहारी के गांधी विश्वविद्यालय में। एक मूढ़मति प्रोफेसर ने इंटरनेट पर लिख दिया कि "भारतीय फासीवाद का एक युग समाप्त हुआष्ठ अटलजी अनंत यात्रा पर निकल चुके।" उस प्रोफेसर को कुछ कार्यकर्ताओं ने इतनी बुरी तरह से मारा कि वह बेचारा अस्पताल में पड़ा हुआ है। जाहिर है कि उस प्रोफेसर की यह टिप्पणी नितांत मूर्खतापूर्ण थी लेकिन अटलजी इसे सुनते तो वे ठहाका लगाकर कहते कि वाह, क्या बात है ? उसे तो नोबेल प्राइज दिलवाइए ! तीसरी बात !!! नवजोत सिद्धू के इमरान खान की शपथ में शामिल होने और पाक सेनापति बाजवा से गल-मिलव्वल को भाजपा और हमारे कुछ टीवी चैनलों ने इतना बड़ा मुद्दा बना दिया कि यह बहस हाशिए में चली गई कि इमरान से कैसे निपटा जाए।

मुझे खुशी है कि दो-तीन चैनलों के उग्र एंकरों ने मेरे हस्तक्षेप के बाद अपनी पटरी बदल ली। जब देश के बड़े-बड़े नेता विदेशी विभूतियों से मिलते वक्त उनके गले पड़ने से नहीं चूकते तो बेचारा सिद्धू क्या करता ? उसने भी नकल मार दी। अभी तक तो वह गलेपड़ू नेता का ही चेला था। सिद्धू 12 साल तक भाजपा के सांसद रहे। वे अभी डेढ़–दो साल पहले ही कांग्रेस मे शामिल हुए है।

हिंदी प्रचार हेतु जिला स्तर पर नियुक्त होंगे भाषासारथी

इंदौर। हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए सक्रियता से कार्यरत मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं हस्ताक्षर बदलो अभियान से भारतीय हिन्दीभाषियों को जोड़ने के उद्देश्य से सम्पूर्ण भारत में भाषासारथी बनाये जाएंगे। इस माध्यम से हिंदी को जन-जन तक पहुँचाया जाएगा। यह जानकारी संस्थान की राष्ट्रीय महासचिव डॉ प्रीति सुराना ने पत्रकारवार्ता में दी।

उन्होंने बताया कि यह फैसला संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अर्पण जैन 'अविचल' के निर्देशानुसार लिया गया है जिसमें भारत में हिंदी को स्थापित करने के लिए ग्राम, नगर प्रान्त के साथ-साथ प्रथम चरण में राज्य और जिला स्तर पर भाषासारथियों को नियुक्त किया जाएगा। भाषासारथियों का दायित्व होगा कि वे हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए जुटकर हिन्दी प्रचार-प्रसार करे, हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करे, हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को आय दिलवाने में मदद करें, हिन्दी के प्रचार हेतु अपने क्षेत्र में हिन्दी प्रेमियों का समुच्चय बनाकर प्रतियोगीताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करें। हर जिले से कम से कम एक हिन्दीप्रेमी सक्रीय व्यक्ति जो स्नातक या परा स्नातक भाषा सारथी बनने के लिए अपना आवेदन ईमेल से कर सकता है, साथ ही संस्थान के अंतरताने (वेबसाइट) पर उपलब्ध ऑनलाइन प्रक्रिया के माध्यम से भी आवेदन कर सकते है। इस संबंध में केंद्रीय इकाई से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। जिला स्तर पर चुने जाने वाले लोगों को मातृभाषा उन्नयन संस्थान द्वारा हिंदी सेवा और कार्यकलापों के संचालन हेतु प्रशिक्षण दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त हिंदी प्रचार हेतु संस्थान व्याख्यान माला व शिविर भी आयोजित करेगी। भाषा सारथियों के माध्यम से आदर्श हिन्दी ग्राम निर्माण का कार्य भी किया जायेगा जिसका लक्ष्य भारत में स्वभाषाओं के अस्तित्व को बचाने के साथ साथ हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाना है।

एकाकीपन और गुमनामी झेल रहे प्रख्यात साहित्यकार 'महरूम' !

-कमलेश कमल

मोबाइल पर एक संदेश मिलता है : 'बीमारी, वृद्धावस्था ,असहायता और एकाकीपन के कारण आपके पास बैठ बतियाने की ललक अधूरी रह जाती है !' - इस संदेश को किसी बूढ़े की बुढ़भस समझने की भूल नहीं कर सकता था मैं ।

यह तो हिंदी साहित्य के एक वटवृक्ष की पीड़ा है । संदेश भेजने वाले कोई अन्य नहीं, देवेंद्र पाठक महरूम हैं ,जिनकी आठ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं , दुष्यंत कुमार सम्मान सहित कई सम्मान कटनी के जिनके घर के एक कोने में अदब से सजे हैं ।

दलित लेखन के हो-हल्ले से पहले ही 1986 में 'अदना सा आदमी: एक दलित का उपन्यासात्मक रिपोतार्ज' पुस्तक चर्चित हो चुकी थी । सारिका , अन्यथा, ज्ञानोदय से आकाशवाणी तक जिनकी कविताओं और गजलों की धूम रही , आज उनकी आवाज में एक व्यथा थी ,जो सीधे मेरे अंतर्तम में उतर रही थी ।

40 वर्षों तक हजारों छात्रों को अपने संतान की तरह मानने वाले सेवानिवृत्त शिक्षक ' महरुम' आज वृद्धावस्था की दहलीज पर खराब स्वास्थ्य के कारण उन चेहरों को याद करते हैं, जिन्हें देखकर कभी कहा करते थे : 'कौन कहता है कि मैं निस्संतान हूँ , तुम सब मेरे बच्चे हो !'

विनीत स्वर में मैं उन्हें कहता हूँ कि मातृभाषा संस्थान की तरफ से मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ ? बड़े ही संयत स्वर में वे कहते हैं, ' तुमसे बात करने की लालसा थी, वह पूरी हो गई ष्ठऔर कुछ नहीं चाहिए । तुम्हें हिंदी के लिए काम करते देख अपनी जवानी याद आती है ।'

मैं भी विह्वल होकर कहता हूँ : 'मैं और अर्पण जैन आपके बच्चे ही तो हैं । आपकी हिंदी सेवा के लिए हम कृतज्ञ हैं !'

शायद रो पड़े हैं वे ! कहते हैं - 'तुम्हारी माई का मोतियाबिंद बढ़ गया है ष्ठपैसे की कमी नहीं हमें ष्ठ..बस बेटा.. यह अकेलापन सालता है ।'

हमारे बीच एक चुप्पी पसर जाती है । फिर, मैं ही अनायास पूछ बैठता हूँ - 'साहित्यिक समारोहों, कवि सम्मेलनों में अब क्यों नहीं जाते आप ? थोड़ा मन बदलेगा !'

काँपते पर थोड़े ऊँचे स्वर में वे कहते हैं : 'कवि सम्मेलनों पर कोफ़्त है मुझे ष्ठकोई स्तर ही नहीं । चंद ही मिनटों में पाकिस्तान को नेस्तनाबूद कर देते हैं ,और उसके बाद जाम छलका कर और भी सिद्ध कवि बन जाते हैं।'

सोचता हूँ कि हिंदी के इस योद्धा को आज के हालात पर दुःख क्यों न हो ? ये वही तो हैं जिन्होंने अंग्रेजी के शब्द तो दूर की बात, अंग्रेजी के अंकों तक को स्वीकार नहीं किया । ..ये वही हिंदी शिक्षक हैं, जिन्होंने विद्यालय की उपस्थिति पंजिका में अंग्रेजी में ज र्यी लगाने से अस्वीकार कर दिया था और धन या ऋण चिह्न लगाते रहे ।

वक्त-वक्त की बात है। किसानों, मजदूरों की कविता लिखने वाले महरूम 2012 से सर्वाइकल से परेशान हैं। कभी इन्होंने लिखा था: 'मेहनतकशों का जिस्म पसीने की नदी है , पलता है जिसमें जोंक सा एक सेठ का चेहरा ।' आज कदाचित अपने बारे में ही ये लिखते हैं : 'हैं करोड़ों चेहरे पर मसिन्ये लिक्खे हुए ।

थोड़ी सी ग़ैरत हो गर 'महरूम' पढ़कर देखिए ।।' मातृभाषा उनन्यन संस्थान इनके साथ खड़ा है !

'जन आशीर्वाद' और 'पोल खोल' के जरिए राजपथ की तलाश

-अरुण पटेल

महाकाल की नगरी उज्जैन में पूजा-अर्चना कर भगवान के आशीर्वाद के साथ 'नया मध्यप्रदेश नयी रफ्तार, शिवराज सिंह अबकी बार' का लक्ष्य सामने रखकर जन आशीर्वाद यात्रा को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमित शाह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना कर दिया। इसके साथ ही भाजपा ने 2018 की फतह के अभियान का शंखनाद भी कर दिया। इसके एक दिन पूर्व ही प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ की ओर से महाकाल को एक पत्र पूरे विधि-विधान, पूजा-अर्चना व मंत्रोच्चार के बीच समर्पित करते हुए यह अपेक्षा की गई कि महाकाल अंतर्यामी हैं और हकीकत क्या है वह यह देखें। वर्ष 2013 में शिवराज ने जुलाई माह में ही उज्जैन से जन आशीर्वाद यात्रा प्रारंभ की थी और महाकाल को पत्र लिखकर प्रदेश की जनता से आशीर्वाद मांगा था। उसी तर्ज पर कांग्रेस ने भाजपा सरकार के कुशासन से मुक्ति दिलाने की प्रार्थना महाकाल से की है। भाजपा और कांग्रेस दोनों के लिए ही 2018 के चुनाव में जीत हासिल करना करो या मरो का प्रश्न बन गया है और इसी तर्ज पर कोई भी किसी से पीछे नहीं रहना चाहता। प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस के बीच तू डाल-डाल मैं पात-पात का खेल चल रहा है। इसमें कौन किस पर भारी पड़ेगा या महाकाल का आशीर्वाद किसके साथ है, यह तो आने वाला समय ही बतायेगा। कांग्रेस ने 18 जुलाई को उज्जैन के तराना से पोल खोल यात्रा प्रारंभ करने का ऐलान कर दिया है जिसमें सीधे-सीधे शिवराज सरकार की घेराबंदी करते हुए प्रदेश कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष जीतू पटवारी मुख्य भूमिका में नजर आयेंगे।

2018 के विधानसभा चुनाव में चुनावी मुकाबला काफी घमासान होने वाला है जिसमें साइबर योद्धाओं से लेकर हर प्रकार के संसाधनों का भाजपा और कांग्रेस दोनों ही इस्तेमाल करने में कोताही नहीं बरतेंगी। जन आशीर्वाद यात्रा के माध्यम से जहां चौथी बार सरकार बनाने की दिशा में सधे हुए कदमों से शिवराज चुनावी समर में कूद चुके हैं तो कांग्रेस भी पोल खोल अभियान के सहारे उनकी राह रोक कर अपनी सरकार बनाने का मार्ग प्रशस्त करने की हरसंभव कोशिश कर रही है। इस प्रकार दोनों ही पार्टियां राजपथ की तलाश में अब पूरी तरह से कमर कस चुकी हैं। कमलनाथ पार्टी को बूथ स्तर तक चुस्त-दुरुस्त करने और विभिन्न समाजों के लोगों को साधने के साथ ही भाजपा विरोधी मतों का विभाजन रोकने की रणनीति में व्यस्त हैं तो वहीं चुनाव प्रचार अभियान समिति के अध्यक्ष ज्योतिरादित्य सिंधिया विभिन्न स्तरों पर प्रचार अभियान को गति देने की रणनीति बनाने के साथ ही लोगों से मिलने के लिए निकल पड़े हैं। खजुराहो, रीवा और उसके बाद शहडोल में वे ऐसा कर चुके हैं और उनका यह सिलसिला निरन्तर आगे भी जारी रहेगा।

जन आशीर्वाद यात्रा शिवराज का ऐसा मास्टर स्ट्रोक है जिसका मकसद पिछले 15 सालों और खासकर पिछले एक साल में समाज के विभिन्न वर्गों एवं किसानों, दलितों के बीच जो असंतोष बढ़ते-बढ़ते बड़े पहाड़ की शक्ल ले चुका है, उस माहौल को पार्टी के पक्ष में सकारात्मक मोड़ देना है। इस यात्रा का उपयोग वे एक ऐसे ब्रह्मास्त्र के रूप में करने जा रहे हैं जिससे असंतोष के पहाड़ को पार कर भाजपा की राह पांच साल के लिए और आसान बनाई जाए। कांग्रेस ने भी इस रणनीति को भांपते हुए जन आशीर्वाद यात्रा के पीछे-पीछे पोल खोल यात्रा शुरू करने का ऐलान कर दिया है जिसे हरी झंडी कमलनाथ दिखायेंगे। शिवराज भावी भविष्य की रूपरेखा और उनके नेतृत्व में जो जन कल्याणकारी और सामाजिक सरोकारों से जुड़ी योजनाओं के जरिए विकास के पथ पर प्रदेश अग्रसर हुआ है उसे अपनी विशिष्ट एवं लोगों के गले उतरने वाली शैली में प्रचारित कर जनता का दिल जीतने की हरसंभव कोशिश करेंगे। कांग्रेस ने इस यात्रा का विरोध नहीं करने का निणय्र किया है और वह कहीं भी मुख्यमंत्री की यात्रा के दौरान व्यवधान पैदा नहीं करेगी। लेकिन जहां-जहां शिवराज की सभा होगी वहां-वहां कांग्रेस पोल खोल यात्रा के तहत सभा करेगी और वह जिसे हकीकत समझती है उसे मतदाताओं को बतायेगी। शिवराज यात्राओं में सरकार की उपलब्धियां गिनायेंगे तो कांग्रेस यात्रा में नाकामियों को गिनाते हुए बढ़ते हुए भ्रष्टाचार की पोल खोलेगी। इसके साथ ही वह किसानों के मुद्दे को भी उठायेगी। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी ने कांग्रेस की सरकार बनने के बाद किसानों के कर्ज माफ करने का जो वायदा किया है उस संकल्प को भी दोहरायेगी।

कांग्रेस की पोल खोल यात्रा की जिम्मेदारी चारों कार्यकारी अध्यक्षों जीतू पटवारी, बाला बच्चन, रामनिवास रावत और सुरेश चौधरी को सौंपी गयी है। शिवराज जो सकारात्मक माहौल बनायेंगे उसके मुकाबले के लिए जीतू पटवारी मुख्य किरदार की भूमिका में रहेंगे, क्योंकि एक तो वे युवा कांग्रेस के अध्यक्ष रहे हैं और दूसरे उनकी भाषण देने की शैली आक्रामक है। पटवारी पोल खोल अभियान के तहत शिवराज सरकार की उपलब्धियों पर घड़ों पानी फेरने के उद्देश्य से महिला

अत्याचार, ध्वस्त होती कानून व्यवस्था, किसानों की बढ़ती हुई आत्महत्याओं के मामले एवं किसानों की अन्य समस्याओं के साथ ही बेरोजगारी के मुद्दे पूरी आक्रामकता से उठाते हुए असंतोष के माहौल को कांग्रेस के पक्ष में सकारात्मक बनाने की कोशिश करेंगे। युवक कांग्रेस की पूरी टीम के साथ प्रदेश युवा कांग्रेस अध्यक्ष कुणाल चौधरी की बतौर संयोजक इस यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका होगी। शिवराज की सभा में हर विधानसभा के अलग-अलग मुद्दे होंगे और वहां किए गए कार्यों का भी वे उल्लेख करेंगे तो कांग्रेस के भी हर विधानसभा क्षेत्र में कुछ सुनिशि्चत मुद्दे होंगे और पिछले 15 सालों में भाजपा के उस क्षेत्र के प्रभावशाली नेताओं के रहन-सहन में जो बदलाव आया है और अचानक सम्पनन्ता आई है उसकी पोल खोलने के लिए उसने भी काफी तैयारी कर ली है। जन आशीर्वाद यात्रा इस मायने में काफी महत्वपूर्ण मानी जा रही है कि एक तो 2008 और 2013 के विधानसभा चुनाव के पूर्व शिवराज ने महाकाल के आशीर्वाद के बाद जन आशीर्वाद यात्राएं निकाली थीं, जिसके परिणाम भाजपा के लिए काफी अच्छे व फलदायी रहे थे। शिवराज 55 दिन की इस यात्रा के दौरान 230 विधान सभा क्षेत्रों में जाएंगे और लगभग कुल मिलाकर 700 सभाएं करेंगे। भाजपा को भरोसा है कि इस बार भी उसे अच्छे परिणाम मिलेंगे, क्योंकि बतौर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और चुनाव अभियान एवं प्रबंधन समिति के अध्यक्ष के नाते केंद्रीय पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री नरेन्द्र सिंह तोमर की वह जुगलजोड़ी फिर से प्रदेश में सक्रिय हो गयी है जो भाजपा के लिए लकी और चुनाव जिताऊ रही है। देखने की बात यही होगी कि कांग्रेस इस जुगलजोड़ी का तोड़ निकालने की कैसी प्रभावशाली रणनीति बनाती है।

और यह भी

कांग्रेस यदि गुटबंदी से ऊपर उठकर जीतने योग्य मैदानी प्रत्याशियों को चिन्हित कर उन्हें टिकिट दे देती है तो वह आधी लड़ाई जीत लेगी। अपनी पिछली कमजोरियों को कांग्रेस ने चिन्हित कर लिया है और इस बार प्रत्याशी चयन की प्रक्रिया में बड़ा बदलाव किया गया है। प्रत्याशी चयन के लिए गठित की गयी स्क्रीनिंग कमेटी के अध्यक्ष मधुसूदन मिस्त्री दो अन्य सदस्यों के साथ दो दिन तक भोपाल में जमे रहे और उन्होंने मैदानी स्तर पर जानकारियां जुटाईं। पहले दिल्ली में बैठकें होती थीं और नेता आपस में टिकटों की बंदरबांट कर लेते थे। मिस्त्री ने साफ कर दिया है कि इस बार वे 2013 की गलतियां नहीं होने देंगे और अपने पास एक-एक टिकट का हिसाब भी रखेंगे। वे अपने साथ डायरी रखे हुए हैं जिसमें यह उल्लेख है कि किस-किस नेता ने टिकट दिलाने के लिए 2013 में क्या-क्या दावे करते हुए कुछ समाजों के बढ़े-चढ़े आंकड़े बताये थे, इस प्रकार जिन्होंने टिकट लिए थे वे बाद में भारी मतों से हार गये। 2013 के चुनाव की गलती न होने देने की बात वे इसलिए कर रहे हैं क्योंकि 2008 में कांग्रेस के 71 विधायक जीते थे जबकि 2013 में टिकटों की बंदरबांट होने के कारण यह संख्या 58 पर आकर टिक गयी थी। यही कारण है कि कांग्रेस इस बार विपरीत परिस्थितियों में जीतने वाले अपने सभी विधायकों को टिकट देने की परम्परा से हटकर डेढ़ दर्जन से अधिक मौजूदा विधायकों की टिकट काटने जा रही है, चाहे वे कमलनाथ, ज्योतिरादित्य सिंधिया, दिग्विजय सिंह से जुड़े हुए ही क्यों न हों। इस बार टिकट केवल उन्हें ही दिए जायेंगे जिनकी जीतने की संभावना तीन अलग-अलग एजेंसियों द्वारा कराये गये सर्वे में सामने आयेगी।

अलविदा : महाकवि 'नीरज'

-डॉ. स्वयंभू शलभ

शोखियों में घोला जाय फूलों का शबाब
उसमें फिर मिलाई जाय थोड़ी सी शराब
होगा वो नशा जो तैयार वो प्यार है प्यार

एक कवि जिसने दुनिया को प्यार का सूत्र दिया। दुनिया भी उसे उतने ही प्यार से आज श्रद्धांजलि दे रही है।

उनके साथ जुड़े किन किन प्रसंगों को याद करूं।80 के दशक में 82 से 85 के बीच जब हिन्दी साहित्य में मेरी चार किताबें प्रकाशित हुई थीं उसी दौरान कविश्री से संपर्क बना था। उनके व्यक्तित्व और विनम्रता की क्या मिसाल दूं।साहित्य के आकाश में जगमगाते इस प्रकाश पुंज ने उस छात्र को प्रोत्साहित किया जो अभी शब्दों को बाँधने की कला सीख रहा था। पत्रों के माध्यम से उनके मार्गदर्शन ने मेरे लेखक को विकसित होने में बड़ी भूमिका निभाई। कभी उनके सभी पत्रों को आपसबों के साथ साझा करूंगा।

फिर एक अवसर था जब अक्टूबर 2015 में बेटे सौरभ के इंजीनियरिंग कॉलेज ग्वालियर में उनका आगमन हुआ। उन्हें सुनने और उनका आशीर्वाद लेने के साथ मेरे साथ जुड़ी उन स्मृतियों को फिर से जीवंत बनाने का सौभाग्य बेटे सौरभ को प्राप्त हुआ।

चलिये कविश्री की इस कविता को गुनगुनाते हुए उस महान आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करें।

छिप छिप अश्रु बहाने वालो! मोती व्यर्थ बहाने वालो!
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता।

अनुभूति

बेनकाब चेहरे हैं, दाग बड़े गहरे हैं
टूटता तिलिस्म आज सच से भय खाता हूं
गीत नहीं गाता हूं
लगी कुछ ऐसी नज़र बिखरा शीशे सा शहर
अपनों के मेले में मीत नहीं पाता हूं
गीत नहीं गाता हूं
पीठ मे छुरी सा चांद, राहू गया रेखा फांद
मुक्ति के क्षणों में बार बार बंध जाता हूं
गीत नहीं गाता हूं

-स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी

अदिति रूसिया

बारिश

आज सुबह से ही मूसलाधार बारिश हो रही थी । बच्चे घर पर ही थे । दोपहर का समय था बच्चों के साथ रिया बैठी बारिश का आनंद ले रही थी । अचानक ही किसी गहरे ख़्याल में खो सी गई । आँखो से अनायास ही आँसू छलक पड़े ।रितु ने पूछा माँ माँ कहाँ खो गई !

कुछ नहीं बेटा यूँ ही । नहीं माँ कुछ तो है बोलो न ।

बेटे अनय ने कहा ज़रूर नाना जी के विषय में ही सोच रही होंगी । क्यों हैना माँ सही कहा न । रिया मुस्कुराए बिना न रह पाई बोली हाँ ! कितने अच्छे से समझता है तू अपनी माँ को । फिर यादों में खोई रिया ने अपने पापा के बारे में बताना शुरू किया ।

जब हम छोटे थे न और ऐसी बारिश होती तो तुम्हारे नाना शुद्ध घी में फूटे चने सिकवाया करते और सोफ़े पे बैठ कर पानी का आनंद लिया करते थे ।फिर हम सभी अड्डु खेला करते थे । जब हमारी दादी आतीं तो वो और नाना जी मिलकर बहुत चिटिंग किया करते थे । बचपन में हमलोगों ने बहुत खेल खेले । आजकल कोई नहीं खेलता ।

हमलोग एक लोहे की सलाख़ लिया करते थे जैसे ही पानी बंद होता हम सभी मोहल्ले के बच्चे इकट्ठा हो लोहे की छड़ को दूर फेंकते जिसकी जितनी दूर जाती वो जीत जाया करता । जब पानी गिरता तो घर पर ही कौड़ी और पत्ते खेला करते थे । साथ ही गरमा गरम भजिए ,फूटे चने , मूँगफली खाते । उस समय कुछ अलग ही माहौल हुआ करता था । आजकल तो किसी के पास इतना वक़्त ही नहीं होता ।जमाना हो गया बेटा पता नहीं याद भी नहीं है हमने वो चने कब खाए थे और कब ये खेल खेले थे । नाना नरम नरम भुट्टे लाते कढाई में कोयला सिलगाते और हमें सेंक कर दिया करते थे ।

रितु उठी उसने कहा चलो माँ आज हम नाना जैसे ही चने बनाते हैं । पापा भी दफ़्तर से आते होंगे फिर सब मिलकर आज चने खाएँगे और पत्ते खेलेंगे । भैया तुम भाभी को भी बुला लाओ । भाभी से कहना माँ के लिए गरमा गरम पकौड़े बना लाए। धत पगली ! पापा की डाँट खानी है क्या ? क्यों भाई क्याहुआ ! कुछ नहीं पापा बताती हूँ , कहते हुए रितु ने सारी बातें रमेश को बता दी । चलो भाई नीता पत्ते लेकर आओ आज हम सभी साथ मिलकर पकौड़े और पत्तों का आनंद लेंगे ।

प्राकृतिक बरसात ही अच्छी लगती है तुम्हारी माँ की आँखे तो बस मुस्कुराती हुई ही अच्छी लगती हैं।

शक्ति

पूनम (कतरियार)

तुम्हे तो सौपा था
केवल मृदुल भाव ही
पुरुषत्व के दम्भ मे जलाने क़ो नही।
तुम भूल गए मेरा सतीत्व
तुम भूल गए मेरा अस्तित्व
अब खोल 'पौरुष' अपनी आँखें
और देख मेरा विशाल रूप।
मैं केवल एक गुलाब नही
मुझमे केवल पराग नही
मैं केवल एक देवी नही
मुझमे केवल वरदान नही।
गुलाब मे कांटे भी हैं
वो कभी चुभोते भी है।
देवी मे अक्षय शक्ति है
देती वह अभिशाप भी है।
मैं सृष्टि की माता 'चेतन'हूँ
मुझमे स्थूलता का 'जड़ 'नही
मैं आ रही तुम्हारे समकक्ष
देख मेरे पाँव मे अब कोई जंजीर नही
मैं तोड़ चुकी तुम्हारा बंधन
मैं ' जाग' चुकी,तुम सोये हो
अबला-अबलाष्ठकह-कहकर
अहंकार मे खोये हो
तुम यूँ ही पड़े रह जओगे
मैं आसमाँ छू जाऊँगी
तुम देखते रह जाओगे
मैं अपना परचम लहराऊँगी!

होमो सेपियन्स

मुकेश दुबे

दो दिन की थका देनेवाली यात्रा के बाद पहियों से जमीन पर उतरना विलक्षण अनुभव था। शरीर में रेल के तीसरे दर्जे की महक समा गई थी। अभी तक कंपन महसूस हो रहा था। गनीमत है स्लीपर में टिकट कन्फर्म हो गई थी। आमने सामने छः बर्थ थीं। उसकी सबसे ऊपर थी दाहिनी तरफ़। बाईं और सबसे नीचे थी मल्लिका। घुंघराले, घने काले बाल, गहन श्यामल वर्ण, तीखे नैन नक्श और माथे पर चंदन का टीका दे रहा था परिचय उसके तमिल होने का। अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी बोल लेती थी। संप्रेषण की युक्ति है जब भाषा तब हम यह क्यों देखने लगते हैं अमुक की भाषा क्या है? यह उतना ही महत्वपूर्ण है जितना हमारा किसी के आराध्य, धर्म व रहन-सहन की जिज्ञासा का होता है हमारी दृष्टि में। पहला पृथक्करण धर्म से, फिर बोली से और आगे लंबी फेहरिस्त है इंसानियत के वर्गीकरण की। किसी के कह देने से भला हम होमो या सेपियंस कैसे हो सकते हैं ? (होमो सेपियन्स, आधुनिक व विकसित मानव का लैटिन या वैज्ञानिक नाम है)

हम आर्य से न जाने क्या क्या हुए बस न हो सके तो होमो सेपियंस। आदि मानव से शुरू होकर अंतिम मानव की सतत यात्रा में अनगिनत मुकाम आये मगर यात्रा जारी है।

मल्लिका से परिचय मद्रास में समुद्र के किनारे हुआ था। वो वहाँ चोरी छिपे शराब और जिस्म बेचती थी। एक बार पुलिस के हत्थे चढ़ी। सबकुछ वही रहा बस चोरी छिपे शब्द विलोपित हो गया। छिपा था पुलिसियों का हफ़्ता और चोरी रह गई थी मल्लिका के उस हफ़्ते में संसर्ग में आये पुरुषों की संख्या में। वो जानबूझकर कम करके बताती थी दरोगा को। हफ़्ता तो उस संख्या से ही तय होता था। और जो भी है यह बात पुलिस विभाग की नेकी ही है कि विश्वास करता था दरोगा उसकी बताई संख्या पर और तयशुदा अंक से गुना कर हिसाब ले लेता था।

उस दिन मल्लिका रिझाने वाले अंदाज में बुला रही थी, पता नहीं क्या था उसके आमंत्रण में जिसने राघवेंद्र को आकर्षित किया था उसके प्रति। बातचीत में जाहिर हो गया था वो क्या है। बात यहीं समाप्त हो जाना चाहिए थी। राघवेंद्र ने लेकिन इस बात को खत्म नहीं होने दिया था। उसने अपनी मार्केटिंग प्रतिभा से मल्लिका के बारे में काफी कुछ जान लिया था उस रात समन्दर के किनारे चट्टान पर बैठकर। मल्लिका अभ्यस्त नहीं थी पीने की। कभी कभार बीयर पी थी। आज व्हिस्की की तरंग में या किसी होमो सैपियंस के सानिध्य में उसके 19 साल जो बर्फ से जमे थे, पिघल गये थे। राघवेंद्र उससे कल फिर मिलने का वादा कर चला गया था। पूरी कीमत दी थी उसने जो मल्लिका ने बताई थी उसको। अगले कुछ दिन यही चलता रहा। राघवेंद्र की समझ में एक बात नहीं आ रही थी। लोग कहते हैं स्त्री किसी राज को दबा नहीं सकती। मल्लिका से मिलने के बाद उसने भरसक कोशिश की मगर वो जान नहीं सका था मल्लिका की इस दलदल में उतरने की वजह। नशे की तरंग में भी उसने वही बताया था जो होश में बतलाती थी। हद से ज्यादा कुरेदने पर चुप हो जाती थी या मुस्कुराती थी। जब वो मुस्कुराती थी उसकी दंत पंक्ति की झलक अँधेरे में बिजली सी कौंध जाती थी। तब देखा है राघवेंद्र ने उसकी आँखों में उफनती उदासी को। सामने समन्दर की लहरों का आवेग कम लगता था उस समय उसकी आँखों में मचलती लहरों के सामने।

दरोगा घाघ ही नहीं हद दर्जे का नीच भी था। मल्लिका के बारे में उसके पास खबरें पहुँच रही थीं। उसे फिक्र होने लगी थी आमदनी के मुंडेर से फाख्ता के उड़ने की। उसने पुलिसिया अनुभव आजमाया। राघवेंद्र की सारी जानकारी उठवा ली। शरीफ आदमी का जब पुलिस से सामना होता है, पुलिस वाला जानता है किस तरह काबू करना है उसकी इंद्रियों पर। और इसका आसान तरीका है उस आदमी का मानसिक बलात्कार। चुनिंदा शब्दों में उसकी माँ-बहन का जिक्र करो। यह तो कुछ भी नहीं है, हमारी हद हमको भी नहीं मालूम जैसे जुमले फेको और कुछ देर बाद वो शरीफ कपड़ों में भी नंगा खड़ा अपनी सलामती की हर कीमत देने विवश हो जाता है। यह फर्स्ट डिग्री टॉर्चर है। यह अपराधियों पर प्रयुक्त नहीं है। यह बात हवालदार से दरोगा तक जानता है। शायद उसके ऊपर वाले भी।

राघवेंद्र अपनी और अपनी प्रतिष्ठित कम्पनी की साख बचाने के लिए तैयार हो गया था दरोगा की बात मानने के लिए। उसने पूरे हफ़्ते का जुर्माना चुकाकर खुद को बचा लिया था। अभी मल्लिका को बचाना बाकी था।

बड़ी मुश्किल से तैयार हुई थी मल्लिका मद्रास छोड़ने के लिए। दरोगा को किसी बात की भनक न लगे, तीसरे दर्जे में टीसी को पैसे देकर दो बर्थ का जुगाड़ किया था। अब 900 किलोमीटर दूर आने के बाद राघवेंद्र को तसल्ली हुई थी लेकिन मल्लिका देख रही थी हैरानी से। पहली बार निकली थी अपने परिवेश के बाहर। जगह नई, लोग नये, बोली अलग, पहनावा जुदा। राघवेंद्र ने अपने बैग के साथ उसकी पेटी उठाई और चल दिया पुल की तरफ़। मल्लिका उसके पीछे थी। सीढ़ियाँ जिस जगह खत्म हुईं दोनों तरफ़ भीड़ जा रही थी। राघवेंद्र ने पीछे देखा। मल्लिका की आँखों में सवाल साफ़ दिख रहा था। उसने सामान किनारे रखा। मल्लिका की बाँह पकड़ कर एक ओर कर पीछे के यात्रियों को जगह दी। मल्लिका यह भोपाल है। मध्यप्रदेश की राजधानी। अब यहाँ तुमको कोई नहीं जानता मेरे सिवा। आज तक तुमने अपने बारे में कुछ नहीं बताया। मुझे जानने की जरूरत भी नहीं। अगर तुम भूल गई हो अतीत अपना, अच्छा है। मैं चाहूँगा वो कभी याद नहीं आये। ध्यान से देखा था राघवेंद्र ने उसकी आँखों में।

मल्लिका ने कोई जवाब नहीं दिया राघवेंद्र की बात का। उसके चेहरे पर भी कोई उथल पुथल नहीं थी। वो जानती थी पुल के दोनों तरफ़ रास्ते हैं। क्या पता राघवेंद्र किस तरफ़ जायेगा। पता नहीं किस तरफ़ होमो सेपियंस है और किस तरफ दरोगा और बीच वाले लोग। अब उसने अपना बक्सा उठा लिया था। राघवेंद्र एक तरफ चल पड़ा था। मल्लिका उसी का अनुसरण कर रही थी। शायद पहचान गई थी आदम की जात को।

केरल के जल प्रलय में तैरती इंसानियत को सलाम

-अजय बोकिल

क्या विडंबना है कि 'देवताओं की अपनी भूमि' ही ईश्वर निर्मित पंचमहाभूतों में से एक जल के तांडव से कराह रही है। जब इस हरे-भरे केरल राज्य में ओणम की तैयारियां जारी थीं, ठीक उसके पहले जल प्रलय ने राज्य में न केवल दस्तक दी, बल्कि त्राहि-त्राहि मचा दी। ओणम, मसाले और कथकली के लिए मशहूर केरल के 14 में से 11 जिले अभी भी पानी में डूबे हुए हैं। चौतरफा तबाही की खबरें हैं। जिस पानी का हर साल 1 जून को केरलवासी बेसब्री से इंतजार करते रहे हैं, उसी पानी ने आज उन्हें बेघर कर दिया है। विनाश के तांडव के बीच राहत की बात केवल इतनी है कि इस भीषण बाढ़ में भी इंसानियत अभी डूबी नहीं है। कुछ देर से ही सही पूरा देश केरल के साथ खड़ा है। मदद के लिए चारों तरफ से हाथ आगे बढ़ रहे हैं। सेना फिर देवदूत की तरह केरल में उतर गई है। इन सबसे बड़ा खुद केरलवासियों का जज्बा है, जो इस आसमानी विपदा से पूरी जिजिविषा के साथ जूझ रहा है।

कहते हैं कि केरल ने इतनी बड़ी जल विभीषिका 1924 के बाद पहली बार देखी है। तब राज्य का मल्ला पेरियार बांध टूटने के कारण ऐसे हालात पैदा हुए थे। केरलवासी आज भी उसे 'बाढ़ 99' के रूप में याद करते हैं। 99 इसलिए कि विपदा का वह साल मलयाली कैलेंडर के हिसाब वर्ष 1099 था। उस प्रचंड बाढ़ में कितने लोग मरे थे, इसका ठीक-ठीक आंकडा उपलब्ध नहीं है। लेकिन बुजुर्गों के मुताबिक मरने वालों की तादाद हजारों में थी।

बहरहाल केरल में आई यह बाढ़ भी कम नहीं है। अधिकृत आंकड़ों के मुताबिक अब तक बाढ़ में 370 लोग अपनी जानें गवां चुके हैं। साढ़े 8 लाख लोग अभी 3 हजार 734 राहत शिविरों में रह रहे हैं। 59 पुल पानी में डूबे हैं। रेल और सड़क मार्ग छिन्न-भिन्न हो चुके हैं। फसलें बरबाद हो चुकी हैं। अपने ही घर तालाब में तब्दील हो चुके हैं। केरल को इस विभीषिका से उबरने में काफी वक्त लगेगा और इसके लिए काफी पैसा भी चाहिए। केरल के मुख्यमंत्री पी. विजयन के अनुसार प्रारंभिक अनुमान के मुताबिक केवल मुख्य मार्गों की मरम्मत के लिए साढ़े 4 हजार करोड़ की रू. की दरकार है। हालांकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी बाढ़ पीडित़ केरल का हवाई दौरा किया और केन्द्र ने तत्काल 5 सौ करोड़ रू. दिए भी, लेकिन महाविनाश को देखते हुए ये नाकाफी है। वैसे अन्य राज्यों ने भी मदद का हाथ आगे बढ़ाया है। कई स्वयंसेवी संगठन और निजी संस्थाएं भी सहायता कर रही है। बावजूद इसके लिए राजनेता यहां भी राजनीतिक हेराफेरी से बाज नहीं आ रहे।

लेकिन मदद तो मदद है। किसी भी विपदा का सामना पहले स्वयं व्यक्ति को या राज्य को ही करना पड़ता है। इस मायने में केरलवासी एक नई इबारत लिख रहे हैं। केरल के एक मछुआरे जैसल केपी सोशल मीडिया पर छाए हुए हैं। राज्य के त्रिशूर माला और मल्लाप्पुरम के वेंगरा में मछुआरों ने रेस्क्यू ऑपरेशन टीम बनाई है। मलाप्पुरम स्थित तनूर में बाढ़ में फंसी महिलाओं को सुरक्षित निकालने के लिए एनडीआरएफ की टीमों ने नाव का इंतजाम किया और वे पीड़ितों तक पहुंची भी, लेकिन नाव तक पहुंचने और उसमें चढ़ने के लिए महिलाओं के पास कोई सहारा नहीं था। यह देखकर मछुआरे जैसल उन महिलाओं की मदद को आगे बढ़े और बाढ़ के पानी में ही पत्थर बनकर खड़े हो गए। इसके बाद एक-एक करके महिलाएं उनकी पीठ पर चढ़कर नाव में बैठने में सफल हो पाईं। जैसल के इस जज्बे को देखकर एनडीआरएफ की टीम ने भी उनकी हौजला अफजाई की। केरल के मछुआरों के समूह ने अब तक बाढ़ में फंसे हजार लोगों को बचाया है। केरल के मुख्यमंत्री पिनरई विजयन ने उन्हें 'केरल मिलिटरी फोर्स' की संज्ञा दी है। बड़े ही क्यों बच्चे भी इंसानियत को बचाने में पीछे नहीं हैं। तमिलनाडु के विलुपुर्रम की रहने वाली नन्ही अनुप्रिया ने अपनी गुल्लक के 9 हजार रुपए केरल बाढ़ राहत कार्य के लिए दान कर दिए। उसे लगा कि इस रकम से साइकल खरीदने से ज्यादा जरूरी बाढ़ पीडित़ों को बचाना है। उसके इस जज्बे से साइकिल निर्माता हीरो कंपनी के मालिक भी अभिभूत हुए। कंपनी के मालिक पंकज मुंजाल ने अनुप्रिया को अपनी तरफ से साइकिल गिफ्ट करने का ऐलान कर दिया। इसी क्रम में एक केरल की एक कॉलेज छात्रा हनान हामिद, जिसे कॉलेज में पढ़ाई के साथ साथ मछली बेचने को लेकर सोशल मीडिया पर ट्रोल किया गया था, ने भी बाढ़ पीडित़ों के लिए डेढ़ लाख रुपये इकट्ठे किए हैं। वह यह रकम राहत कार्य के लिए दान करना चाहती है। नेवी के अफसर पायलट कमांडर विजय वर्मा ने जिस जांबाजी के साथ बाढ़ में फंसी दो महिलाओं को बचाया, उसके बदले लोगों ने उस मकान की छत पर ही लिख दिया- थैंक्स। इससे ज्यादा वे कर भी क्या सकते थे। क्योंकि सब कुछ तो डूब गया है। वो तस्वीरें भी हजारों आंखों को नम कर गईं, जिनमें मांएं अपने बच्चों को वापस सुरक्षित पाकर मानो पूरी दुनिया ही पा गईं। वे दृश्य भी कम प्रेरक नहीं है, जब बाढ़ पीडित़ एक से एक मिलकर ग्यारह की तरह अपनी और दूसरों की मदद करते दिखाई पड़े।

लुब्बो लुआब यह कि कुछ भी हो, इंसानियत को जिंदा रखना है। तमाम भिन्नताओ और मतभेदों के बाद भी जिंदा रखना है। हर हाल में जिंदा रखना है। इसी एक जज्बे के साथ केरलवासी हिम्मत के साथ बाढ़ से जूझ रहे हैं। सरकार और प्रशासन अपने ढंग से काम करते हैं। उसमें कई खामियां भी होती हैं। लेकिन इससे जीवन का राग भैरवी में नहीं बदलता। फिर केरल तो वह प्रदेश है, जो 'देवभूमि' होते हुए असुरराज महाबलि को भी श्रद्धा के साथ पूजता है। वह यह झटका भी सह लेगा। चिंता की बात यह होनी चाहिए कि प्राकृतिक विपदाओं की फ्रीक्वेंसी लगातार बढ़ रही है और इसमें ईश्वर का कोप कम, मनुष्य का लालच और प्रकृति के नियमों की अवहेलना ज्यादा है। केरल भी इसका अपवाद नहीं है। कहते हैं कि नाग देवता वासुकि ने अपने 'पवित्र विष' से केरल की नमक से बंजर हो चुकी जमीन को हरे भरे उपवन में बदल दिया था। बाढ़ जैसी भयंकर आपदा से बचने के लिए आज फिर वैसा ही कुछ करने की जरूरत है। है न !

यूएन में हिंदी को दर्जा दिलाने के लिए आगे आया मॉरीशस

कहा- भारत हमारी मां है, बेटे के तौर पर ये हमारा फर्ज

मॉरीशस के मार्गदर्शक मंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ संभाल चुके हैं प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति जैसे शीर्ष पद

पोर्ट लुइस (मॉरीशस). हिंदी को यूएन की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए जारी कोशिशों में भारत को अब मॉरीशस का साथ मिला है। 11वें विश्व हिंद सम्मेलन के समापन के मौके पर मॉरीशस के मार्गदर्शक मंत्री अनिरुद्ध जगन्नाथ ने कहा कि हमारे के लिए भारत मां है और एक बेटे का फर्ज निभाते हुए हम हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बनाने की भारत की कोशिशों का समर्थन करते हैं। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है, जब बाकी भाषाओं की तरह हिंदी को भी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थान मिलना चाहिए।

मॉरीशस के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री दोनों पदों पर रह चुके जगन्नाथ ने कहा कि हिंदी ने मॉरीशस के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में अहम भूमिका निभाई है। विश्व हिंदी सम्मेलन से दोनों देशों के बीच संबध और ज्यादा गहरे हुए हैं। उन्होंने कहा कि जब से उन्होने देश की सत्ता संभाली है, हमेशा हिंदी को आगे बढ़ाने की कोशिश की है। उन्होंने मॉरीशस में विश्व हिंदी मंत्रालय की स्थापना पर भी खुशी जताई।

मॉरीशस को आजादी दिलाने में भारतीयों की अहम भूमिकाः

अनिरुद्ध जगन्नाथ ने कहा कि हमारे पूर्वज मजदूरों की तरह मॉरीशस आए थे। तब उनके पास सिर्फ अपनी भाषा और संस्कृति ही थी, लेकिन अपने खून और पसीने की दम पर उन्होंने अपने परिवारों को पालने के साथ मॉरीशस को आजादी दिलाने में भी मदद की। अगली पीढ़ी भी देश के आगे ले जाने की कोशिशों में है। जिस तरह सूर्य की किरणों को कोई नहीं रोक सकता, उसी तरह मॉरीशस के विकास को भी कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने उम्मीद जताई कि हिंदी सम्मेलन के बाद लोग हिंदी के प्रचार-प्रसार में कोई कमी नहीं छोड़ेंगे। मॉरीशस में भी हिंदी भाषा और संस्कृति का विकास होगा, जिसे युवा पीढ़ी इसे बेहतर तरीके से आगे ले जाएगी।

साभार : दैनिक भास्कर

चमत्कार को नमस्कार-एक अनोखा सच

ऐसा मंदिर जहां घी से नहीं पानी से जलती है ज्योति

आपने तेल से जलते दिए तो बहुत देखें होंगे. लेकिन क्या आपने पानी से किसी दिए को जलते देखा है। जी हाँ , एक ऐसी भी जगह है जहाँ पानी से दिया जलता है।

यह कोई कहानी नहीं है। यह हकीकत है। नलखेड़ा गांव से लगभग 15 किलोमीटर दूर गाड़िया गांव के पास , कालीसिंध नदी के किनारे स्थित माता के इस मंदिर में ऐसा ही चमत्कार देखने को मिला। जिसमे दिया पानी से जलता है।

कालीसिंध नदी के किनारे स्थित माता के इस मंदिर में होने वाले चमत्कार को देखकर किसी भी व्यक्ति का सिर अपने आप ही श्रद्धाभाव से झुक जाएगा। मंदिर में पूजा-अर्चना करने वाले पुजारी सिद्धूसिंह जी के अनुसार पहले मां के दरबार में हमेशा तेल का दीपक जला करता था। लेकिन बहुत समय पहले मंदिर के पुजारी को स्वप्न में पानी से दिया जलाने को कहाँ, तब से इस मंदिर में दिए को पानी से ही जलाया जाता है। माता के इसी चमत्कार को देखने के लिए आज लोग दूर-दूर से आते है और मां के चरणों में शीश नवाते हैं।

ज़्या आप को लिखने का शौक है ?

ज़्या आप अपनी कोई रचना छपवाना चाहते हैं और कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा है । तो लीजिये ! हम आपके इस सपने को साकार करने में आपके सामने उपस्थित हैं .....

तुरंत हमें अपनी रचना के बारे में निज़्नलिखित जानकारी भेजें। हमारा ईमेल है antrashabdshakti@gmail.com

आपकी रचना हस्तलिखित है या टाइप्ड ?

पृष्ठ संज़्या, छपाई एक रंगी या चार रंगी, ज़्या कोई तस्वीर आदि तो नहीं है ?, आपकी पाण्डुलिपि में किसी प्रकार के संशोधन की आवश्यकता है ?, कितनी प्रतियों की आपको आवश्यकता है ?, पुस्तक सजिल्द चाहिये या पेपरबैक ?

आपसे प्राप्त जानकारी के आधार पर हम प्रकाशन लागत खर्च आपको बताएँगे व आपकी स्वीकृति व पूर्ण लागत खर्च मिलने पर पुस्तक प्रकाशित की जा सकेगी।पुस्तक प्रकाशित होने के बाद हम अपनी आवश्यकतानुसार कुछ प्रतियां बिक्री हेतु आपसे ले लेंगे व उनका भुगतान आपको करेंगे। बिक्री हेतु कितनी प्रतियां हम लेंगे इसका किसी भी प्रकार का आश्वासन दे पाना संभव नहीं होगा लेकिन हमारी पूरी कोशिश रहेगी कि पुस्तक की बिक्री में मदद करें।

बस अब जल्द से उपयुक्त जानकारी भेजें।

स्वाधीनता का 71वां साल

-मनोरमा जैन

स्वतंत्रता शब्द ही ऐसा है जिसमे एक उमंग छुपी है खुल के जीने के मायने, खुल के अपनी बात कहने की स्वतन्त्रता,विचारो को अभिव्यक्त करने की छूट,लिखने की छूट, पढ़ने की छूट,अपने आप को साबित करने की छूट ,हर अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की छूट--कुल मिला के स्वतंत्रता किसी भी राष्ट्र ,व्यक्ति के जीवन मे बहुत अहमियत रखती है

71 वर्ष हो गए हमारी स्वतंत्रता को;लेकिन क्या हमारी ये स्वतंत्रता सही मायने में स्वतंत्रता है ?

इन 71 सालों में भारत दुनिया की उभरती शक्ति के रूप में सामने आया है। इसमें कोई दो राय नहीं सन 1947 में जो भारत हम देशवासियो को मिला था उस भारत को अंग्रजो ने,अफगानों ने, मुग़लो ने बहुत लूटा खोसा था। उसके पश्चात भी हमारा भारत पूरी दुनिया के सामने उभर के आया ।

आज कई जन कहते है कि 71 साल में देश ने कुछ नहीं किया जब हम हम देश के विकास की बात करते है, या बड़े गर्व से साइंस और तकनीकि की बात करते है या राकेट छोड़ने और चाँद पर या मंगल पर जाने की बात करते है, तो सवाल यह है कि हम उस समय किस देश की बात कर रहे होते हैं ??

क्या इसी एक देश के भीतर बसे दूसरे देशों पर भी इन उपलब्धियों का कोई असर पड़ता है ?

जी हाँ हम उस देश में बसते है।

जहाँ एक विकसित देश बसता है, जहाँ एक विकासशील देश बसता है, जहाँ एक भूखा नंगा देश बसता है।

सही मायने में देखा जाए तो हम स्वतंत्र है; लेकिन स्वतंत्रता के मायने हम अभी भी नही समझ पाये।

आज देश में आरक्षण बहुत बड़ा ज़हर है। कई लोग आरक्षण की वजह से गुलाम से बन गए हैं।

आरक्षण की वजह से देश में कई प्रतिभाएं नाकारा रह जाती है। जिनकी वजह से देश तरक्की कर सकता हैं।

जिस दिन देश में बने नियम कानून सभी के लिए समान होंगे;

तब लगेगा देश स्वतंत्र है क्योंकि अगर एक व्यक्ति को सब कुछ करने की छूट हो और किसी अन्य को कुछ भी नहीं करने की तो फिर कैसी स्वतंत्रता। हम जब स्वतंत्रता को स्वछंदता मान लेते है; तो हमसे बड़ी भूल हो जाती है। हर व्यक्ति के जीवन में दो पहलू होते हैं कर्तव्य और अधिकार ध्यान देने वाली बात ये है कि कर्तव्य पहले आता है, अधिकार बाद में।

हमारी स्वतंत्रता का मतलब है। अपने कर्तव्यों के प्रति सम्पूर्ण रूप से समर्पित होना। हम स्वतंत्र है। यह शाश्वत सत्य है, पर हमारे साथ साथ हर व्यक्ति उतना ही स्वतंत्र है जितने हम, हमें अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करने का पूर्ण अधिकार है लेकिन वहाँ तक जहाँ तक हमारी स्वतंत्रता किसी और की स्वतंत्रता में व्यवधान न उत्पन्न करे।

यहाँ से शुरू होता है हमारा कर्तव्य। हमें अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करते हुए औरों की स्वतंत्रता का भी पूरा ख्याल रखना है।

अतः हमारी समझ से स्वतंत्रता का मतलब है जियो और जीने दो हमारे युवा स्वतंत्रता के सही मायने नहीं पहचान पा रहें हैं।

स्वतंत्रता सिर्फ तीन रंगों तक सीमित रह गयी जिसे 71 वर्षो से एक पहिया ढो रहा है। कुछ सालों में स्वतंत्रता सिर्फ 15 अगस्त और 26 जनवरी को शॉपिंग मॉल में ही नजर आएगी;अगर हम सही स्वतंत्रता को नहीं पहचान पाये।

एक देश को आगे बढ़ने में युवा की मेहनत और एक बुजुर्ग का ज्ञान बहुत जरूरी है । हम अपने घर में ही देख ले हम युवा अपने घर के किसी भी कार्य में मेहनत करते है। हमारे बुजुर्ग हमारा मार्ग दर्शन करते है तब जा के कार्य सफल होता है।

भारत को भी दुनिया का सबसे खूबसूरत राष्ट्र बनाने में यही तरीका अपनाना पड़ेगा। फिर हम कह पाएंगे हम एक स्वतंत्र देश के नागरिक है जहां हर व्यक्ति को सामान अधिकार है ।

सन 1947 में जब भारत आज़ाद हुआ। उस वक्त देश की हालत दयनीय थी। स्वतंत्रता के पश्चात कुछ महीनो तक देश को ये समझने में लग गया कि करना क्या है? क्योंकि सैकड़ो रियासतों को जोड़ के एक देश बना था। सबको साथ लेकर चलना था। देश ने इसमें सफलता हासिल भी की है।

आज हमे खुश होना चाहिए की हम गर्व से कह सकते है कि हमारा भी एक देश है। मैं ये नहीं कहता की परफेक्ट है। कई खामियां भी है; लेकिन जिस तरह कई लोग देश की सिर्फ बुराई करते है कि भारत में कुछ नहीं रखा।

क्या अन्य सभी देश भारत से ज्यादा विकाशशील है ? क्या उन देशों में सिर्फ अच्छाई है बुराई नहीं है ??

हमें आगे बढ़ना है। नकारात्मक सोच के साथ आगे नहीं बढ़ सकते हम।स्वतंत्रता को अगर सही मायने में सफल साबित करना चाहते है; तो देश को अपना युद्ध स्वयं से लड़ना है। बीते हुए कल से आने वाले कल को और बेहतर बनाना है।

आज कई लोग कहते फिरते है। सेना के जवान को देखो वे हमारे लिए अपनी जान की बाजी लगा रहे है; आप है की देश को कोस रहे है। कई तरह की बातों की तुलना सेना के सिपाही से कर देते है । ये नहीं कि तुलना नहीं करनी चाहिए; लेकिन किसी भी चीज़ को हम सीमा के बाहर करते है तो उसके प्रभाव खत्म होने की स्तिथि में हो जाते है।

हमारे देश की सेना में 20 लाख से ज्यादा सिपाही है। मतलब 20 लाख परिवार के लोग सैनिक का महत्व जानते है ।उनके रिश्तेदार भी है तो ये आंकड़ा तकरीबन आधे मुल्क के लोगो से जुड़ जाएगा। लेकिन कुछ अनपढ़ लोगो की वजह से हर बात में उनका नाम जोड़ना उनके महत्व को घटा रहा है।

हमें हमारी सेना और सैनिक का सम्मान करना चाहिए मेरा इतना ही कहना है व्यापारी,कर्मचारी आम नागरिक, इत्यादि कई लोगो से सेना की तुलना करना बंद करे । सब का अपना अपना महत्व है और सबके महत्व से जुड़कर एक देश बनता है ।

आइए हम सही मायने में स्वतंत्रता को पाये। देश को सही दिशा में ले जाने के लिये अपने बुजुर्गों से विचार विमर्श करें। अपने युवाओं से कर्मठ कार्य करने को कहें। अपने आने वाली पीढ़ी का सही मार्ग दर्शन करें। तब जाकर हम सच्ची स्वतंत्रता पाएंगे और एक सफल देश के सफल नागरिक कहलायेंगे।

-फ़िरदौस ख़ान

बाढ़ के क़हर को रोकने की दरकार

बरसात का मौसम शुरू ही देश के कई राज्य बाढ़ की चपेट में आ जाते हैं। बाढ़ से जान व माल का भारी नुक़सान होता है। लाखों लोग बाढ़ से प्रभावित होते हैं। कितने ही लोग बाढ़ की वजह से मौत की आग़ोश में समा जाते हैं। सैकड़ों मकान क्षतिग्रस्त हो जाते हैं, हज़ारों लोगों को बेघर होकर शरणार्थी जीवन गुज़ारने को मजबूर होना पड़ता हैं। खेतों में खड़ी फ़सलें तबाह हो जाती हैं।

देश में बाढ़ आने के कई कारण हैं। बाढ़ अमूमन उत्तर पूर्वी राज्यों को ही निशाना बनाती है। इसकी सबसे बड़ी वजह है कि चीन और ऊपरी पहाड़ों में भारी बारिश होती है और वर्षा का यह पानी भारत के निचले इलाक़ों की तरह बहता है। फिर यही पानी तबाही की वजह बनता है। नेपाल में भारी बारिश का पानी भी बिहार की कोसी नदी को उफ़ान पर ला देता है, जिससे नदी के रास्ते में आने वाले इलाक़े पानी में डूब जाते हैं। ग़ौरतलब है कि कोसी नदी नेपाल में हिमालय से निकलती है। यह नदी बिहार में भीम नगर के रास्ते भारत में दाख़िल होती है। कोसी बिहार में भारी तबाही मचाती है, इसलिए इसे बिहार का शोक या अभिशाप भी कहा जाता है। कोसी नदी हर साल अपनी धारा बदलती रहती है। साल 1954 में भारत ने नेपाल के साथ समझौता करके इस पर बांध बनाया था। हालांकि बांध नेपाल की सीमा में बनाया गया है, लेकिन इसके रखरखाव का काम भारत के ज़िम्मे है। नदी के तेज़ बहाव के कारण यह बांध कई बार टूट चुका है। आधिकारिक जानकारी के मुताबिक़ बांध बनाते वक्त आकलन किया गया था कि यह नौ लाख क्यूसेक पानी के बहाव को सहन कर सकता है और बांध की उम्र 25 साल आंकी गई थी। पहली बार यह बांध 1963 में टूटा। इसके बाद 1968 में पांच जगहों से यह टूटा। उस वक़्त कोसी का बहाव नौ लाख 13 हज़ार क्यूसेक मापा गया था। फिर साल 1991 नेपाल के जोगनिया और 2008 में नेपाल के ही कुसहा नामक स्थान पर बांध टूट गया। हैरानी की बात यह रही कि उस वक़्त नदी का बहाव महज़ एक लाख 44 हज़ार क्यूसेक था। फ़िलहाल कोसी पर बने बांध में जगह-जगह दरारें पड़ी हुई हैं।

कोसी की तरह गंडक नदी भी नेपाल के रास्ते बिहार में दाख़िल करती है। गंडक को नेपाल में सालिग्राम और मैदान में नारायणी कहते हैं। यह पटना में आकर गंगा में मिल जाती है। बरसात में गंडक भी उफ़ान पर होती है और इसके आसपास के इलाक़े बाढ़ की चपेट में आ जाते हैं। ग़ौरतलब है कि बांग्लादेश के बाद भारत ही दुनिया का दूसरा सर्वाधिक बाढ़ग्रस्त देश है। देश में कुल 62 प्रमुख नदी प्रणालियां हैं, जिनमें से 18 ऐसी हैं जो अमूमन बाढ़ग्रस्त रहती हैं। उत्तर-पूर्व में असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उड़ीसा और उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु बाढ़ग्रस्त इलाके माने जाते हैं, लेकिन कभी-कभार देश के अन्य राज्य भी बाढ़ की चपेट में आ जाते हैं। पश्चिम बंगाल की मयूराक्षी, अजय, मुंडेश्वरी, तीस्ता और तोर्सा नदियां तबाही मचाती हैं, ओडिशा में सुवर्णरेखा, बैतरनी, ब्राह्मणी, महानंदा, ऋषिकुल्या, वामसरदा नदियां उफ़ान पर रहती हैं। आंध्रप्रदेश में गोदावरी और तुंगभद्रा, त्रिपुरा में मनु और गुमती, महाराष्ट्र में वेणगंगा, गुजरात और मध्य-प्रदेश में नर्मदा नदियों की वजह से इनके तटवर्ती इलाक़ों में बाढ़ आती है।

बाढ़ से हर साल करोड़ों रुपये का नुक़सान होता है, लेकिन नुक़सान का यह अंदाज़ा वास्तविक नहीं होता। बाढ़ से हुए नुक़सान की सही राशि का अंदाज़ा लगाना आसान नहीं है, क्योंकि बाढ़ से मकान व दुकानें क्षतिग्रस्त होती हैं। फ़सलें तबाह हो जाती हैं। लोगों का कारोबार ठप हो जाता है। बाढ़ के साथ आने वाली बीमारियों की वजह से स्वास्थ्य सेवाओं पर भी काफ़ी पैसा ख़र्च होता है। लोगों को बाढ़ से नुक़सान की भरपाई में काफ़ी वक़्त लग जाता है। यह कहना ग़लत न होगा कि बाढ़ किसी भी देश, राज्य या व्यक्ति को कई साल पीछे कर देती है। बाढ़ से उसका आर्थिक और सामाजिक विकास ठहर जाता है। इसलिए बाढ़ से होने वाले नुक़सान का सही अंदाज़ा लगाना बेहद मुश्किल है।

जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्रालय के आंकड़ों के मुताबिक़, देश में पिछले साढ़े छह दशक के दौरान बाढ़ से सालाना औसतन 1654 लोगों की मौत हुई और 92763 पशुओं की जान गई। इससे सालाना औसतन 71।69 लाख हेक्टेयर इलाक़े पर असर पड़ा और तकरीबन 1680 करोड़ रुपये फ़सलें तबाह हो गईं। बाढ़ से सालाना 12।40 लाख मकानों को नुक़सान पहुंचा। साल 1953 से 2017 के कुल नुक़सान पर नज़र डालें, तो देश में बाढ़ की वजह से 46।60 करोड़ हेक्टेयर इलाक़े में 205।8 करोड़

लोग बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। इस दौरान 8।06 करोड़ मकानों को नुक़सान पहुंचा है। अफ़सोस की बात है कि हर साल बाढ़ से होने वाले जान व माल के नुकसान में बढ़ोतरी हो रही है, जो बेहद चिंताजनक है।

पिछले सात दशकों में देश में अनेक बांध बनाए गए हैं। साथ ही पिछले क़रीब तीन दशकों से बाढ़ नियंत्रण में मदद के लिए रिमोट सेंसिंग और भौगोलिक सूचना व्यवस्था का भी इस्तेमाल किया जा रहा है, लेकिन संतोषजनक नतीजे सामने नहीं आ पा रहे हैं। बाढ़ से निपटने के लिए 1978 में केंद्रीय बाढ़ नियंत्रण बोर्ड का गठन किया गया था। देश के कुल 32।9 करोड़ हेक्टेयर में से तक़रीबन 4।64 करोड़ हेक्टेयर भूमि बाढ़ प्रभावित इलाक़े में आती है। देश में हर साल तक़रीबन 4000 अरब घन मीटर बारिश होती है।

हैरत का बात यह भी है कि बाढ़ एक राष्ट्रीय आपदा है, इसके बावजूद इसे राज्य सूची में रखा गया है। इसके तहत केंद्र सरकार बाढ़ से संबंधित कितनी ही योजनाएं बना ले, लेकिन उन पर अमल करना

राज्य सरकार की ज़िम्मेदारी है। प्रांतवाद के कारण राज्य बाढ़ से निपटने के लिए पर्याप्त उपाय नहीं कर पाते। एक राज्य की बाढ़ का पानी समीपवर्ती राज्य के इलाक़ों को भी प्रभावित करता है। मसलन हरियाणा का बाढ़ का पानी राजधानी दिल्ली में छोड़ दिया जाता है, जिससे यहां के इलाक़े पानी में डूब जाते हैं। राज्यों में हर साल बाढ़ की रोकथाम के लिए योजनाएं बनाई जाती हैं, मगर प्रशासनिक लापरवाही की वजह से इन योजनाओं पर ठीक से अमल नहीं हो पाता। नतीजतन, यह योजनाएं महज़ काग़जों तक ही सिमट कर जाती हैं। हालांकि बाढ़ को रोकने के लिए सरकारी स्तर पर योजनाएं चलाई जा रही हैं, जिनमें बाढ़ प्रभावित इलाकों में बांध बनाना, नदियों के कटान वाले इलाक़ों में कटान रोकना, पानी की निकासी वाले नालों की सफ़ाई और उनकी सिल्ट निकालना, निचले इलाक़ों के गांवों को ऊंचा करना, सीवरेज व्यवस्था को सुधारना और शहरों में नालों के रास्ते आने वाले कब्ज़ों को हटाना आदि शामिल है।

क़ाबिले-ग़ौर है कि विकसित देशों में आगजनी, तूफ़ान, भूकंप और बाढ़ के लिए क़स्बों का प्रशासन भी पहले से तैयार रहता है। उन्हें पहले से पता होता है कि किस पैमाने पर, किस आपदा की दशा में, उन्हें क्या-क्या करना है। वे बिना विपदा के छोटे पैमाने पर इसका अभ्यास करते रहते हैं। गली-मोहल्लों के हर घर तक यह सूचना मीडिया या डाक के ज़रिये संक्षेप में पहुंचा दी जाती है कि किस दशा में उन्हें क्या करना है। संचार व्यवस्था के टूटने पर भी वे प्रशासन से क्या उम्मीद रख सकते हैं। पहले तो वे इसकी रोकथाम की कोशिश करते हैं। इसमें विशेषज्ञों की सलाह ली जाती है। इस प्रक्रिया को आपदा प्रबंधन कहते हैं। आग तूफ़ान और भूकंप के दौरान आपदा प्रबंधन एक ख़र्चीली प्रक्रिया है, लेकिन बाढ़ का आपदा नियंत्रण उतना ख़र्चीला काम नहीं है। इसे बख़ूबी बाढ़ आने वाले इलाक़ों में लागू किया जा सकता है। विकसित देशों में बाढ़ के आपदा प्रबंधन में सबसे पहले यह ध्यान रखा जाता है कि मिट्टी, कचरे वगैरह के जमा होने से इसकी गहराई कम न हो जाए। इसके लिए नदी के किनारों पर ख़ासतौर से पेड़ लगाए जाते हैं, जिनकी जड़ें मिट्टी को थामकर रखती हैं। नदी किनारे पर घर बसाने वालों के बग़ीचों में भी अनिवार्य रूप से पेड़ लगवाए जाते हैं। जहां बाढ़ का ख़तरा ज़्यादा हो, वहां नदी को और अधिक गहरा कर दिया जाता है। गांवों तक में पानी का स्तर नापने के लिए स्केल बनी होती है।

हमारे देश में भी प्राकृतिक आपदा से निपटने के लिए पहले से ही तैयार रहना होगा। इसके लिए जहां प्रशासन को चाक-चौबंद रहने की ज़रूरत है, वहीं जनमानस को भी प्राकृतिक आपदा से निपटने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। स्कूल, कॉलेजों के अलावा जगह-जगह शिविर लगाकर लोगों को यह प्रशिक्षण दिया जा सकता है। इसमें स्वयंसेवी संस्थाओं की भी मदद ली जा सकती है। इस तरह प्राकृतिक आपदा से होने वाले नुक़सान को कम किया जा सकता है।

(लेखिका स्टार न्यूज़ एजेंसी में संपादक हैं)

राज्य + नीति

-कमल नयन मिश्रा

हर जगह बात बात पर राजनीतिक बाते इस तर्ज़ पर तजुर्बा दिखाती हैं कि प्रतीत होता है कि हम सब से बड़ा राजनीतिज्ञ शायद ही कोई हो।

हम निर्णय भी लेते है और परिणाम भी घोषित करते है और यहाँ तक कि जो वास्तविक राज्यनीतिज्ञ है वो भी हमसे कम सोचते है क्योंकि हमारे पास अत्यधिक फुर्सत है राज़नीतिक मुद्दों पर बात करने की।

लोग तो इस कदर सत्ता धारियों पर शंका करने लगे है कि हर सत्ताधारी उन्हें देश को गर्त में ले जाने वाला लगता है ।

अब क्या करे किसे चुने और क्यों चुने क्या गारंटी है कि जिसे हम चुनेंगे वो देश को चांद पे ले जाएगा।

और अहम बात तो ये है कि हमने इस देश के विकाश में क्या योगदान दिया क्या कुर्सी पर बैठा राजनेता ही देश के विकाश की डोर को सम्भालेगा या फिर हम भी कुछ करेंगे देश के लिए।

कई मुद्दे है जिन पर लोगों की चौपाल दिन में हर घण्टे बर्तालाप के लिए तैयार रहती है।

क्योंकि उनके पास समय की कोई कमी नही है हा अगर कोई देश के प्रति काम हुआ तो फिर उनका प्रोटोकाल देश के राष्ट्रपति के जैसा है 1 महीने पहले से हर घण्टे का व्यस्त शेड्यूल होता है ।

पर वास्तव में नेता को दोषी ठहराना देश के प्रति खरी ईमानदारी नही होती क्योंकि अकेला नेता देश को ऊंचाइयों पर नही ले जा सकता उसके लिए नेता को प्रजा का सहयोग चाहिए होता है

परन्तु प्रजा तो बुराइयों में मशगूल है उसे तो घंटो पेट्रोल के बढ़ते दामो पर डिबेट करना है और साबित करना है कि देश को चलाना नेताओ के वश की बात नही है।

वैसे एक बात तो है जो देश को बखूबी चलाने की कसमें खाते है वो खुद अपना घर अच्छे से नही चला पाते।

देश के प्रति अपनी ईमानदारी को बाहर आने दीजिये खुद के फायदे से ऊपर उठ कर कुछ देश के लिए समर्पित भी कीजिये न गलत करिये न आसपास गलत होने दीजिए फिर डॉलर भी रुपया के बराबर हो जाएगा और गरीबी भी हट जाएगी।

कोसने से यदि सब सही हो जाता तो वास्तव में हम सब शायद चाँद में पैदा होते क्योंकि हमारे पूर्वजों ने भी सिर्फ कोसा ही है देश के नेताओ को ।

अब भी कुछ विशेष बिगड़ा नही है बस मन में ठानने की देर है।

कुछ तो देश के प्रति ऐसा करे जिससे मन को शांति मिले और सर भी गर्व से उठा रहे।

अष्टम अनुसूची का हिंदी पर बढ़ता कुप्रभाव

हिंदी टूटने से बचाओ

-डॉ राजेश्वर उनियाल, मुंबई

बंधुओं भाषा जनगणना 2011 की रिपोर्ट प्रकाशित होने के बाद यह बात देखने में आ रही है कि जैसे जैसे हिंदी की क्षेत्रीय भाषाओं को अष्टम अनुसूची में वर्णित किया जा रहा है, उससे हिंदी का महत्व घटता जा रहा है । उदाहरण के लिए जहां हिंदी ने 1971 से 1981 तक 27.12 प्रतिशत, 1981 से 1991 तक 27.84 प्रतिशत तथा 1991 से 2001 तक 28.09 प्रतिशत की बढ़ोतरी की थी, वहीं यह मैथिली भाषा के अलग हो जाने के कारण 2001 से 2011 तक केवल 25.10प्रश रह गई है।

अभी तो यह शुरुआत है । वर्तमान में हिंदी को मातृभाषा मानने वाले 52 करोड़ 83 लाख 47 हजार 193 लोग हैं । परंतु यह आंकड़े हिंदी के अंतर्गत 56 बोली भाषाओं को मिलाकर है। यदि इन 56 बोली भाषाओं को अलग कर दिया जाए तो हिंदी को मातृभाषा मानने वाले केवल 32, 22, 30, 097 ही लोग होंगे। इन 56 बोली भाषाओं में से कई बोली भाषाएं अष्टम अनुसूची के अंतर्गत वर्णित होने हेतु विचाराधीन है । कल्पना कीजिए कि जिस दिन इन सभी बोली भाषाओं को अष्टम अनुसूची में वर्णित कर दिया जाएगा उस दिन जिस हिंदी को मातृभाषा मानने वाले आज भारत में जो 43.63 प्रतिशत लोग हैं वह घटकर 25.35 ही रह जाएगा । फिर जिस हिंदी का आज आप डंका बजा रहे हैं और विश्वभाषा बनाने चले हैं , उस हिंदी की अपने ही देश में क्या हालत हो जाएगी, आप कल्पना भी नहीं कर सकते।

मैथिली सहित हिंदी की सभी क्षेत्रीय बोली भाषाओं के विद्वतजनों को भी सोचना होगा कि आपकी क्षेत्रीय बोली भाषाएं भी तभी तक सुरक्षित और विकसित होंगी , जब तक उसे हिंदी का संरक्षण प्राप्त होगा । नहीं तो जिस प्रकार से आज अंग्रेजी हमारे चूल्हा चौकी तक पहुंच चुकी है, वहां भला हमारी बोली भाषाएं सुरक्षित कैसे रह पाएंगी । वर्तमान में भारत में कुल 19569 मातृभाषाएं हैं । अष्टम अनुसूची के अंतर्गत 22 भाषाएं हैं तथा 99 अन्य भाषाओं को मिलाकर कुल 121 भाषाएं व 270 मातृभाषाएं हैं, जिनको बोलने वाले वाले कम से कम 10000 लोग हैं।

(वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई)

राजनीति मेरी नजर में

स्वामी विदेह देव

राजनीति शब्द मुझे व्यक्तिगत रूप से अप्रिय है, कोई मुझसे कहे कि इसका नया नामकरण यदि किया जाय तो कौन सा नाम अच्छा रहेगा तो मेरा सुझाव रहेगा 'व्यवस्थानीति'।।

क्योंकि राजनीति शब्द से राज करने की मानसिकता की बू आती है जो कहीं न कहीं शोषण करने की प्रवृत्ति को उत्पन्न करती है और व्यक्ति के भीतर सत्ता,संपत्ति, सम्मान के कृत्तिम भूख को बढ़ावा देती है।

व्यक्ति न चाहते हुए भी इस अंधी दौड़ का हिस्सा बन जाता है और कभी भी पहचान नहीं पाता है कि वह गलत मार्ग का कुपथिक बन चुका है। इसलिए हमने सदैव एक राजनेता की अपेक्षा एक व्यवस्थापक को अधिक सम्मान की नजर से देखा है। मैंने कहीं पढा है कि जैसे हमारे घर में एक रसोइया होता है जब वह खाना अच्छा नहीं बनाता है तब हम उसे डांट लगाते हैं और आगे से ध्यान रखने को बोलते हैं और अच्छा, स्वादिष्ट भोजन बनाने पर उसकी प्रशंसा करते हैं उसी प्रकार एक राज्य का खाद्य मंत्री भी एक बड़े रसोइये से अधिक हैसियत का नहीं होना चाहिए। हमें क्या आवश्यकता है उसे सिर पर चढ़ाने की, उसके लिए लाल बत्ती की गाड़ी के पीछे रैली निकालने की। उसकी इतनी जिम्मेदारी हो कि पूरे राज्य की राशन व्यवस्था ठीक से सुचारू रूप से चलती रहे। इसी प्रकार अन्य सभी विभागों की बात मैं यहां पर कर रहा हूँ।

जब तक हम राजनीति को व्यवस्थानीति नहीं बनाएंगे हम कितना भी हाथ पांव मार लें वास्तविक परिवर्तन बहुत दूर नजर आता रह जाएगा।

व्यक्ति की क्रांति से विश्व की क्रांति का मार्ग प्रशस्त होगा यही मूल मंत्र है। क्योंकि व्यक्ति में ही आत्मा होती है, भीड़, समाज में नहीं।

'कौन जिम्मेदार..?'

सुषमा मलिक

रोहतक (हरियाणा) जिले के लाढ़ोत्त भैयापुर गॉव में स्थित गुरुकुल में हुई दर्दनाक घटना ने सबको दहला कर रख दिया है, पाँचवी, छठी, सातवी कक्षा के इन विद्याथिर्यों के साथ दसवीं और बारहवीं के विदयाथिर्यों द्वारा किये गए कुकर्म ने एक और सवाल खड़ा कर दिया है कि बेटियां क्या आज के इस वक़्त में बेटे भी सुरक्षित नही है। रक्षाबन्धन के सुअवसर पर मन में खुशियां लेकर अपने बच्चो से मिलने गए उन एक दर्जन माँ-बाप पर क्या गुजरी होगी जब उन्होंने अपने बच्चो की ये आप बीती सुनी होगी कि किस तरह वरिष्ठ कक्षा के बीस से पच्चीस बच्चे पिछले एक साल से उनके मासूम बच्चों को रात को नींद से उठाकर छत पर ले जाते थे और उन्हें हवस का शिकार बनाते थे, उन्हें बाथरूम में भी शिकार बनाया जाता था और विरोध करने पर उनके साथ मारपीट की जाती थी और किसी को ना बताने के लिए भी चाकू दिखाकर धमकाया जाता था, आखिर कौन जिम्मेदार है इस घटना का?

हमारी सरकार?

गुरुकुल प्रबन्धक?

वो माँ बाप जो संस्था पर भरोसा करके अपने बच्चो के सुनहरे भविष्य के सपने बुन रहे थे?

या वो मासूम जो अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए माँ-बाप से दूर अपना बचपन काट रहे थे?

गुरु का स्थान सबसे ऊपर माना जाता है लेकिन कलियुगी गुरु को क्या कहें जो सब पता होते हुए भी इस शर्मनाक कांड को रोकने की बजाय बढ़ावा देते रहे। संस्था के प्रबंधक की आत्मा ये सोचकर एक बार भी नही दु:खी हुई कि इन मासूमों की जिंदगी को खराब करने के जिम्मेदार वो है।

लड़कियों को कोसा जाता है कि वो देर रात तक बाहर थी, उसका आधा बदन कपड़ो से ढका हुआ था, जिसने लोंगो को हवस का पुजारी बनाया, क्या ये बच्चे भी रात को बाहर सड़क पर थे या इनके बदन इतने नंगे थे कि दरिंदो का वहशीपन जाग उठा, आखिर क्या गलती थी इनकी?

क्या सरकार के किसी कानून में कोई ऐसी सजा नही कि वहशी दरिंदे और उनका साथ देने वाले नकाबपोशों की ऐसा काम करने की सोचकर ही रूह कांप उठे, कल मैंने खुद अपनी आँखों से उन बच्चों को हॉस्पिटल के बेंच पर बैठकर अपनी बारी का इंतजार करते देखा और परेशान माँ-बाप जिस बेचैनी से कभी बच्चो के पास खड़े होते कभी बैठते कभी टहलते तो कभी अपनी बारी के इंतजार में हॉस्पिटल के कमरे की तरफ देखते, उस दृश्य ने बार बार एक ही सवाल किया कि क्या कसूर है इन मासूमों और इनके पालनहारों का।

यही है मेरा भारत महान! शोषक आराम से गुरुकुल में बैठे है और शोषित दर दर की ठोकरें खा रहे है, आखिर कौन है कसूरवार? अगर लड़की के बलात्कार के दोषी के लिए हम मौत की सजा की मांग करते हैं तो आज भी हर भारतवासी का फर्ज है कि वो इस दुष्कर्म को अंजाम देने वाले दरिंदो के लिए भी मौत की सजा की मांग करें।।

वाह रे मेरा भारत महान,
देखो अब ढूंढो कोने-कोने।
लड़की हो या लड़का हो,
उनके साथ होते कांड घिनोने।।

पुरुष -वक़्त के साथ बड़े नही होते

आज कि कविता एक नितान्त भाव है. जहाँ मै पुरुष समाज की मांसिक स्तिथि को समझने की कोसिस कर रही हूं.

कल मेरा सात साल का बेटा मुझसे पूछ बैठा, माँ तुम सबसे ज्यादा प्यारी किसे करती हो, उस वक़्त मै वात्सल्य मे डूबी असीम आनंद से सरोबार थी. मैने सहज ही कह दिया तुमसे और तुम्हारे dady से. पर बेटे को ये उत्तर स्वीकार न था, उसका हठ था की जैसे वो सबसे ज्यादा प्यार अपनी माँ से करता है वैसे ही मुझे सबसे ज्यादा प्यार अपनी माँ अर्थात उसकी नानी से करना चाहिए. मै उसकी बाल चपलता और तर्क के आगे नतमस्तक हो गयी.

पर अगली रात जब उसके daddy घर पर थे उसने यही प्रश्न dady पर दाग दिया. dady आप सबसे ज्यादा प्यार किसे करते है. उसके dady ने सहज ही कह दिया कि मै सबसे ज्यादा प्यार अपने mummy dady अर्थात तुम्हारे dada dadi से करता हूं. मेरे बेटे को इस जवाब से बहुत आघात पहुंचा, उसकी अपेक्षा थी की dady तुमको और तुम्हारी mummy को. उसे ये उपेक्षा स्वीकार न हुई, उसने हमारे हक मे अपने daddy से बहस की

हमने उसे शान्त किया, उसे समझाया और उसे सुलाया. पर ये वाक्या मेरे जहन से न हटा, पतिन्हूं शायद उपेक्षा स्वीकार न कर पाई, मै मंथन कर रही थी, मै निरन्तर चिन्तन कर रही थी.

सहसा मुझे समझ आया कि हम स्त्रिया अपना मायका पीछे छोड़ कर आते हैं और नए लोगों को पूरे दिल से अपना लेते हैं पूर्ण समर्पण के भाव से. पर पुरुष वही खड़े रहते हैं, वो वक़्त के साथ बड़े नही होते हैं हम अपनी जडे छोड़ कर आते हैं, पुराने रिस्ते तोड़ कर आते हैं. हम नया पेड़ लगाते हैं. जहाँ हम स्व्यम जड हैं. हमारा अपना तना है. हमारी अपनी पत्तियाँ हैं. हमारे फ़ल हैं. हमारे फ़ूल हैं. और हम स्व्यम अद्स्र्य हो जाते हैं उस पेड़ को पानी देते देते.

पर पुरुष वही खड़े होते हैं और वो वक़्त के साथ बड़े नही होते हैं.

-श्वेता जायसवाल 'सुरभि'

नीरज त्यागी

प्रयास

प्रयास करिए पुष्प सा,
जो छोटे से अस्तित्व से
पूरे गुलशन को महकाये।
प्रयास करिए बाँसुरी सा,
जो बस जरा सी होठो की छुहन से
पूरी महफ़िल के कानों में घुल जाए।
प्रयास करिए माझी सा,
जो दो किनारों पर खड़े
लोगो को आपस मे मिलवाये।
प्रयास करिए जोड़ का,
घटाने से तो ख़ुद ही बड़ी
से बड़ी शंख्या घटती जाए।
प्रयास करिए माँ बाप सा
जो बच्चो को एक समान
बढ़ने का पाठ शिखाएं।

मेरी राखी

नम आंखों से तुझे दुआ दूँ
भईया कैसे तुझे भुला दूँ
ये राखी जब भी आती है
आँखे मेरी भर जाती है
फिर भी मन को समझाती हूँ
रोते रोते मुस्काती हूँ
याद तुम्हारी जब आती है
दिल को कितना तड़पाती है
रोली तिलक लगाऊ कैसे
दूर बहुत हूँ आऊँ कैसे
ख़ुद ही राखी हाँथ बाँधना
मेरी तुम ना राह ताकना

गरिमा सिंह

मैं शायद आ भी ना पाउँ
कैसे मन की पीर सुनाऊँ
दूर हूँ मैं मजबूर बहुत हूँ
तेरी ख़ुशियों में ही ख़ुश हूँ
ख़ुशियों से घर तेरा भर जाए
गम कोई तुझे छू भी ना पाए
दूर भले मुझसे तू रहना
भूलना मत हूँ तेरी बहना
रहे धागों से सजी कलाई
भईया तुझको बहुत बधाई

न्यूज पोर्टल बनवाएं

NEWS PORTALS

कम खर्च में अधिक आय पायें

वेब पोर्टल की प्राथमिक लागत मूल्य डोमेन, होस्टिंग और डेवलपमेंट को मिला लिया जाए तो 6000 रुपयों से 25 हज़ार रुपयों के बीच आती है, सालाना खर्च 3000 रुपये से 6000 रुपयों तक आता है। इसी में गूगल द्वारा प्राप्त एड सेंस आदि की कमाई जोड़ी जाए तो इस खर्च की तुलना में कहीं अधिक है। इसी लिए वेब पत्रकारिता को भारत में पत्रकारिता के स्वर्णिम भविष्य के रूप में भी देखा जा रहा है। आय के साथ साथ प्रचलन और तत्परता जैसे वांछनीय गुणों के रहते वेब पत्रकारिता भविष्य के गर्भ में उन्नति का पुष्ट दस्तावेज़ साबित होगी।

उपरोक्त तरीकों के अलावा अन्य तरीकों के बारे में विस्तृत से जानने के लिए

www.enewsportals.com

के कांटेक्ट में जा कर फार्म भरिए। उक्त सन्दर्भ में कोई भी प्रश्न हो तो आप इसी वेबसाइट के कांटेक्ट मेन्यू में जा कर प्रश्न पूछ सकते है। हमारी टीम आपके सवालों का जल्दी ही जवाब देगी।

यदि आप न्यूज पोर्टल बनवाना चाहते है तो आज ही संपर्क करें -

eNewsPortals.com

संपर्क सूत्र-+917067455455 मेल-info@enewsportals.com, enewsportals.com@gmail.com

वूमन आवाज सम्मान व अन्तरा शब्दशक्ति गौरव सम्मान आयोजित

भोपाल।महिला सक्षमीकरण के लिए कार्यरत संस्था वूमन आवाज व अन्तरा शक्ति प्रकाशन द्वारा भोपाल में 4 अगस्त, शनिवार को 55 महिलाओं को वूमन आवाज़ सम्मान व 1 महिला को अन्तरा शब्दशक्ति रत्न व 2 महिलाओं को अन्तरा शब्दशक्ति गौरव सम्मान दिया।

संस्था वूमन आवाज व अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन के साझा प्रयासों से भोपाल के हिन्दी भवन में शनिवार को आयोजित सम्मान समारोह में 55 महिलाओं को श्रेष्ठ साहित्य सृजन हेतु सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री मलय जैन, सहायक पुलिस महानिरीक्षक, भोपाल (साहित्य अकादमी मप्र द्वारा सम्मानित) तथा कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. राजश्री रावत (वरिष्ठ सहित्यकार एवं संगीताचार्य (सितार वादन) तथा बतौर विशिष्ट अतिथि आ. अंजुम रहबर (अंतर्राष्ट्रीय ख्याति एवं सम्मान प्राप्त वरिष्ठ कवियत्री), डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' (राष्ट्रीय अध्यक्ष-मातृभाषा उन्नयन संस्थान) व मीनू जैन जी-एम.एच.एस.सी. (बाल मनोविज्ञान) उपस्थित रहे।

वुमन आवाज़ की संस्थापिका शिखा जैन व अन्तराशब्दशक्ति की संस्थापिका डॉ.प्रीति सुराना (सह संस्थापिका वुमन आवाज़) के साझा प्रयासों से हिन्दी पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह प्रकल्प और सम्मान देना प्रारंभ किया है। जिसमें 55 महिलाओं के सम्मान के साथ 66 निजी पुस्तकों का विमोचन होना है ।

उन्हीं पुस्तकों के लेखन हेतु ही 55 वुमन आवाज अवार्ड दिया है। अवार्ड मिलने वालों में-

1. डॉ भारती वर्मा बौड़ाई-अनुभूतियों के दंश, 2. नीरजा मेहता-खनक चूड़ियों की, 3. मीनाक्षी सुकुमारन-बोलते एहसास, 4. ऋतु थपलियाल-मुक्त परिंदे, 5. डॉ.मीनू पांडेय-हलचल, 6. अंजलि पंडया-ख्वाहिशें, 7. रागिनी शर्मा-बेटियाँ, 8.पूनम कतरियार-आगाह,9. सीमा असीम-अभी हारी नहीं हूं मैं,10. रमा तेकाम-एहसास ए जिंदगी,11. मीना जैन-अहसास,12. उर्मिला मेहता-ऐसे बनाई मैंने अपनी पहचान,13. किरण मिश्रा-सुगंधा, 14. डॉ.लेखा रमेश-अनकहे शब्द, 15. अलका रागिनी-जियें तो जियें कैसे,16. काजल भालोटिया-मनकही,17. सीता गुप्ता-ओस की बूंदे,18. जयति जैन नूतन-वक़्त वक़्त की बात,19. कुसुम सिंह 'अविचल'-हिमनद, 20. राजलक्ष्मी शिवहरे-वो खूबसूरत है, 21. डॉ. ओरीना अदा-मां मेरी जन्नत, 22. शुभ्रा झा-सुनहरे फूल शब्दो के, 23. माधुरी मिश्रा-कुछ सूखे कुछ हरे पात, 24. सुमन चौधरी-टैरस पर टंगी जिंदगानी, 25. डॉ मौसमी परिहार-लफ्ज़ों में सिमटी,...यादें, 26. लक्ष्मी कुशवाहा-मैना की बैना, 27. सपना परिहार-मेरे मन की अभिव्यक्ति, 28. पिंकी परुथी-मैं आल्हादिनी,.., 29. रचना सक्सेना-द्वंद, 30.आयुषी भाटोद्रा- भावसुधा,31. कीर्ति वर्मा-अपने सपने, 32. राजकुमारी चौकसे-आनंद की सरिता, 33.डेज़ी जुनेजा-एक मुलाकात, 34. अदिति रूसिया-पीर धरा की, 35. शिखा श्रीवास्तव-एहसास मेरे मन के, 36. पूनम झा-चौंक क्यों गए, 37. अनिता मंदिलवार-जीवन के रंग-दोहों के संग, 38. अलका चौधरी-मेरे आलेख, 39.गायत्री सोनी-कसक, 40. किरण मोर-सपनों का भंवर, 41. सुधा शर्मा-अनंत पथ पर महानदी, 42. सपना ताम्रकार-एक कोना दिल का,43. मधु तिवारी-कोशिश, 44. वंदना दुबे-सोच के सेतु, 45. आरती तिवारी-लौट जा मन गाँव की ओर, 46. चेतना उपाध्याय-सूक्ष्म गहनानुभूति, 47. विनीता पैगवार-सुख सागर, 48. विमला महरिया 'मौज'-भोले मन की बात, 49. चारु शिखा-रिश्ते और एहसास, 50.केवरा यदु-आपकी ही परछाई, 51. डॉ. प्रतिभा सिंह परमार राठौड़-औरत,52. सुनीता श्रीवास्तव-आर्यन, 53. अपर्णा संत सिंह- अर्पित तुम्हे, 54. नेहा चाचरा बहल-कुछ दिल से,.. 55. कविता अग्रवाल - मुस्कुराते रहो,..।

इसके साथ-साथ अन्तरा शब्दशक्ति से 3 विशेष सम्मान प्राप्त करने वालों में-

'अन्तरा शब्दशक्ति रत्न सम्मान' डॉ.भारती वर्मा बौड़ाई की की पुस्तकें 1.उपहार , 2. रंगो के साथ , 3. अंतर्मन की यात्राएँ, 4. आखर मीत।

'अन्तरा शब्दशक्ति रत्न सम्मान' नीरजा मेहता 'कमलिनी' की पुस्तकें 1. हाँ, मैं ऐसी ही हूँ 2. काश तुम समझ पाते 3. ओस सी ज़िन्दगी 4. एक टुकड़ा धूप। 'अन्तरा शब्दशक्ति गौरव सम्मान' मीनाक्षी सुकुमारन की पुस्तकें 1. खामोशियाँ 2. तड़प 3. खामोश एहसास,... भी शामिल हैं।

हस्ताक्षर बदलो अभियान

मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम द्वारा भारतभर में हस्ताक्षर बदलो अभियान चलाया जा रहा हैं, जिसमे जनमानस को हिन्दी में हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित कर शपथपत्र भरवाएँ जा रहे है। हस्ताक्षर व्यक्ति के जीवन की सबसे छोटी इकाई है, और यदि व्यक्ति हिन्दी में हस्ताक्षर करने की शपथ लेता है तो स्वाभाविक तौर पर धीरे-धीरे उसका हिन्दी से प्रेम होना भी स्वाभाविक है। इसी उद्देश्य को लक्ष्य रखकर वर्ष २०२० तक १ करोड़ भारतीयों को अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की प्रेरणा देते हुए शपथ दिलवाई जाएगी। वर्तमान में संस्थान द्वारा देश के ६ राज्यों में इस अभियान को प्रारंभ किया जा चुका है और लगभग ५०००० से ज्यादा लोगों ने शपथपत्र भरकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की शपथ ली हैं। हस्ताक्षर बदलो अभियान से जुड़ने के लिए देश के राजनैतिक, खेल, रंगकर्मी, चलचित्र अभिनेता-अभिनेत्रियाँ, पत्रकार आदि हस्तियों से भी निवेदन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में कई राज्यों में कार्य चल रहा है।

भाषा सारथी बनें

क्या आप 'भाषा सारथी' बनना चाहते हैं? क्योंकि,

- आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा।
- हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा।
- हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को रोजगार दिलवाने में मदद करनी होगी।
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाजार मूलक भाषा बनानी होगी।
- हिन्दी साहित्य को आमजन तक पहुँचाना होगा।
- हिन्दी के प्रचार हेतु प्रतियोगिताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होगा।
- हिन्दी भाषियों की मदद करना होगी।
- हिन्दी ग्राम सभा का आयोजन करना।
- हिन्दी रथ का अपने क्षेत्र में संयोजन करना।
- कार्ययोजना बनाकर लोगो को हिन्दी में हस्ताक्षर करने हेतु प्रेरित करना।

और भी बहुत सी गतिविधियाँ हैं, जो हिन्दी के लिए करनी होगी, यदि आप जुड़कर हिन्दी को आगे लाना चाहते है तो आज ही जुड़े।

सहयोगी इकाईयाँ

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhasha.org

मातृभाषा — www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति — www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश — www.sahityakarkosh.com

वादीज़ — www.wadieshindi.com

हस्ताक्षर बदलो अभियान

प्रतिज्ञा पत्र

मैं,.....प्रतिज्ञा लेता/लेती हूँ कि आज से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए, राष्ट्र की एकता और अखंडता के हित में स्वयं को समर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मान और सुरक्षा हेतु जीवनपर्यन्त तत्पर रहूंगा/रहूंगी। भारत माता और मातृभाषा हिन्दी के सम्मान को सर्वोपरि रखकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करूँगा/करुँगी।

मैं हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने हेतु आरम्भ किये गए महायज्ञ 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' में सतत सहभागी रहूंगा/रहूंगी।

भवदीय,
हस्ताक्षर : .....
नाम : .....
पिता का नाम :.....
पता:.....
.....
संपर्क:.....
अणुडाक (ईमेल):.....

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhasha.org

हिन्दी ग्राम
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

मातृभाषा.कॉम
www.matrubhashaa.com

कार्यालय -
एस-२०७, इंदौर प्रेस क्लब, म. गां. मार्ग, इंदौर
(मध्यप्रदेश) ४५२००१
संपर्क: (का.) ०७३१-४९७७४५५, (दू.) ७०६७४५५४५५
अणुडाक- hindigramweb@gmail.com
अंतरताना- www.matrubhasha.org

भाषा सारथी बनाने के लिए मिस काल करें व अपना परिचय व्हाट्सअप करें

९६६ ९८ ९६६९३
९६६ ९८ ९६६९३

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhasha.org

११००+
रचनाकार

५ लाख +
पाठक

१०० +
प्रकाशित पुस्तकें

१०००० +
साहित्यकार

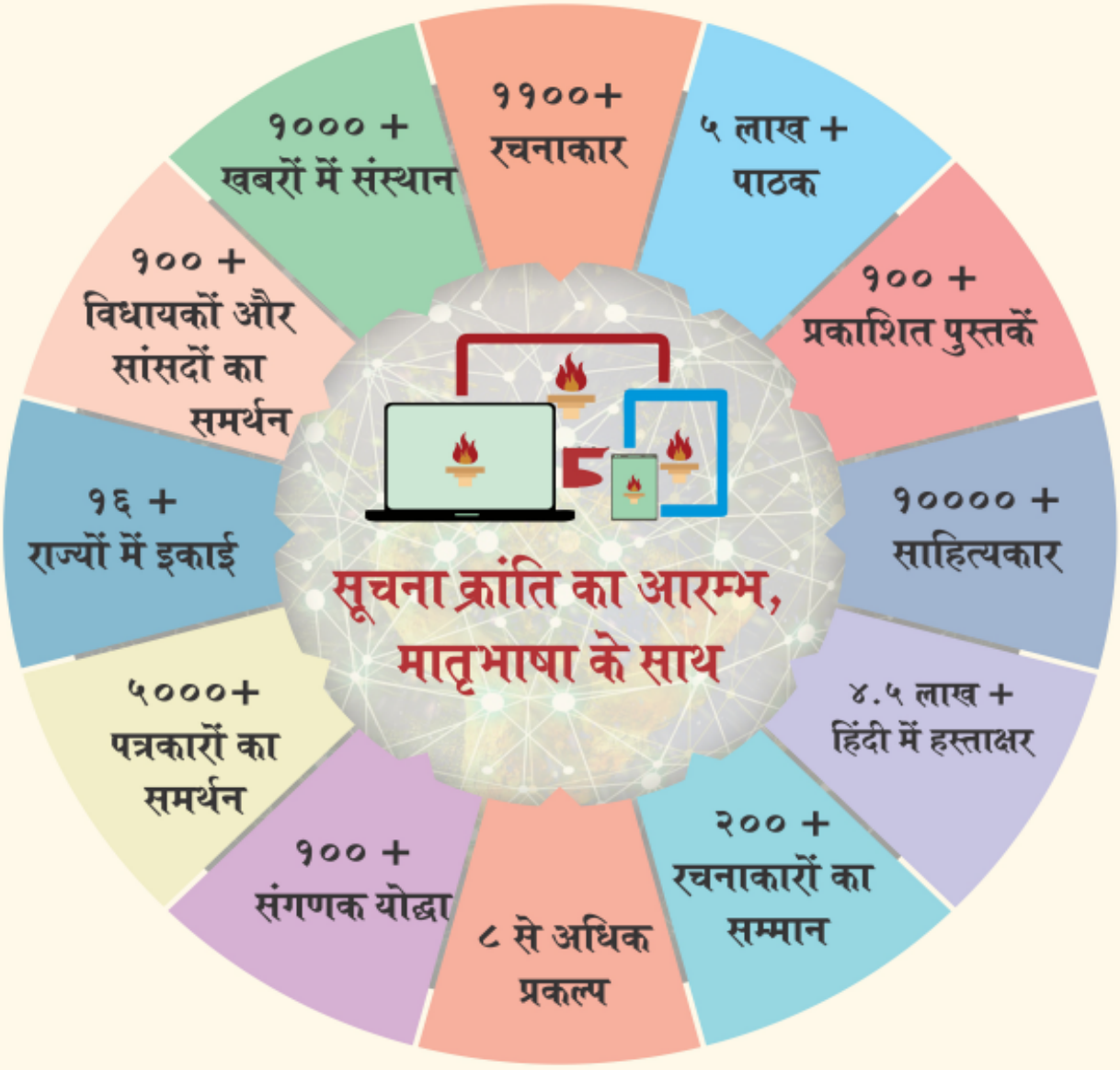

४.५ लाख +
हिंदी में हस्ताक्षर

२०० +
रचनाकारों का
सम्मान

८ से अधिक
प्रकल्प

१०० +
संगणक योद्धा

५०००+
पत्रकारों का
समर्थन

१६ +
राज्यों में इकाई

१०० +
विधायकों और
सांसदों का
समर्थन

१००० +
खबरों में संस्थान

सूचना क्रांति का आरम्भ,
मातृभाषा के साथ

हिन्दी में हस्ताक्षर करें, राजभाषा से राष्ट्रभाषा की ओर बढ़ें

मातृभाषा.कॉम
www.matrubhashaa.com

हिन्दीग्राम
भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश
कलमकार का परिचय
www.sahityakarkosh.com

खोजें अपने पाठक

१६ पृष्ठ या ३२ पृष्ठ की पुस्तिकाओं से

जी हाँ, वर्तमान दौर में हिंदी के रचनाकारों की समस्या होती है कि उनकी किताबें बिकती नहीं, प्रकाशक भी इसलिए नवांकुरों को प्रकाशित नहीं करते क्योंकि प्रकाशक को भी विक्रय न होने का भय रहता है। ऐसे स्थिति में नवांकुर कैसे खोजे अपने पाठक ?
अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन लाया है अद्भुत विकल्प-मात्र १६ या ३२ पृष्ठ में आपकी रचनाएँ आई एस बी एन (ISBN) क्रमांक के साथ ई-बुक बनवाये, कम प्रतियाँ प्रकाशित करवाएँ और अपने पाठक स्वयं खोजे। जो पाठक की जेब के लिए बोझिल नहीं होगी, और जब आपके पाठकों को आपका लेखन पसंद आएगा तो वे आपकी पुस्तकें भी खरीद कर पढ़ेंगे और इससे आय भी होगी।

- आई एस बी एन
- पाठशोधन
- आवरण अभिकल्प
- ई-बुक
- पुस्तक विमोचन
- प्रचार प्रसार

संपर्क करें
डॉ. प्रीति समकित सुराना
+91- 90094 65259 | +91- 94247 65259
antrashabdshakti@gmail.com
www.antrashabdshakti.com

सेन्स समूह का उपक्रम
अन्तरा शब्दशक्ति